प्रश्न
प्रति प्रश्न

—डॉ लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

प्रश्न प्रति प्रश्न

साहित्य/सस्कृति/समाज विषयक निबध, राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य   एक सर्वेक्षण सहित



दो शब्द

लेखक पाठक की आत्मीय रिश्तेदारी के लिए पुस्तक का सहज होना आवश्यक है पुस्तक के सहज होने से पाठक को पढ़ने और लेखक के केन्द्रीय विचार समझने में कठिनाई नहीं आती इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह होती है कि इस सहजता से पाठक–लेखक का अविच्छिन्न सम्बन्ध बनता है इसी तरह साहित्यिकों की बिरादरी बढ़ती है और सम्पन्न होती है आजकल इस बात की आवश्यकता है कि पाठकों की केवल संख्या ही न बढ़े बल्कि वह साहित्य के द्वारा स्वयं को समृद्ध और सम्पन्न अनुभव करें और उनके बीच का अटूट सम्बन्ध प्रगाढ़ हो।

सहज होने के सिलसिले में बहुत से प्रश्न और प्रतिप्रश्न हैं जिन्हें समझना जरूरी है भाषा, पाठकीय रुचि वैचारिक लगाव, लेखन की प्रासंगिकता हृदय की तरलता आदि अनेक मुद्दे हैं जिन पर गंभीरता से चिन्तन और लेखन अपेक्षित है

डा लक्ष्मीनारायण नन्दवाना द्वारा लिखित प्रश्न प्रति प्रश्न, के निबंधों में भी सूझ एवं सहजता दृष्टिगत होती है विभिन्न विषयों के इन निबंधों की भाषा कृत्रिम नहीं है और केन्द्रीय भाव कहीं भी अदृश्य नहीं होता है इसी पुस्तक में श्री नन्दवाना ने राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य एक सर्वेक्षण भी सीमित पृष्ठों में व्यापक जानकारी सहित प्रस्तुत किया है जो प्रशंसनीय है मुझे विश्वास है कि डा नन्दवाना द्वारा लिखित इस कृति 'प्रश्न प्रतिप्रश्न' का साहित्य जगत में सुधि पाठकों द्वारा हार्दिक स्वागत होगा

प्रकाश आतुर
अध्यक्ष
राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर

क्रम

प्रस्तुति

'हकला ने वाला की जबान से ही नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति की जबान से भी शब्द रुक रुक कर निकल सकते है जो अधिक उचित अधिक आवश्यक और बुद्धिमत्तापूर्ण शब्दों की खोज करता है अपनी बुद्धिमत्ता से आश्चयचकित करने की तो मैं आशा नही करता मगर हकला भी नही सकता हू मैं शब्द खोज रहा हू' (मेरा दागिस्तान – रसूल हमजातोव)

दरअसल शब्दों की खोज की बेचनी और प्रस्तुति एक विशिष्ट चेतना की प्रतीक है यह चेतना समाज सापेक्ष और जीवन की अनिवायता है मनुष्य समाज मे विकसित होता है और समाज से ही ज्ञान व चेतना ग्रहण करता है सहज वृत्ति, अनुभव तथा पर्यवेक्षण से यह चेतना प्रभावित होती है यह चेतना मानव अवलम्बित है

अत मानव के दुख सुख की अनुभूति एव अभिव्यक्ति ही एक श्रेष्ठ रचनाकम का आधार हो सकती है

'प्रश्न प्रति प्रश्न' विभिन्न प्रकार के आलेखो की सग्रहीत कृति है इन निबधो मे साहित्य समाज, सस्कृति विषयक कई प्रश्नो को प्रस्तुत किया गया है भौतिक सुख सुविधा सम्पन्न वज्ञानिक उपलब्धिया व कौशलयुक्त मनुष्य अपने अन्दर से रिक्त होता जा रहा है इस आन्तरिक रिक्तता की पूर्ति साहित्य ही कर सकता है मानव को प्रतिष्ठा मिले उसके दुख सुख मे हिस्सेदार हो, उस प्रगति की ओर ले जाय ऐसा साथक रचनाकम अपेक्षित है सस्कृति और समाज,

सम्बधा की प्रगाढता पाठक की रुचि, कविसम्मेलनो की प्रासगिकता म एस ही प्रश्न प्रति प्रश्न है, जिन्ह साए ह और उनके सदभ म विचार प्रस्तुतीकरण है

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान म भी हिन्दी साहित्य सृजन विभिन्न विधाओ म न्यूनाधिक हो रहा है सन् 35 40 वर्षो क साहित्य का सर्वेक्षण करन पर परिलक्षित होता है कि कतिपय विधाओ म सा उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की है जबकि कतिपय विधाए एसी हैं जिनम रचनाक्रम नाममात्र का भी नही है और यह चितनीय स्थिति ह कविता कहानी, उपन्यास आदि के क्षेत्र म प्रशसनीय साहित्य सृजन हमारे यहा उपलब्ध है राजस्थान क आधुनिक हिन्दी साहित्य का सक्षिप्त सर्वेक्षण भी इस कृति म उपलब्ध ह

भाषा म सहजता व सरलता ह तथा कृत्रिमता का सप्रयास दूर रखा गया है

अपनी बुद्धिमत्ता स आश्चर्यचकित करन की आशा मै भी नही करता लकिन जो की जा खोज की है उसकी सहज अभिव्यक्ति प्रश्न प्रति प्रश्न के द्वारा यहा प्रस्तुत है

होलिकोत्सव 1984

लक्ष्मीनारायण नन्दवाना

संस्कृति और समाज अन्तःसम्बन्ध

जीवन का चरम उद्देश्य विषाद या व्यथा नहीं है हां, रसानन्द की प्राप्ति जरूर माना गया है मनीषियों ने रस को ब्रह्म स्वीकारा है इसकी प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन साहित्य माना जा सकता है वस्तुतः साहित्य स्वयं ब्रह्म-स्वरूप आनन्द स्वरूप है यह साहित्य लौकिक तथा पारलौकिक दोनों ही प्रकार के आनन्द एवं मंगल का माध्यम है इसीलिए मानव आनन्द की खोज में सतत सम्बद्ध है मानव की इस यात्रा में साहित्य, धर्म तथा दर्शन उसके सहभागी हैं

सार्वजनीन सुस्थिर शब्द राशि का नाम साहित्य है[1] साहित्य का सर-लार्थ जो हितयुक्त हो, है साथ ही सहभाव, साथ होना, सम्मिलित हित व कामना सहित भी इसका अर्थ किया जा सकता है साहित्य मानव जीवन की सरस व्याख्या है वस्तुतः यह मानव मात्र की कलात्मक और आनन्दप्रद रुचि को टटोलता है और उसे परिष्कृत कर समाजोपयोगी बनाता है मानव के जीवन को सरस, सुखी और आनन्दित करने के लिए साहित्य एक महती भूमिका का निर्वाह करता है

साहित्य का मानव जीवन के साथ चिरन्तन सम्बन्ध है साहित्य का सृष्टा मानव है और मानव के लिए ही साहित्य की सृष्टि है साहित्य का उपादान और विषय वस्तु यही मानव जीवन है जो समाज सापेक्ष है साहित्य के मूल में रागात्मक और तन्मयता के जो भाव हैं उसका भी एकमात्र कारण यही है कि मनुष्य अपने जीवन में सम्पूर्णता को चाहता है मानव जीवन के विविध रूपों की अभिव्यक्ति साहित्य में होती है इसी के कारण समाज में आये बदलावों के फलस्वरूप साहित्य में भी परिवर्तन आता है युगीन परिवेश और परि-स्थितियों का परिवर्तन और वैषम्य साहित्य का आधार है इसलिए साहित्य

---

1 साहित्य की उपक्रमणिका प. किशोरीदास वाजपेयी, पृ. 1

म युग मानव का युग दुख, हर्ष विषाद, प्रेम आदि भजना है और वह भागी दारी करना है मानव जीवन से जुडा होना ही उसका वैशिष्ट्य है यह जीवन चेतन हीनता का पर्याय नहीं अपितु उसकी सार्थकता गत्यात्मकता और प्रवाह म है यही सक्रियता साहित्य और जीवन की चेतना की जरूरी शर्त है निराशा स श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण नही हो सकता है अत विकास की अनिवार्यता क साथ आस्था की अनिवार्यता भी है

अब हम चेतना की बात करेंगे चेतना जीवन की अनिवार्यता है यह चेतना की गहन स्थिति ही मानव का अन्य प्राणधारियो स अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती ह मनुष्य सहज वृत्ति सम्पन्न ह और वह समाज मे विकसित होता ह यदि उस समाज से पृथक कर दिया जाय तो वह असामाजिक, बबर व सभवत गूगा होगा लेकिन समाज म विकसित व्यक्ति समाज से ज्ञान व चेतना ग्रहण करता है प्रत्येक साहित्यकार की चेतना पयवेक्षण तथा स्मृतियो से विकसित तथा समृद्धिशील होती है प्रत्यक सामाजिक की चेतना म अन्तर होना स्वाभाविक है सहज वृत्ति, अनुभव तथा पयवक्षण से चेतना प्रभावित होगी और प्रत्येक व्यक्ति की चेतना म बुनियादी अन्तर पदा करेगी इस प्रकार व्यक्ति की चेतना मे उसका निजत्व भी सम्मिलित होगा समाज तथा बाह्य परिवेश क सघष का चेतना पर प्रभाव पडता ह यानी चेतना समाज सापेक्ष ही होगी दूसरी ओर जब कला चेतना की बात करत है तो पाते हैं कि कला चेतना के जितने गहन तल का छुयेगी वह उतनी ही श्रेष्ठ होगी इस गहन चेतना के द्वारा मानव अन्तजगत मे पहुच कर रस और आनन्द म लीन हो जाता है यही वह स्थिति है जिसमे वह रसानन्द का प्राप्त करता है धम, दर्शन या वाद के माध्यम स इन्हे अलग अलग रूपो म परिभाषित किया जा सकता है लेकिन यह मनन योग्य है कि इस बाह्य परिवश तथा आतरिक चेतना के अनुभव, मिलन और अभिव्यक्ति से एक भाव जगत का उदय तथा विकास होता ह इस बाह्य परिवेश का अन्तमन पर प्रभाव कस पडता है तथा उसका सस्कारी मन अभिव्यक्ति कस करता यह विचारणीय है

वस्तु और रूप मिलकर भावाश्रित रूप का सृजन होता है साहित्य मे वस्तु और रूप के घनिष्ठ सम्बधो को समझना वस्तुत एक साधना है रूप और सौन्दय की सृष्टि द्वारा ही उच्चकोटि के आनन्द का उद्रेक होता है यह भावाश्रित रूप ही साहित्य है इस भावाश्रित-रूप निर्माण मे मन व सस्कार सहयोगी ह सस्कार आत्मा का गुण है ये सस्कार अभिव्यक्ति के प्रकटीकरण मे

अपेक्षित सहयोग देते हैं इस आत्माभिव्यक्ति मे इस प्रकार सस्कारो का महत्व स्वीकारना होगा ये सस्कार सस्कृति की देन ह जो धीरे धीरे अन्तमन मे पठते हैं इस प्रकार सस्कृति की सबलता माननी ही पडेगी प्रत्येक सस्कृति अपनी अमिट निशानी छोडती ह यह निशानी विभिन्न कलाओ के माध्यम से प्रकट होती ह सभ्यता इस सस्कृति का ऊपरी रूप है सस्कृति के उन्नयन के साथ ललित कलाओ की भी श्रीवृद्धि होती है इस तरह सस्कृति और साहित्य के घनिष्ठतम सम्बध हैं यह साहित्य सास्कृतिक प्रकटीकरण ही ह

जब साहित्य के साथ सस्कृति की चचा की जाती हैं तो परिलक्षित होता ह कि साहित्य का आधार सस्कृति रही ह सस्कृति को लक्षणो स जाना जा सकता है किन्तु उसकी परिभाषा देना दुरुह हैं

यो मानवीय जीवन के दीघजीवी मूल तत्वो को सस्कृति समझा जा सकता है इसम ज्ञान, विश्वास, कलाए, नतिकता, रीतिरिवाज, नियम तथा वे सभी योग्यताए समाहित है जो एक व्यक्ति समाज का सदस्य होने के लिए ग्रहण करता ह अर्थात मनुष्यत्व के आधारभूत तत्वो की सस्कृति कहा जा सकता ह डा हिरेन्द्रनाथ दत्त के अनुसार जाति विशेष के आतरिक भावो की अभिव्यजना सस्कृति ह[1] दूसरे शब्दो म पशुत्व से मनुष्यत्व की यात्रा या मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओ का रूपान्तर ही सस्कृति ह सस्कृति के साथ साथ सभ्यता का भी विकास होना है कई बार इनका स्वरूप इतना मिलाजुला होता ह कि उन्ह अलग कर पाना आसान नही होता विद्वानो ने सभ्यता शब्द का सम्बन्ध सभा से बताया ह पाणिनि के अनुसार सभा मे साधु आचरण करने वाले को सभ्य कहा जाता है सभ्य से ही भाववाचक सभ्यता बनी सस्कृति का अथ सम्यक करने का भाव अथवा क्रीडा ह[2] सस्कृति का आतरिक पक्ष से तथा सभ्यता का सम्बन्ध बाह्य पक्ष से ह डा हरवशलाल शर्मा लिखत हैं साराश यह ह कि सस्कृति वह सूक्ष्म भावनात्मक तत्व ह जो हृदय की प्रेरणा से बाह्य आचारो म प्रस्फुटित होकर भी सूक्ष्मता के निकट ही अधिक रहता ह और सभ्यता वह तत्व ह जो हृदय की अपेक्षा बुद्धि से अधिक सम्बन्ध रखता हैं उसकी जडें सूक्ष्म की अपेक्षा स्थूल मे अधिक गहरी उतरी हुई होती हैं अर्थात् वह भौतिकता की ओर अधिक झुकी होती ह इसलिए

---

1 भारतीय सस्कृति, श्री हिरेन्द्रनाथ दत्त, पृ 4

2 सूर और उनका साहित्य, डा हरवशलाल शर्मा, परिशिष्ट 2

संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता अधिक परिवर्तनशील भी है[1] हमारे विचार में संस्कृति एक बहुत व्यापक और गतिमान सत्ता है जिसे किसी प्रकार की परिभाषा, सीमा अथवा बंधन में आबद्ध करना अनुचित है और स्थापित मान्यताओं के विपरीत है आदिकाल से मानव संस्कृति में विकसित होता आया है

किसी भी समाज के विकास की निर्देशिका संस्कृति है संस्कृति की सार्वजनीनता, उसकी ग्रहणात्मकता, उसका अन्तरंग प्रभाव विचारणीय है संस्कृति एक ऐसी भावात्मक सत्ता है जिसे खंडित नहीं किया जा सकता है यह तो मानव की जीवन शक्तियों तथा प्रगतिशील साधनाओं का घनीभूत स्वरूप है इसलिए किसी क्षेत्र या स्थान विशेष की संस्कृति को उस महान भू भाग की महान संस्कृति का अंग माना जाना चाहिए जब हम भारतीय संस्कृति की चिन्ता धारा का नाम लेते हैं तो भारत भूखंड में उत्पन्न तथा मानव के विकास क्रम में सक्रिय सहयोग देने वाले शाश्वत सिद्धान्तों और मूल्यों की ओर ध्यान चला जाता है जो इस चिंतन धारा के वट वृक्ष को सींचते रहे हैं इस प्रकार संस्कृति समाज की उपज है जिसमें मानव समाज के लौकिक, पारलौकिक, धार्मिक राजनीतिक, कला सम्बन्धी और सामाजिक अभ्युदय के अनुरूप मन बुद्धि अहंकार तथा संस्कार सम्मिलित हैं संस्कार इसका प्राणतत्व है और समाज का प्राणतत्व संस्कृति है साहित्य, कला, धर्म, दर्शन विज्ञान आदि तक संस्कृति की पहुंच है संस्कृति और सभ्यता का रूपक आत्मा और शरीर से दिया जा सकता है दोनों का प्रचलन और दोनों का प्रभाव अन्योन्याश्रित होता है संस्कृति मानव जीवन की उन्नति व सभ्यता का प्राण तत्व है सांस्कृतिक मूल्यों का अवमूल्यन होने पर राष्ट्रीय अस्मिता पर गहरा प्रभाव पड़ता है और कलाएं भी प्रभावित होती हैं सांस्कृतिक दृष्टि सम्पन्न राष्ट्र का साहित्य निसंदेह समृद्ध होगा सांस्कृतिक उन्नति के काल में साहित्य की श्रीवृद्धि भी होगी

संस्कृति के अपने मूल्य होते हैं और ये मूल्य शाश्वत होते हैं उदाहरण के लिए सत् चित् आनन्द को लें सत्य को एक स्थायी मूल्य के रूप में स्वीकारा गया है आज भी सत्य की महत्ता तो माननी पड़ेगी सत्य का रूप बदल सकता है युग के साथ यह कहा जा सकता है कि 'सत्य' यह है लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया में सत्य की महत्ता अस्वीकारी नहीं जा सकती है इसी प्रकार चित् या जीवन का अपना महत्व है आनन्द तो भारतीय संस्कृति का आधार है दया, करुणा, प्रेम, बंधुत्व की महत्ता भी संस्कृति व साहित्य में स्वीकारी गई है

1 सूर और उनका साहित्य

इसी तरह समता और स्वतत्रता भी मूल्य है इस समता और स्वतत्रता के मूल्य का रूप समयानुसार परिवर्तित होता रहा ह और इसने पर्याप्त विस्तार कर लिया है और राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक समता व स्वतत्रता के लिए मानव सतत प्रयत्नशील है दरअसल भारतीय सस्कृति सामासिक सस्कृति ह और भिन्न भिन्न जातियो की मानसिक एकता का प्रतिनिधित्व करती है यह भारतीय सस्कृति अपनी विशिष्टता, सावजनीनता, मानव मूल्यो और प्रतिमानो, प्राचीनता, समन्वयपरकता, गहनता और गभीरता मे विश्व की सवश्रेष्ठ सस्कृति रही ह मानव और मानववाद का अभ्युदय और विकास इसका उद्देश्य रहा ह

भारतीय सस्कृति म आत्मसात करने की शक्ति है परिणामत विभिन्न देशी विदेशी समाजा के रीतिरिवाज और परम्पराए इस सस्कृति म घुल गये हैं और विलग दृष्टिगत नही हात हैं प्राचीनकाल मे ही अनक जातिया भारत मे आई और इस सस्कृति म मिल गई इस लोकतान्त्रिक सस्कृति मे विभिन्न क्षेत्रो की सस्कृतिया भी हैं यह सस्कृति सहिष्णुता, स्वाधीन चिंतन, वैयक्तिक स्वतत्रता व जीवनादश की प्रबल समथक है भारत न विभिन्न विचारा मतो और धर्मों के मध्य पूरा समन्वय बिठा रखा ह यह समन्वित रूप ही हमारी सबसे बडी धरोहर है

धर्म को लें आज धम को सकीर्ण अर्थ मे देखा जा रहा है वस्तुत धम का शब्द-सकोच हुआ ह और धम की चर्चा करत ही हृदय, सकीर्ण मनोवृत्ति या सीमित सामथ्य का मनोभाव जाग्रत होता है लेकिन धर्म ससीम नही है धम को ऋषि कणाद ने इह लौकिक और पारलौकिक कल्याण की प्राप्ति के लिये बनाये गये नियम-समूह कहा है तो महर्षि व्यास ससार को धारण करने वाले नियम समूह कहते हैं डा राधाकृष्णन के विचार है कि अपने दनिक जीवन म और सामाजिक सम्बन्धा म जिन सिद्धान्ता की पालना करना पडे वे उस वस्तु द्वारा निर्धारित किए गए ह जिसे धर्म कहा गया है [1]

स्पष्ट है कि मानव समाज को सचालित करने वाली मान्यताओ या नियम समूह को धम कहा जा सकता है धर्म मानव कल्याण के लिए ह सभी धर्मों के मूल तत्वो व सिद्धान्तो का अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट लक्षित होता ह कि मानवीय मूल्यो की रक्षाथ तथा समाज की उचित व्यवस्थाथ कतिपय सिद्धान्त

---

1 धम और समाज डा राधाकृष्णन, पृ 120

निधारित होते हैं जिन्हे धम के नाम से अभिप्रेत किया जाता है धम मानव को श्रेयोमुखी होने के लिए प्रेरित करता है कठिनाई तब पैदा होती है जबकि धम के पवित्र ठेकेदार अपनी स्थिति का दुरुपयोग करते हुए धम के मूल तत्वों की भ्रामक व असत्य व्याख्या करते हुए व लाभ में निय त्रित करते हैं

धम के सत्ता प्रतिष्ठानों पर अहंकारी व धमन्ध पाखण्डियों का शासन जमने पर वे अपने लाभ हेतु धम का दुरुपयोग करने लग जाते हैं परिणामत धम के प्रतिमानों का अवमूल्यन हो जाता है और उन धर्म के मूल्य पालन योग्य नहीं रहते हैं अन्यथा धम का मानव जीवन में गहरा सम्बन्ध है नीति प्रक्रिया या मार्ग निर्देशन में नाराजगी नहीं है इसके अलावा प्रतिमानों में समयानुकूल परिवतन भी आवश्यक है अमनीषता न होने पर धम पर आघात होने लग जाते हैं

अब दशन के सम्बन्ध में विचार करें दशन का शब्दार्थ देखना तत्वावलोचन सत्य का ज्ञान है दशन मानव के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान को तत्पर रहता है साहित्य इन्हीं समाधान को सरस भाषा में अभिव्यक्त करता है श्री बलदेव उपाध्याय के शब्दों में दशन भारतीय मनीषियों के द्वारा अनुभूत सत्य का परिचय देने वाला साहित्य है दशन मुख्यत मानव जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए प्रयत्न करता है व माग निर्देशित करता है उच्च व आदश जीवन के लिए जो तथ्य अपेक्षित होते हैं व दशन उपलब्ध कराता है दशन ज्ञान प्राप्ति का माग है दशन किसी भी सस्कृति या राष्ट्र के अध्यात्म चिंतन को नापने का पैमाना है धम की व्याख्या दर्शन करता है भारतीय धर्म दर्शन के सुनिश्चित आध्यात्मिक तथ्यों के ऊपर ही प्रतिष्ठित है

धम का प्रासाद खड़ा करने के लिए दर्शन उसकी नींव रखता है कोई भी धम तत्व तब तक विद्वानों का प्रिय नहीं बन सकता जब तक वह दशन की नींव पर खड़ा नहीं होता है[1] दशन एक क्रम बद्ध विचारधारा है मानव चिंतनशील है और दिव्य से दिव्यतर बनना चाहता है और इस प्रयास में दर्शन उसकी निसदेह मदद करता है दशन जीवन की व्याख्या ही नहीं करता अपितु उसे एक दृष्टि सम्पन्न बनाता है सभी क्रान्तिकारी आन्दोलनों की पृष्ठभूमि में दर्शन (विचारधाराएं) काय करता है

---

1 भारतीय दशन सार, प बलदव उपाध्याय पृ 47

इस प्रकार समाज या व्यक्ति-समूहो को परिचालित करने का कार्य धर्म करता और उसकी व्याख्या व दृष्टि सम्पन्नता दशन या विचारधारा भी होती है आज हम किसी भी साहित्य को देखें तो वह एक दृष्टि सम्पन्न या विचारधारा प्रधान दृष्टिगत होता ह साहित्य के माध्यम म दर्शन की रूखी व्याख्या सरस ढग से प्रस्तुत की जा सकती ह और वह भी अधिक प्रभावात्मक ढग से साहित्य की पृष्ठभूमि म धम और दर्शन (वाद) रहता है मध्ययुगीन साहित्य के उत्प्रेरक तत्व धर्म और दशन रहे हैं और आज भी किसी न किसी रूप म हैं ही धर्म के तत्व बाघ को पाठक तक पहुचान और जन भावना का विषय बनाने का काय साहित्य करता हैं

इस प्रकार स्पष्ट लक्षित है कि साहित्य का समाज से अविच्छिन्न सम्बध ह धम और दर्शन की मान्यताए भी समाज से उत्पन्न हाती है और दूरगामी प्रभाव छोडती है मान्यताओ को प्रचारित करन तथा जन जन तक पहुचाने का सबल साधन साहित्य रहा हैं और आज भी हैं आज भी साहित्य को एक सशक्त हथियार के रूप म क्राति व आन्दोलनो के प्रणता व प्रचारक प्रयुक्त करत हैं वत्तमान युग मे ता इस जन हथियार का प्रयोग बहुत जोरशोर से हो रहा हैं आज समता व स्वतन्त्रता के लिए साहित्य धारदार हथियार के रूप म प्रयुक्त हो रहा है इससे साहित्य की प्रभावशीलता का विस्तार ही ज्ञात होता ह आज इस द्वद्वात्मक युग म जब विश्व सीमिट गया है और विज्ञान तथा बौद्धिकता का प्रखर प्रचार है, साहित्य का दायित्व भी बढ गया ह उसका क्षेत्र विस्तार हुआ ह तथा उस अनेक नये प्रश्नो दायित्वा का सामना करना पड रहा ह

सम्बन्धों की प्रगाढ़ता

पारिवारिक व वयक्तिक सम्बधो म बढ़ रह तनावो तथा मनुष्य और मनुष्य के बीच टूटत सम्बधो की चर्चा अप्रासगिक नही ह कई समाचार है प्रसहाय वृद्ध मातापिता का शिक्षित समझदार पुत्र अपनी पत्नी सहित उनस विलग हो जाता है और वह वृद्ध दम्पति मौत की प्रतीक्षा करती ह एक भाई पतृक सम्पत्ति के विवाद म अपने भाई की निमम हत्या कर लाश गगा म बहा देता ह सास बहू का वाक्युद्ध क्रमश बढता गया और उसकी परिणति मध्यस्थ व्यक्ति के हाट अटैक से होती ह

न्यायालय म साक्षी देन से रोकने क लिए एक ही गाव के 11 बालको की नृशस हत्या करदी जाती ह धर्मगुरु क निर्देश की पालना क प्रश्न पर पति पत्नी के सम्बध विच्छेद हो जात है या एक पुत्र अपने पिता की शव यात्रा म सम्मिलित होने की अपेक्षा हनीमून मनाने चला जाता है धम के नाम पर गाव के गाव जलादिए जाते है या बस से उतार कर यात्रियो को भून दिया जाता ह आखिर सम्बधो म शिथिलता ही नही यह टूटन क्यो पदा हो रही है ? यह प्रश्न बराबर कचोटता रहता ह

एक समय वह भी रहा है कि गांव म आया हुआ अतिथि किसी व्यक्ति विशेष का न होकर सम्पूर्ण गाव का अतिथि होता था व किशोरीलाल के जामाता उनके ही नहीं सम्पूर्ण गाव क जामाता होत थे भाई अपने भाई के लिए प्राण त्याग देता था घर, परिवार, समाज, गाव के वयक्तिक सम्बध प्रगाढ थे लेकिन यह प्रगाढता क्रमश समाप्त हो रही है सम्बधो की प्रगाढता म कमी व समाप्ति के अनेक कारण हो सकत है

परिवार की इकाई टूट रही है और उसक मूल्य परिवर्तित हो रहे हैं पहले गाव म एक ही परिवार म मुखिया के सभी पुत्र, पुत्रिया, पुत्रो की पत्नियां

भौर लडके लडकियां सम्मिलित रूप से रहते थे और परिवार के अनुशासन का पालन करते थे कृषि या व्यवसाय मे सभी भागीदारी करते और सम्मिलित रूप से जीविकोपाजन करते थे परिवार का मूल्य सबके लिए समान था मुखिया के निर्देश की सभी को अनुपालना करती थी वयक्तिक सम्बन्धो की प्रगाढता थी सभी साथ साथ भोजन करते उठते बैठते थे समान व्यवहार उनके मध्य था कभी यदि कोई बात भी हो गई तो मुखिया का निर्णय अंतिम होता और उसकी पालना की जाती परिवार के बाद शिक्षा के क्षेत्र मे गुरु शिष्य सम्बन्धो की घनिष्ठ स्थिति थी शिक्षक का पूर्ण सम्मान किया जाता था तो छात्र को स्नेह

मुझे स्मरण है कि मेरे विद्यालय म हिन्दी के अध्यापक प्रभाशकर जी थे जिनका अनुशासन व सम्मान ऐसा हतप्रभ कर देने वाला था कि विद्यालय म उनके प्रवेश के साथ ही सम्पूर्ण विद्यार्थी वग को उनके आने की सूचना मिल जाती थी फिर न कही हल्ला गुल्ला और न कहीं ठहाके यह थोपा हुआ या आतककारी अनुशासन नही था अपितु हृदय से स्वय का शासन था अब न तो प्रभाशकर जी जैसे लगनशील शिक्षक है और न शिक्षा प्रेमी विद्यार्थी प्रभाशकर जी का कौशल उनका अध्यापन तथा छात्रो के साथ वयक्तिक तादात्म्य था गाव की स्थिति यह थी कि व्यक्तियो के मध्य वग भेदहीन भावात्मक सम्बध थे एक की तकलीफ सम्पूर्ण गाव की तकलीफ थी

गाव मे किसी के घर किसी व्यक्ति को तकलीफ हुई तो यह सम्पूर्ण गाव की वदना होती एक परिवार म मृत्यु होने पर सम्पूर्ण ग्राम शोकाकुल होता और शादी होने पर हर्षित

आज परिस्थितियां परिवर्तित हो रही हैं परिवार की इकाई सीमित हो गई है परिवार छिन्न भिन्न हो रहे है व्यक्ति सुविधाजीवी होता जा रहा है उसका घेरा सीमित हो गया है भावना की जगह वह अधिक तार्किक हो गया है इस परिवतन म जीवन सघष तथा आर्थिक परिस्थितियां सर्वाधिक प्रभावित करती हैं सम्पूर्ण परिवार या कुटुम्ब का एक साथ कृषि या व्यवसाय करना या एक ही स्थान पर रहना सभव नही रहा है परिणामत हर व्यक्ति को अपने जीविकोपाजन के लिए प्रयत्न करना पड रहा है परिवार का सदस्य भिन भिन स्थानो पर पहुच कर व्यवसाय, कृषि या नौकरी करता है और फिर उसका क्षेत्र वह, उसकी पत्नी और उसके बालबच्चे हो जात है

ऐसी स्थिति मे वह अपने माता पिता या अन्य रक्त सम्बधियो की चिन्ता को कम करते हुए वह उन्हे भूला देता है फिर उसकी पीडा सिर्फ उस तक सीमित हो जाती है स्थिति यही नही है बल्कि वह इतना सकीए तथा स्वार्थी हो जाता है कि उसका क्षेत्र स्वय से प्रारभ होता है वह, उसके बाद उसकी पत्नी व फिर बच्चे न इससे आगे और न इससे पीछे उसका लकवा ग्रस्त भाई दूसरे शहर म बिना वेतन के अवकाश पर है और अपने ग्रह तथा नोकरी के लिए सघप कर रहा है तो उसे कोई चिन्ता या दर्द नही है उसे सम्बधो का एहसास तो है लेकिन वह उसके लिए चितित नही है वह अपन और अपन सीमित घेरे मे व्यस्त है परिवार म सर्वाधिक वस्तुस्थिति सास बहू के सम्बधो को लेकर उत्पन्न हो जाती है हर सास यह तो महसूस करती है कि वह भी कभी बहू रही है लेकिन अपनी बहू को दासी समझती है और सम्बधो म अन्तर्विरोध प्रारम्भ हो जाता है सास घर की प्रतिष्ठा, अनुशासन और मालिकाना हक के लिये सघप करती है तो दूसरी ओर बहू अपना वचस्व कायम करने, अपने ग्रह को सुरक्षित रखने व स्वय को मालकिन की स्थिति म आने के लिए सघप करती है बौद्धिकता उसकी मदद करती है

वस्तुत यह दो पीढियो का सघप होता है और यह शीतयुद्ध, वाक्युद्ध तथा कभी कभी प्रत्यक्ष युद्ध की स्थिति पदा हो जाती ह इसकी परिणति दुखद होती है इस सघप मे मध्यस्थ है सास का पुत्र व बहू का पति वह पीडादायक स्थिति मे रहता है तथा मानसिक तनाव झेलता है उसकी नियति ताना और उपालभ खाने और अपने को हेय समझने की होती है इस मानसिक तनाव का कई बार बुरा असर हो जाता है भावुक व्यक्ति ज्यादा तकलीफ पाता है यह स्थिति सबधो की प्रगाढता को कम करती है और रिक्तता पदा कर देती ह पैतृक विवादो से भी सबधो म कमी हो जाती ह

विषमताओ के फलस्वरूप जीवन सघप तीव्र हो रहा है और इस जीवन सघप मे एक लडका पढ लिखकर नोकरी करता है या व्यवसाय प्रारम्भ करता ह वह विवाह करते ही अपनी पत्नी को ले परिवार म विलग हो अपने सुख स्वप्नो मे खो जाता है अब उसके सुख दुख से पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी का सबध नही रहता ह दूसरी ओर असहाय पिता अपनी वृद्धा पत्नी को ले एक टूटे फूटे मकान मे बीते दिनो की बातो को स्मरण करता ह तथा अपने भाग्य को कोसता व ईश्वर को उपालभ देता है

मैंने देखा है एक पिता ने अपने पाच पुत्रो को जीवन सघप के लायक

किया, स्वय तकलीफें भोगी और किसी बेटे को कष्ट न होने दिया लेकिन पुत्र होशियार होने पर अलग होत गये तथा अंतिम दिन उस लकवाग्रस्त पिता न बडी करुणा व वेदना के साथ निकाले वह एडिया रगड रगड कर मरा तथा पाचो पुत्र उसके पास होते हुए भी उससे बहुत दूर रहे किसी ने उस वृद्ध असहाय की तकलीफ मे भागीदारी करन का प्रयास नही किया वतमात राज नीतिक व आर्थिक परिस्थिनियो मे उन पुत्रो के मानव मूल्यो का परिवर्तित रूप यही रहा होगा कि वे अपने व अपने बच्चा के हितो को दखें शहरी यान्त्रिक सस्कृति का पीडादायक रूप यह हो गया ह कि मनुष्य से उसकी सवेन्ना समाप्त हो गई है दया, करुणा, हष,विषाद वेदना सभी समाप्त हो गय है और उसका जीवन एक ढर्रे पर चलने लगा है आज पास पडोम के दुख दद से कोई रिश्ता ही नही रहा है सिफ पसा ही मूल्य रह गया है

एक समय था कि गाव म किसी की मृत्यु हो जाने पर सम्पूण गाव मे तब तक चूल्हा नही जलता था जब तक कि उस लाश का क्रियाकम न कर दिया जाता लेकिन आज स्थिनि यह है कि पडोम म मत्यु होने पर व्यक्ति तुरत खाना खाकर कार्यालय जाता है उपस्थिति पत्रक मे हस्ताक्षर कर वापस शवयात्रा म सम्मिलित हो लच टाइम मे सामूहिक नाश्ते पर पहुच जाता है उस व्यक्ति के लिए यह एक सहज काय व्यापार है आज हम समाचार पत्रो म सामूहिक हत्याओ व बच्चा की सामूहिक निर्मम मौतो के समाचार नाश्ता करते हुए पढ लेते हैं और हमारे लिए एक समाचार से अधिक उसकी कोई प्रतिक्रिया नही होती हृदय मे न तो टीस उठती है और न आखें भीगती है

राजनीति ने अथतत्र के समान ही सम्बन्धो की प्रगाढता पर प्रभावी असर डाला है राजनीतिक दलो के विवाद म कई परिवार छिन्न भिन्न हो गये हैं एक ही परिवार के व्यक्ति विभिन्न राजनीतिक दलो के कायकर्त्ता होते हैं धीरे धीरे घर बाहर अपनी विचारधारा का समर्थन किया जाता है और फिर वह परिवार बिखर जाता है बेटा मा के यहां छापे डलवाता है तथा भाई अपने भाई के यहां क्योकि राजनीति म घात प्रतिघात अनिवायता ह

धम के नाम पर भी सम्बन्धो म दूरी आ जाती है धम का प्रारम्भ कभी समाज के लिए कल्याणकारी रहा होगा और धम व राजनीति एक रहे होंगे लेकिन धम के नाम पर किया जान वाला पाखड और अत्याचार धम की मूल भावना पर ही कुठाराघात करते है परिवार का एक सदस्य अय धम के मानन

की कल्पना ही नही कर सकता है और करने पर उसे परिवार त्यागना पडता है धम आज वैयक्तिक सम्बन्धो पर किस प्रकार प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव डालता है इसका एक उदाहरण बोहरा सम्प्रदाय है बोहरा सम्प्रदाय की तीन चौथाई आबादी भारत मे है

गत् कुछ वर्षों से इस सम्प्रदाय मे सुधारवादी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसने मुख्य धमगुरु द्वारा किए जा रहे अत्याचारो तथा प्रतिगामी कार्यों का विरोध भी किया इस आन्दोलन के कार्यकर्ताओ ने सामाजिक व पारिवारिक कार्यों मे धम गुरुओ के हस्तक्षेप का जबरदस्त विरोध किया पदा होने से मरने तक धमगुरु की समूल्य स्वीकृति (टेक्स), कब्रिस्तान मे शव को दफनाने के लिए अनुमति, विद्यालयो म प्रवेश और अन्य विकासात्मक कार्यों, चुनावो म वोट आदि के लिए स्वीकृति जसे अनुचित हस्तक्षेप का सशक्त विरोध शुरु किया इसका परिणाम धमगुरु और उनके अनुयायियो द्वारा डराना, धमकाना, समाज स बहिष्कृत कराना आदि अनेक अनियमित काय किए गए साथ ही परिवार मे विघटन भी हुए सम्बन्धो म एक कटुता उत्पन्न हुई धम गुरु का अनुयायी बेटा अपने सुधारवादी पिता की मृत्यु पर शवयात्रा म न जाकर पत्नी को लेकर हनी मून मनाने चला जाता है घायल पुत्र को देखने की अपेक्षा ताश खेलता है सुधारवादी विचारधारा के पति से, पिता के बहकावे मे आकर पत्नी पथक हो जाती है बड मुल्ला की अनुमति न मिलने से विवाह नही होते है और फिर सामूहिक विवाह बोहरा यूथ को प्रारम्भ करने पडते हैं

श्री असगर अली इन्जिनियर, गुलाम हुसन, आबिद अदीब प्रभति सुधार वादी बोहरा ही बतायेंगे कि धर्म के नाम पर कितने पाखड हो सकत है और उससे कितनी पाडा व यातना भोगनी पडती है तथा सम्बन्धो म टूटन कसे पदा हो जाती है? मीनाक्षीपुरम मे हिन्दू से मुस्लिम बने व्यक्तियो के परिवारो की स्थिति कसी होती है, वे ही भुक्तभोगी बता सकत हैं लखनऊ मे शिया सुन्नी दगे कथोलिक और प्रोटेस्टेंट के मध्य दगे आदि मूल्यो की टूटन ही दर्शाते है आज पजाब मे धम के नाम पर बस से उतार कर विशेष धम के व्यक्तियो की नृशस हत्या गोलियो से भून कर की जा रही है और मानवमूल्यो व सम्बन्धो की चिंता किसे रही यह विचारणीय है

एक व्यक्ति अपनी प्रेमिका की विवाह पर असहमति की सुन हत्या कर देता है और उसकी मृत देह के साथ रमण करता है यह आधुनिक बोध

पागलपन है सम्बन्धों की टूटन यहां विचारणीय है दूसरी ओर गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' द्रष्टव्य है

आज स्थिति इतनी बदतर हो गई है कि महानगरों की बात छोड़िये सामान्य नगरों में भी व्यक्ति को यह पता नहीं है कि उसके पड़ोस में कौन रहता है ? उसे क्या सुख-दुख है ? कल उसके यहां डाक्टर आया था तो क्यों आया था अथवा वहां लगातार अन्दर क्या चल रहा है ? इन सबसे आज कोई मतलब नहीं रहा है सम्भवतः इसके सम्बन्ध में यह भी तर्क दिया जा सके कि पड़ोसी के घर में झांकने का स्वभाव अच्छा नहीं है या वैयक्तिक स्वतन्त्रता और समता की बात उठाई जा सकती है लेकिन इससे न तो वैयक्तिक स्वतन्त्रता समाप्त होती है और न समता के विरुद्ध ही यह है

वस्तुतः सत्य यह है कि मानव मूल्यों की चिन्ता कम होती जा रही है और सम्बन्धों की प्रगाढ़ता अब नहीं रही है अब मनुष्य न तो किसी के दुख सुख की चिन्ता करता है और न इसमें भागीदार बनना चाहता है ज्ञान विज्ञान का विस्तार, बौद्धिकता भौतिकता आदि के फलस्वरूप विश्व संकुचित हुआ है तो व्यक्ति भी संकुचित हो रहा है आज व्यक्ति की दुनियां बहुत छोटी हो रही है और उसके हर्ष विषाद सुख दुख अपनत्व का घेरा सिर्फ उसके पास तक सिमट कर आ गया है भावनाओं की अपेक्षा बौद्धिकता प्रभावी हो गई है यही स्थिति रही तो मनुष्य शीघ्र ही रोबोट(लौह यान्त्रिक पुरुष) बन जायेगा यह समय शीघ्र ही आ रहा है सम्बन्धों की प्रगाढ़ता में जो कमी आ रही है वह चिंतनीय है

कविसम्मेलनों की प्रासंगिकता

कविता मानवीय चेतना का प्रतिबिम्बन है चेतना का यह प्रतिबिम्बन रचना प्रक्रिया से होती हुई शब्द बद्ध होती है यों कहें कि कविता में वस्तु और रूप दोनों हैं बाह्य जगत का कवि की मानसिकता के साथ प्रकटीकरण कविता है समाज की चेतना का प्राकट्य कविता के माध्यम से होता है इस प्रकार कविता समाज सापेक्ष है समाज के इतिहास के साथ ही कविता का इतिहास है यह चेतना कवियों के निर्माण तथा विकास के साथ साथ दृष्टिगत होती है मनुष्य सीढी दर सीढी सुसंस्कृत होता है और इसमें काव्य अपनी महती भूमिका का निर्वाह करता है

कविता (काव्य) ने अपनी ऊर्जा लोक जनजीवन से ग्रहण की है प्रारंभिक काल में जब मनुष्य श्रम से क्लान्त हो एक स्थान पर समूहबद्ध होता था और उसमें से किसी के अन्तःमन से जो बोल निर्झरित होते थे व समूह को प्रवाहित करते थे कभी कभी ऐसा भी होता होगा कि उस व्यक्ति के साथ एकत्रित व्यक्ति भाव जगत की यात्रा साथ साथ करते होंगे और यह समूहगीत प्रारंभ हो जाता था एकत्रित समूह में एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा काव्य पाठ एक ही स्थान पर करना ही कवि सम्मेलनों की भूमिका हो सकती है लोक जनजीवन में ऐसे कई अवसर आते थे जब रसिक व्यक्ति अपने अन्तः चेतना का प्रकटीकरण उपस्थित श्रोताओं के समक्ष करते थे त्योहार पर्वों पर शादी ब्याह के अवसर पर या विजयोत्सव पर यह काव्य पाठ होता था ये लोकगीत या लोक काव्य लोक संस्कृति का आधार थे उस युग की चेतना का प्राकट्य इन गीतों में मिलता है

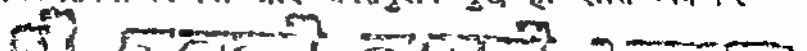
इस प्रकार कवि गीतकार अपने युग को प्रभावित करता रहा है लोक संस्कृति से यह परम्परा नगरीय संस्कृति में प्रवेश करती है चूंकि उस समय में काव्य में गेयता का विशेष महत्व था और स्वर की मधुरता भी इसमें अनि-

चार्य तत्व था अत कवि गायक राजाओं के यहा विशेष महत्व पाते थे राजदरबारा म काव्य गोष्ठिया होती थी इन गोष्ठियो का महत्व राजाओ या शासकों के लिए उनके मनोरजन के लिए विशेष था उनके इ गित करने पर यह प्रारभ तथा समाप्त हो जाती थी विद्वानो की सगोष्ठियो या सम्मेलनो म काव्यमय शास्त्रार्थ होता था यह काव्य गोष्ठिया राजदरबारो से हटकर देवालयो मे भी पहुची देव मदिरो या विशेष स्थान पर काव्य पाठ होता था कृष्णलीलाओ या राम की वदना का गायन अनेक भक्त कवि करते थे और उपस्थित समुदाय आनन्द विभोर हो उसे सुनता और आनन्दित होकर एक विशिष्ट भाव लोक म विचरण करता था इस काव्य पाठ म एक विशिष्ट छाप होती थी लेकिन मानवीय काव्य भी मिलता था और जनजीवन म इसका विशेष प्रभाव भी दृष्टिगत होता था समुदाय म होने वाले इस भजन पाठ को कवि सम्मेलनो की पीठिका कहा जा सकता है

यह काव्य पाठ की परम्परा कस्बो व नगरो म बढने लगी साहित्यानुरागी कुछ व्यक्ति एकत्रित होकर कस्बो या नगरो म काव्य पाठ का आयोजन करने लगे विशेष उत्सवो, पर्वों या त्योहारो के अवसर एकाधिक कवियो या गायको को आमन्त्रित कर उनके गीतो या कविताओ को सुनना एक फैशन हो गया था स्वतन्त्रता सग्राम म भी कवियो ने स्वातन्त्र्य चेतना को प्रसारित करने म अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है और जनसमुदाय म किसी विशेष अवसर पर एकत्रित होकर, कविता पाठ किया जाता था जिसमे अंग्रेजो व शासको के जुल्मो का वर्णन तथा आजादी की तड़पन होती थी इस तरह कवि सम्मेलनो की परम्परा हमारे यहा बहुत पहले से चली आ रही है

कविसम्मेलन म उपस्थित जन समुदाय की अपनी महती भूमिका है श्रोता की पसन्द पर ही कवि सम्मेलन चलता है अत कवियो को भी जन समुदाय की रुचि का पूरा ध्यान रखना पड़ता रहा है कविसम्मेलन के प्रचार के पीछे जनसमुदाय या समूह का आनन्दित होना भी है कवि की मानसिकता के साथ सभी श्रोताओ की मानसिकता स्वत जुड जाती थी वे ऐसे गीत, कविता पसन्द करते थे जो कर्णप्रिय सुमधुर हो गय हो और उनके मन को आनन्दित करें उनके दुखदर्द का भागीदार बन परिणामत कविसम्मेलनो मे कवियो की विशिष्ट पहचान बनती गई

सिनेमा के प्रचार से कविसम्मेलनो म भी बदलाव आया सस्ते मनोरजन का साधन सिनेमा बन गया और जनसमुदाय कुछ ही राशि व्यय कर



कहानी, ऐक्शन तथा गीत का आनन्द उठा सकता था सिनेमा की व्यापकता का प्रभाव कवियों के मानस पर भी पड़ा और ऐसे गीतो या कविताओ को कवि-सम्मेलनो के मचो से गाये जाने लगा जिनकी लय सिनेमा के गानो पर आधारित हो या उनसे मिलती जुलती हो इसके साथ ही श्रोमन व्यक्ति को सहज बनाने के लिए हास्य के चुटकुले पसन्द किये जाने लगे अब कविसम्मेलनो का मच दो प्रकार के कवियो के हाथो मे आ गया एक वे जो गीतो या कविताओ को समधुर ढग से फिल्मी गीतो के समान गा गा कर या चटखारे लेकर सुना सकते है, दूसरे वे जो हमोड कविताए, चुटकुले, पराडिया सुना सकते हैं

इसका परिणाम यह हुआ कि गभीर युग बोध की कविता न तो मच से सुनाने का कवि साहस करता और न श्रोता उसे पसन्द करता कविसम्मेलनो के मच का माइक गलेबाज व लटके झटके के कवियो ने पकड लिया नीरज, बालकवि बरागी, साम ठाकुर, विश्वेश्वर शर्मा काका हाथरसी, विश्वनाथ विमलेश, प्रभा ठाकुर आदि का मच पकडने का आधार यही है दूसरी ओर गभीर कविता या नई कविता का मच से पढ़ना दुष्कर होने लगा ऐसी कविताए यो तो सराही जाते लगी और युग चेतना तथा मानव मूल्यो के रूप म चर्चित हुई लकिन कविसम्मेलनो के मच पर उन्हे हूटिग मिलती इस प्रकार की अतुकात कविताए कविसम्मेलनो से बहिष्कृत हो गई आश्चर्य यह है कि इस स्थिति को स्वीकार कर लिया गया लेकिन इस पर गभीरता से विचार किया गया हो, यह दृष्टिगत नही होता हा, एक निबल स्वर राव जरूर प्रारम्भ हो गया गोष्ठियो म कभी कभी इस प्रसग पर चर्चा होती लेकिन उनकी सार्थकता समझ मे नही आई

यहा एक प्रश्न कविसम्मेलन की प्रासगिकता और कविता को लेकर है क्या गभीर युग की परिवेश की कविता की अपेक्षा सामान्य अगभीर चुटकला को आम आदमी पसन्द करता है ? क्या जनता की रुचि का अवमूल्यन हुआ है या कविता ही अपने मार्ग से भटक गई है ? और नीरस व काव्यगुणविहीन हो गई है ?

हम यह मानते हैं कि साहित्य समाज सापेक्ष है और वह जनता के दुख-सुख से जुड़ा होना है दूसरे शब्दो म कवि यदि जनजीवन, युग परिवेश से सम्बद्ध नही होगा तो उसकी कविता जीवन्त नही हो सकेगी यह जुड़ने का कार्य कहने की अपेक्षा गभीर और जटिल है जिसका जानना, समझना और अनुपालन

करना कठिन है ऐसी स्थिति मे कवि का दायित्व क्या है ? क्या वह कवि सम्मेलनो के श्रोताओ के लिए कविता लिखे अथवा युग बोध तथा अपने आस पास के मानव के दुख दद की काव्य गुणा युक्त रचना का सजन करे कवि सम्मेलनो म जनता की मानसिकता चुटकले या सामान्य रचना सुनने की क्यो है? यहा रुचि का सवाल पुन सामने है मेरे विचार से जन रुचि का समझना कठिन जरूर ह लेकिन असभव नही है

सामान्यतया यह माना जा सकता है कि इस मानसिकता या रुचि के पीछे श्रोता की एक सहज होने का भाव हो सकता है वह पहले ही चिन्तायुक्त है और एक बोझिल जिन्दगी जी रहा है ऐसी स्थिति म वह सहज होना चाहता ह मन मस्तिष्क पर स दबाव हटा कर वह थोडा आनन्दित हो लेना चाहता है और उसे सहजता या सामान्यीकरण अपने परिवेश को पहचान कर या युग के दुख दद म साझीदार बन कर भी हो सकते हैं कविता जीवन का अग है रचनाकार अपनी मन स्थिति की कविता की रचना ही करेगा

यदि वह ऐसा नही करता है तो अपने दायित्व से भटक जाता है अपने सृजनकम स चूक जाता है उसे युगीन परिवेश की रचना करते रहना चाहिये और जनता के एक बडे अग को भागीदार बनाने के लिए प्रयत्नरत रहना चाहिए उसकी कविता का दत्तचित होकर नही सुना जाने पर हताश होने की आवश्यकता नही है वस्तुत ऐसी गभीर और छदयुक्त कविताओ के रचनाकार को कविसम्मेलनो का मोह भी त्यागना चाहिए उसे ऐसी कविताए सगोष्ठिया म सुनाते रहना चाहिए और धीरे-धीरे क्षेत्र विस्तार करने की आवश्यकता है उन्ह कविसम्मेलनो की दुर्गति के लिए जिम्मेदार हास्य व चुटकुलेबाज कवियो को आमन्त्रित नही करना चाहिये यह द्वन्द्व तो होगा ही और सघष स हताश होने या हवा मे मुक्का मारने की आवश्यकता नही ह

नौटकी का जमाना जा रहा ह रेडियो और टी वी ने इस युग म मानव की सवेदनाओ को सुरक्षित रखना है अत नये माग तलाशना आवश्यक है गभीर बौद्धिक व अतुकान्त कविताओ को सुनना व सुनाना साहस का कार्य है मुझे स्मरण है कि भरतपुर मे सूरोत्सव के अवसर पर राजस्थान साहित्य अकादमी ने हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के सहयोग से कविसम्मेलन आयोजित किया गया था और गम्भीर अतुकान्त कविताओ को सुनाने पर जब हल्ला हुआ तो तत्काल कविसम्मेलन समाप्त कर दिया गया और कुछ समय बाद पुन लघु कविसम्मेलन हुआ जिसमे श्रोताओ ने गम्भीर कविताए बडे ध्यान स सुनी

इसी प्रकार 27 नव 83 को भीलवाडा में आयोजित कविसम्मेलन म उपस्थित सीमित श्रोताओ ने नीरज के साथ-साथ भवानीप्रसाद मिश्र की गम्भीर कविताए अधिक तन्मयता के साथ सुनी न कोई हल्ला न कोई आवाज कहने का तात्पर्य यह है कि रुचि को परिष्कृत करने व जन मानस बनाने की सर्वाधिक आवश्यकता है रचनाकार को सतही कविता के लिए गम्भीर कविता को त्यागना नही चाहिए दरअसल सबसे बडी कठिनाई सुविधाजीवी हो जाने की है रचनाकार अपने को सुविधाजीवी व विशिष्ठ बना लेता है और समाज स कट जाता है तो वह अपने दायित्व और सामर्थ्य से भी चूक जाता है विशिष्ट बनने पर उसे खतरा जनता म नही, अपने साथी कवियो से ही होगा

आज कवि और जनता एक दूसरे की रुचि को जाने और कवि अपने कम को गम्भीरता से ले परिष्कृत रुचि होने पर उसकी कविता का महत्व बना रहेगा उसकी कविता अर्थवत्ता नही खायगी हा, बीच का माग तलाशना अधिक खतरनाक है कविसम्मेलन म सतही कविता रहे यह सम्भव नही है कवि सम्मेलन की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठ सकते हैं लेकिन कविता पर नही कविता की महत्ता को कम नही किया जाना चाहिए

/

पाठक की रुचि

आज फिर मैंने सजय के हाथो मे कर्नल रजीत का सद्य प्रकाशित जासूसी उपन्यास देखा दरअसल पाकेट बुक के जासूसी व यौन उपन्यासो को लेकर सजय और मेरे मध्य अनेक बार विस्तार से चर्चा हो चुकी है सजय बी ए प्रथम वर्ष का छात्र है तथा मेरी बहिन का पुत्र है मैं उसे निरतर श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो के अध्ययन के लिए प्रेरित करता रहा हू लेकिन वह बार बार जासूसी उपन्यास, सत्य कथाए, रहस्य रोमाच व यौन विषयक कहानियो की पुस्तकें ले आता है और चटखारे लेकर पढता है किराये से पुस्तकें लाकर पठन का शौक उसे है मैं उसकी रुचि को देखता हू और मुझे अनेक प्रश्नो का सामना करना पडता है दरअसल पाठक की रुचि का एक व्यापक प्रश्न सामने है पाठक की रुचि क्या है और आज पाठक क्या पढना पसद करता है ? यह विचारणीय है

पाठक का सामान्य अर्थ पढनेवाला है लेकिन यह पठन तो बहुआयामी है 'सत्यनारायण की कथा' पढने वाला पडित, विद्यालय-महाविद्यालय का छात्र व अध्यापक समाचार पत्रो को पढने वाला मिल मजदूर, बेताल कथा पढने वाला किशोर, सत्य कथाए, जासूसी और तिलस्मी उपन्यास तथा समीर रानू के सस्ते रोमाटिक उपन्यास पढने वाला युवक और हरीश भादानी की लम्बी गभीर कविता नष्टो मोह, डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का 'जाग मछदर गोरख आया' या पानू खोलिया का उपन्यास 'सतर पार के शिखर' को पढने वाला भी पाठक ही है फिर हमें कौन से पाठक की सर्वाधिक चिन्ता है और क्यो है ?

आज मनोहर कहानियां, सत्य कथाए व सस्ते रोमाटिक जासूसी उपन्यासो की चिन्ता सर्वाधिक की जा रही है दूसरी ओर ये अधिकाधिक सख्या मे बाजार मे आ रहे है, क्रय किये जा रहे हैं और पढे जा रहे हैं आश्चर्यजनक



तथ्य तो यह है कि साहित्यिक गोष्ठियों में अथवा कुलीनों के सामने इन रोमांटिक जासूसी व सत्य कथाओं पर तीव्र प्रहारकर्ता छद्म रूप से इन्हें पढ़ते हैं या यात्रा में ऐसे ही ग्रंथ बुक स्टाल पर क्रय करते हैं और पार्क जाने पर कहते हैं समय व्यतीत करने के लिए यह पत्रिका सत्य कथा ठीक है आखिर यह दोहरा मानदण्ड क्या है ?

इन पुस्तकों या पत्रिकाओं पर विकारों को भड़काने या अश्लीलता को प्रचारित करने का आक्षेप लगाया जा सकता है तो साहित्यिक दुनिया में भी मनो विकारों को भड़काने वाले या यथार्थ के नाम पर नग्न अश्लील चित्रण की व्यापकता मिल सकती है आज की अनेक कहानियों में ऐसे विकृत चित्रण मिलेंगे जो घर में पुत्र पुत्रियों के सामने पढ़ने योग्य नहीं हैं आंचलिक साहित्य के नाम पर मनमाना चित्रण कर उसे पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करना और रुचि की बात करना कहाँ तक ठीक है ?

रुचि अनेक प्रकार से प्रभावित होती है सबसे पहले रुचि पर स्वभाव का प्रभाव पड़ता है मनोवृत्तियाँ या संस्कार यहाँ कारण है मनुष्य सुखाभिलाषी है और उसे सुखप्रद लगे वह पसन्द करता है सुख व आनन्द की प्राप्ति का प्रयास उसका सहज स्वभाव है वह इस प्रकार के काम करता है या पसन्द करता है जिसमें सुख व आनन्द हो वह इसी आनन्द के वशीभूत ही ये दुनिया पढ़ता है इस पठन में वह सहजवृत्ति का अनुकरण करता है यह अनुकरण शिक्षा संसर्ग और परिस्थितियों से प्रभावित होता है

किशोर वय में हिंसा और सेक्स प्रधान कहानियाँ पढ़ने का मुख्य कारण ही यह सहज वृत्ति ही है वह परिस्थितियों को देखता है अपने आसपास हो रहे परिवर्तनों को पहचानने का प्रयास करता है और अपनी मूल इच्छाशक्ति 'काम' से प्रभावित होता है व उसे यौन सम्बन्धी व पाशविकता प्रधान कथाएं पसन्द आती हैं धीरे धीरे उसकी रुचि इस ओर अग्रसर हो जाती है वह युवक अपने में इस मनोवृत्ति से एक सहज आनन्द प्राप्त करता है इस प्रकार वह अपने मन पसन्द इस साहित्य को अधिकाधिक पढ़ता है यदि उस किशोर के अभिभावक इसका प्रतिरोध करते हैं, उसे इस प्रकार के उपन्यास कथाएं पढ़ने के लिए नकारते हैं तो वह चुपचाप रात्रि को अथवा अध्ययन की पुस्तकों के मध्य रखकर इन्हें पढ़ता है वह चालाकी सीखता है तथा दृढ़ संकल्पित हो यौन परक या हिंसापरक पुस्तकें अधिक पढ़ता है अभिजात वर्ग के अभिभावक जो

स्वय इस प्रकार के कामुक या जासूसी उपन्यास या कथाए पढते हैं उनके यहा युवको को इन्हे पढने से रोका नही जा सकता है उनको तो सम्कार ऐसे 'सत् साहित्य' के लिए उत्प्रेरित ही करते है

यहाँ एक प्रति प्रश्न यह भी हो सकता है कि पुस्तकें पढने की आवश्यकता ही क्या है ? क्यों वह प्रश्न व्यवसायेतर पुस्तकें पढता है इसका सामान्य सा उत्तर यह है कि पुस्तकें ज्ञान पिपासा की शांति के लिए, मनोरजन के निमित्त तथा अकेलेपन के अवसाद की मुक्ति मे सहयोगी हैं पुस्तकें मित्रवत हैं जो पाठक को मनोरजन देती हैं तथा अकेलेपन के बोध से मुक्ति दिलाती हैं आज का व्यक्ति मशीनीकरण के आर्थिक सत्रास के वर्तमान समय मे बेहद व्यस्त है उसकी जिन्दगी भाग दौड मे व्यतीत हो रही है यत्रो के पुर्जे के समान उसकी उपयोगिता रह गई है वह इस मशीनी युग मे अपने को भी इस्पात का समझता है

ऐसी परिस्थितियो मे समय मिलते ही उसका मन सहज होने तथा मनोरजन के लिए प्रेरित करता है और आमोदप्रमोद के लिए वह मार्ग तलाशता है समय कम है लेकिन वह उसका उपयोग करना चाहता है चन्द्रकांता सतति या भूतनाथ जैसे अनेक खडो के चक्कर दर चक्कर के उपन्यासो को पढने के लिए उसको फुरसत नही है और फुरसत मिलने पर चयन के लिए न तो सामग्री है और न समय ऐसी स्थिति मे पाठक आमोदप्रमोद के लिए जो भी सुलभ हो उसे स्वीकार कर लेता है वह चलचित्र (सिनेमा) या टेलीविजन इसी आनन्द से प्रेरित होकर देखता है साहित्य की पुस्तकें उससे दूर हो जाती है यात्रा मे भी समय व्यतीत करने के लिए वह हल्की फुल्की पत्रिकाए या पुस्तकें बुक स्टाल से क्रय कर पढता है और गतव्य पर पहुच कर उसे भूल जाता है

ऐसी स्थिति मे विशुद्ध साहित्य की पुस्तको के पाठक वर्ग का प्रश्न उत्पन्न होता है- जब आज आम आदमी मे शिक्षित वर्ग का प्रतिशत बहुत ही कम है और उसमे भी साहित्य के पाठक का प्रतिशत तो अत्यल्प है ऐसे पाठक की रुचि का सवाल भी सामने है एक प्रति प्रश्न यह भी कि साहित्य का पाठक क्या विशिष्ट है ? यहा इसका उत्तर हां मे ही होगा साहित्यिक पाठको का एक विशिष्ट वर्ग है और उसकी रुचि अपने सीमित क्षेत्र से प्रभावित होती है सामान्य पाठक किसी पत्रिका को क्रय करता है, किराय से लाता है अथवा

निशुल्क देखता है तो सब प्रथम वह आवरण चित्रो को देखेगा तत्पश्चात् चुटकले, हास्य व्यग्य की रचनाए, सास्कृतिक लेख, कौतुहल या रोचकतापूर्ण विषयो पर जाएगा तत्पश्चात् अपनी रुचि का विषय क्रीडा, विज्ञान, गृहविज्ञान, सिनमा आदि पर विचार करेगा और अत म गभीर साहित्यिक लेखो को छोड ही देगा

इस सामान्य पाठक की रुचि को देखत हुए आज की व्यावसायिक पत्रिकाए और पत्र इस प्रकार की विविध सामग्री का प्रकाशन करते हैं जो बाल, युवक, वृद्ध, स्त्री पुरुष आदि सभी के अनुकूल हो ये पत्र पत्रिकाए अपनी प्रसार सख्या ग्राहकत्व के आधार पर बढाती हैं और उन्ह अपन सामान्य ग्राहक पाठक की रुचि का पूरा स्मरण रहता है यहा ध्यातव्य है कि पाठक की रुचि की चिन्ता नही उसका स्मरण रहता ह अचार चटनी मुरब्बे से लेकर भविष्य फल का विवरण या फिल्म तारिकाओ क किस्से इन्ही कारणो से ऐसी पत्र पत्रिकाओ म प्राप्त होत है धर्मयुग साप्ताहिक हिन्दुस्तान नवनीत, गृहशोभा, मनोरमा आदि पत्र पत्रिकाए इनके दृष्टान्त हैं साहित्यिक पत्रिकाओ की अकाल मृत्यु का कारण भी ऐसी ही रुचि बनती है वित्तीय सकट तथा पाठक ग्राहक की कमी से अनेक साहित्यिक पत्रिकाए क्षणजीवी हुई और जो गिनी चुनी प्रकाशित हो रही है वे भी अतिम सास ले रही है

सीमित सख्या के साहित्य के पाठको की रुचि के सम्बन्ध म विचार करें विशुद्ध साहित्य मे रुचि रखने वाला पाठक निसदेह सवप्रथम अपनी विधा की कृतिया या रचनाए पसन्द करेगा नयी कविता का पाठक है तो वह अपनी पसन्द की कृतिया ढूढ लेगा कहानिया को पसन्द करन वाला श्रेष्ठ कहानी सकलना की तलाश करेगा नाटक म रुचि रखने वाला पाठक नाटको को पढने के लिए बचन रहेगा लोकसाहित्य का पाठक ऐसी रचनाओ को ढूढ निकालेगा लेकिन इस प्रकार के पाठको की सख्या नगण्य है

एसे पाठको की रुचि के बल पर पुस्तको की बिक्री या पत्रिकाओ का नियमित प्रकाशन सदिग्ध है राजस्थान की साहित्यिक पत्रिकाओ पर विचार करें तो नियमित पत्रिकाए कितनी हैं ? मधुमती के समक्ष वित्तीय सकट का प्रश्न नही है लेकिन आज इस पत्रिका के सम्पादक (जो अकादमी अध्यक्ष भी है) डा प्रकाश आतुर के निरतर श्रम करने पर भी मधुमती की ग्राहक सख्या 1500 तक ही पहुच पायी है साहित्य के पाठको म भी साहित्य के वास्तविक

पाठकों की संख्या तो बहुत कम है किसी भी पत्रिका की समस्त रचनाएं पढने वाले गम्भीर व धीर पाठक शायद ही हो क्योंकि अधिकतर लेखक अपनी रचनाओं में ही अधिक रुचि रखते हैं

यह दुर्भाग्य की बात है कि आज हिन्दी में अधिकांश लेखक अपनी रचनाओं को तो बार बार पढते हैं तथा य अपेक्षा करते हैं कि उसकी रचना अधिकाधिक पढे लेकिन वे अन्य लेखकों की रचनाएं न तो पढते हैं और न उनकी चर्चा करते हैं ये पत्रिकाओं के नि शुल्क प्राप्ति की अपेक्षा तो करते हैं लेकिन क्रय कर पढने में उनकी बिलकुल रुचि नही होती है हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं की सीमित संख्या अथवा अकाल मृत्यु की के पीछे इसके साहित्यिक पाठक ग्राहकों की सीमित संख्या अथवा संकीर्ण दृष्टिकोण ही है यही स्थिति पुस्तकों की है निशुल्क भेंट स्वरूप पुस्तकें प्राप्त करने की आशा तो की जाती है लेकिन पुस्तकों का क्रय करना पसन्द नही करता है

ऐसी स्थिति मे साहित्यिक पुस्तकों की खरीद राजकीय संस्थाओं या पुस्तकालयों में ही होती है पाठ्यक्रम म आने पर खरीद की सभावनाएं बढ जाती हैं और इस कारण पाठ्यक्रम समितियां या खरीद सम्बन्धी सदस्यों की महत्ता बढ जाती है और घेराबन्दी प्रारम्भ हो जाती है यहा भी साहित्यिक पाठक की रुचि का ध्यान नही रहता है किसी साहित्यिक कृति की 1000 प्रतियों का मुद्रित होना और उसका 10 15 वर्षों तक नही बिक पाना पाठक की निराशाजनक रुचि प्रकट करती है

अब पाठक की रुचि को प्रभावित करने वाले तत्वों पर विचार करें पाठक अपनी रुचि की कृतियां ढूंढता है और प्राप्त करता है पुस्तक सहज सुलभ हो तो वह उसे प्राप्त कर लेता है अन्यथा अपनी रुचि की पुस्तक न मिलने पर वह रुचि को अन्यत्र मोड देता है इस सहज सुलभता के लिए दो स्थितियां हो सकती हैं उसे अपने समीप व शीघ्र मिल जाय और वह उसे क्रय कर पढ सके यदि पाठक के समीप के पुस्तक विक्रेता के पास मिल जाती है तो वह पढ सकता है पुस्तक का मूल्य भी ऐसा हो जिसे चुकाया जा सके दरअसल आज पुस्तकें इतनी महगी हो गई है कि उसे खरीदना साहस का काय है यदि पाठक ने हिम्मत कर दो तीन पुस्तक खरीद ली तो उसका बजट असतुलित हो जाएगा पाकेट बुक्स के प्रचार व लोकप्रियता का एक कारण उनकी कम कीमत या सुलभता भी है अत स्तरीय साहित्यिक पुस्तकें कम कीमत की होगी तो पाठक रुचि के अनुकूल होने पर उन्हे खरीदेगा तथा अवश्य पढेगा

इस सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण तत्व प्रचार का भी है आज प्रचार का युग है पाठकों तक पुस्तकों की जानकारी विज्ञापन के माध्यम से पहुंचाई जा सकती है लेकिन ऐसा लगता है कि विज्ञापन को पुस्तक व्यवसाय म महत्ता नहीं गई जब दतमंजन व जूतों की पालिश का विज्ञापन ग्राहकों को प्रभावित कर सकता है तो श्रेष्ठ पुस्तकों का विज्ञापन पाठकों के मानस पर भी असर डालेगा और वह उक्त कृति के सम्बन्ध म खरीदन पढन पर विचार करेगा क्रियान्वित करेगा

पुस्तक प्रकाशित करने वाली भी हो मानव-मन का सुन्दर व कलात्मकता से प्रभावित होता ह अत पुस्तकों का प्रकाशन व कलात्मक गेट अप के साथ प्रकाशन होना चाहिए और ऐसी पुस्तकें निसन्देह एक बार तो पाठक की रुचि को प्रभावित कर देगी पुस्तक के बहिरंग की अपेक्षा अतरंग का विशेष महत्व है पुस्तक अन्तरंग पक्ष के कारण पाठक की रुचि के अनुकूल होती है पुस्तक की सामग्री कथा वस्तु भाव पक्ष व शिल्प प्रमुख होती ह

साहित्य मन को आनन्दित करने के लिए पढा जाता है वस्तुत यह मानसिक खुराक है पुस्तक पाठक को सोचने के लिए विवश करती है, उसे एक स्फूर्ति या प्रेरणा देती है कृति को पढते समय पाठक आनन्दित होता है, और प्रेरणा प्राप्त करता है तो उसकी रुचि उसी प्रकार की पुस्तकों के प्रति अधिक जाग्रत होगी इस रुचि को जाग्रत करने म रोचकता की महत्वपूर्ण भूमिका है आतरिक रोचकता से ही पाठक पुस्तक पढता है रोचकता ही रुचि जाग्रत करती है पाठक पुस्तक के कथ्य से भी प्रभावित होगा पुस्तक युग बोध, उसके जीवन व समाज से जुडी हो उसके दुख द्वन्द्व की भागीदारी होती उसे पढने की इच्छा वह अवश्य करेगा परियों की कहानियां वह पसन्द नहीं करेगा

आज के इस समय म जब विश्व सीमित गया है तथा प्रौद्योगिकी मशीनीकरण के युग म मनुष्य स्वय एक कलपुर्जा बन गया है महानगरों के मानव वन म मानव को अकेलेपन का अहसास सा रहा है वह अकेला ही विभिन्न समस्याओं से द्वन्द्व कर रहा है ऐसे समय म मानसिक चिंताओं में उलझे मनुष्य के मन को सहज होने की जरूरत है और यह सहजता उसे पुस्तक दे सकती है इसके लिए उसम साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करनी होगी

मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध साहित्य के लिए एक वातावरण निर्मित होना जरूरी है और ऐसा होने पर उस पाठक म साहित्य के प्रति रुचि जागेगी

यह घर या बाहर जब भी अवसर मिलेगा तथा पढने की आवश्यकता महसूस करेगा तब वह मूल्य बोध और अपनी पसन्द की स्तरीय कहानियां कविताए उपन्यास पढ़ेगा इस प्रकार के निर्मित वातावरण म सजय (कोई भी पाठक) सस्त जासूसी उपन्यास या सस्त कथाए नही पढ सकेगा इसलिए पाठक की रुचि के परिष्कृत करने का प्रश्न प्रमुख और विचारणीय भी है मानवीय सत्य तथा समाज की विकृतियो को उजागर कर मानव मूल्यो को प्रतिष्ठित करने वाली पुस्तक उसके चयन को प्रभावित कर सकेगी

मध्ययुगीन परिवेश   सांस्कृतिक पुनर्जागरण

ऐतिहासिक राजनीतिक, धार्मिक आदि आधारों पर हम किसी काल विशेष को जितनी सरलता से विभाजित कर सकते हैं, उतनी आसानी से साहित्येतिहास को युगों में विभक्त नहीं किया जा सकता है क्योंकि साहित्य किन्हीं भौतिक घटनाओं का अभिलेख मात्र नहीं होता वरन् उसमें तो मानवीय जिजीविषा की शाश्वत यात्रा का अनुभव गम्य तानिक आख्यान निहित रहता है सरिताजल को रेखा खींच कर जिस प्रकार खंडों में विभाजित करना संभव नहीं है ठीक वैसे ही साहित्य को किन्हीं सीमाओं में खंडित करना असंभव है फिर भी, अध्ययन की सुविधा के लिए हिन्दी साहित्य के इस दीर्घकालीन इतिहास को काल की काल्पनिक सीमाओं में विभक्त करना ही होगा

डा हजारी प्रसाद द्विवेदी, लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय प्रभृति विद्वानों की धारणा है कि साहित्येतिहास को काल खंड विशेष की प्रमुख प्रवृत्तियों, चिन्तन धाराओं तथा सन्दर्भित भाषा भाषियों के मनोभावों के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए डा द्विवेदी का विचार है— असल बात यह है कि मध्य युग शब्द का प्रयोग काल के अर्थ में उतना नहीं होता जितना एक खास प्रकार की पतनोन्मुख और दबती हुई मनोवृद्धि के अर्थ में होता है

मध्ययुग का मनुष्य धीरे धीरे विशाल और असीम ज्ञान के प्रति जिज्ञासा का भाव छोड़ता जाता है तथा धार्मिक विचार और आप्त मान जाने वाले प्रमाणों का स्वत अनुयायी होता जाता है[1] डा द्विवेदी ने यद्यपि अपने इतिहास में अनेक स्थलों पर मध्यकाल पूर्व मध्यकाल और उत्तर मध्यकाल जैसे कालवाची शब्दों का प्रयोग किया है तथापि उन्होंने पाश्चात्य मत को प्रस्तुत

---

1 हिन्दी साहित्यकोश (ज्ञानमण्डल लि वाराणसी) पृ 610

करते हुए यह भी इंगित किया है कि— 'साधारणत 476 ई से 1573 ई तक की कालावधि को मध्ययुग कहा जाता है'[1] वे 5वीं स लेकर 16वीं शताब्दी तक के समय को मध्ययुग मानते है

आचाय रामचन्द्र शुक्ल 1375 से 1900 वि स तक की अवधि को मध्यकाल मानते हैं और इसका विभाजन पूव मध्यकाल 1375 से 1700 वि स तथा उत्तर मध्यकाल (1700 से 1900 वि स) म करते हैं[2] मिश्र बन्धु विनोद क लेखक वि स 1445 से मध्यकाल का उदय मानते हैं आचार्य शुक्ल क मत के सन्दभ म एक बात जरूर पैदा होती है कि यदि 1700 वि स तक पहुचते पहुँचते हिन्दी साहित्य की प्रवत्तिया, शलिया, चिन्ताधाराए प्रेरणा स्रोत आदि आपातित बदल गए थे तो मध्यकाल नाम ही रखे रहने का आग्रह क्या है ? दूसरे साहित्येतिहासकारो की तरह वे भी इसे सीधा सादा भक्ति युग और रीति युग ही क्या नही कहते ? विद्वानो न 1700 वि स के पश्चात् शैलीगत परिवर्तन और रचना प्रक्रिया क आधार पर रीतिकाल अलकृत काल या शृगार काल नाम दिया है अत मध्ययुग की सीमा सामान्यतया 1375 वि स से 1700 वि स मानी जानी उचित है यह मध्ययुग हिन्दी साहित्य के इतिहास म भक्ति युग का पर्याय माना गया है

युगीन परिवेश

(अ) राजनीतिक —इतिहास साक्षी है कि सम्राट हषवर्द्धन (606 647 ई) के बाद भारत वष म राजनीतिक दृष्टि से एक ऐसी टूटन और बिखराव पैदा हुआ कि विदेशियो को यहा की अपार सम्पदा लूटन और अपन शासन की स्थापना करन म विशेष कठिनाइया न हुई हषवर्द्धन के बाद छोटे छोटे राज्य स्थापित हुए परिणामत देश को सम्पन्नता और विकास की ओर ले जाने वाली राजनीति के स्थान पर क्षुद्र स्वार्थों और वैयक्तिक उद्देश्यो की सहायिका तथान्वित राजनीति का प्रभाव परिलक्षित हुआ देश की एकता टूटने और केन्द्रीय नेतृत्व के निबल होने पर भारत पराधीन हुआ

मध्ययुगीन इस राजनीतिक पराजय का मुख्य कारण राष्ट्रीय एकता का अभाव राजनीतिक चेतना की कमी और क्षुद्र स्वार्थों तथा जातिवाद का

---

[1] वही, पृ 10

[2] हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 1

प्राबल्य है एक बात और भी ध्यान देने की है कि भारतीय संस्कृति और इतिहास में हम ऐसे अवसर ढूढने पर भी नहीं मिलते जहा भारत के शासक अपने देश की सीमाओं से बाहर जाकर दूसरे देशों पर आक्रमण करते हुए नजर आए ऐसा लगता है कि भारतीय जन ने सदैव ही रक्षात्मक युद्ध लड़ा और वे कभी आक्रामक न हुए लेकिन मध्य युग में जब केन्द्र ही न रहा तो रक्षात्मक युद्ध के लिए भी वह सामर्थ्य न रह पाई कि जिसमे धर्मान्ध इस्लाम के आक्रामकों से बचाव किया जाता

तेरहवी शताब्दी से पूर्व भारत पर तुर्क, अफगान, अरब एवं अन्य विदेशियों की ओर से अनेक आक्रमण हुए भारत की अतुलनीय काल्पनिक धन सम्पदा का प्रलोभन आक्रान्ताओं को लुभाता रहा मोहम्द बिन कासीम द्वारा सिन्ध पर आक्रमण 712 ई० में किया गया लेकिन यह आक्रमण भारतीय इतिहास में साधारण घटना बन कर रह गयी यह अवश्य है कि भारतीय ऐश्वर्य व सम्पन्नता की गाथाएं बाहर प्रचारित हुई महमूद गजनवी ने 1000 ई० से 1026 ई० के मध्य 26 वर्षों में 17 आक्रमण किए और अतुल सम्पत्ति लूट के रूप में प्राप्त की महमूद एक प्रचंड तूफान के रूप में आया था और विनाश लीला फैलाकर चला गया भारत में मुसलमानी साम्राज्य की स्थापना का श्रेय मुहम्मद गौरी को है

मुहम्मद गौरी ने दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज को 1193 ई० मे तथा कन्नौज अधिपति जयचन्द को 1194 ई० मे पराजित किया तत्पश्चात् दास वंश, खिलजी वंश तुगलक वंश, सयद वंश व लोदी वंश के सम्राट सन् 1200 से 1525 ई० के मध्य दिल्ली की गद्दी पर बैठे राजनीतिक घात प्रतिघात का सिलसिला जारी रहा और सुदृढ़ शासन की स्थापना न हो सकी 1526 ई० मे मुगल सेना नायक बाबर का पानीपत के मैदान मे लोदी वंशीय सम्राट इब्राहीम से युद्ध हुआ जिसमे इब्राहीम लोदी पराजित और मुगल सरदार बाबर विजयी हुआ फलत भारत में मुगल शासन का श्रीगणेश हुआ सच्चे अर्थों में यही से मुस्लिम शासन को स्थायित्व प्राप्त होता है क्योंकि कतिपय मुगल सम्राटो को छोड दें तो शेष सम्राटों की नीति भारतीय जन मन के अनुकूल और भारत देश को अपना समझने वाली थी इसी मनोभावना ने भारतीय इतिहास के मध्यकाल मे कला संस्कृति को प्रबल समर्थन दिया राजनीति को सुनिश्चितता प्राप्त हुई इसी स्थायित्व के परिणाम स्वरूप राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एकता का युग शुरू होता है जो भारतीय इतिहास मे महत्वपूर्ण है

साहित्य, कला, संस्कृति को नए आयाम मिलते हैं हिंदू मुस्लिम संस्कृति व जन समीप आते हैं और घनिष्ठ होते हैं

बाबर की इस विजय से भारत में मुगल राज्य की स्थापना हो गई बाबर के पश्चात् हुमायू और हुमायू के पश्चात् अकबर ने शासन संभाला वस्तुत दृढ मुगल साम्राज्य की स्थापना का श्रेय अकबर को है बीस वर्ष में मेवाड के अतिरिक्त समस्त भारत में अकबर ने अपनी प्रभुता स्थापित कर ली अकबर ने भारत को सर्वथा ही अपना लिया उसने यहा की कला को कुछ ऐसा प्रोत्साहन दिया कि भारतीय इतिहास में राजनीति साहित्य व कला की दृष्टि से यह काल अभूतपूर्व बन गया अकबरी दरबार के नवरत्न इस समृद्धि के ज्वलंत निदर्शन है दरअसल अकबर एक कुशल राजनेता था उसने धार्मिक सहिष्णुता एवं राजपूतों को उच्च पद देने की उदार नीति अपना कर राष्ट्रीय राज्य का निर्माण किया उसके उत्तराधिकारी जहांगीर के राज्यकाल में उसकी दूरदर्शिता पूर्ण नीतियों का यथार्थ प्रभाव परिलक्षित हुआ,

इतिहास में जहांगीर एक न्यायप्रिय सम्राट के रूप में चर्चित है जहांगीर के उत्तराधिकारी शाहजहां (1627–1558 ई०) ने राज्य के राष्ट्रीय रूप को बनाए रखा सांस्कृतिक एवं कला सम्बन्धी जागरण ज्यों का त्यों रहा लेकिन कालान्तर में राज्य के लिए वंशुओं में हुए अनिष्टकारी युद्ध के पश्चात औरंगजेब (1658–1707 ई०) दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ हुआ उसने राष्ट्रीय राज्य की नीति परिवर्तित कर दी धार्मिक अनुदारता और इस्लामी सिद्धान्तों के प्रतिपादन से औरंगजेब ने धर्मतन्त्रवादी राज्य का निर्माण किया और औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और संकीर्ण दृष्टिकोण से मुगल साम्राज्य नष्ट हो गया सम्पूर्ण साम्राज्य उसके सामने ही छिन्न-भिन्न हो गया

लगभग 400 वर्षों का यह काल राजनीतिक दृष्टि से बड़ा उत्थलपुथलकारी रहा है मुसलमानों के प्रवेश के साथ ही इस देश के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को एक साघातिक झटका लगा फलत बौद्धों और निम्नवर्ग की बहुत बडी संख्या ने इस्लाम को अंगीकार किया इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में हिंदू और मुसलमान ये दो प्रमुख सम्प्रदाय बन गए वंशानुगत वेतनभोगी सैनिकों पर ही देश की रक्षा का भार आ गया 'कोई नृप होउ हमै का हानि' की भावना सामान्य जन में व्याप्त हो गई थी यह राजनीति शून्यता का काल है राजनीतिक चेतना का प्राय अभाव ही परिलक्षित होता है तत्कालीन समाज का जो चित्र हमारे सामने है उसकी विशिष्टता यह नहीं है कि मुसल-

मानो ने यहा राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किया तथा यहा के प्रचलित धार्मिक जीवन को आहत किया वरन् इस काल मे जिस सास्कृतिक जागरण और धार्मिक चेतना को गति दी यह बात विशेष है

इस युग के साहित्यकारा कलाकारो, दार्शनिको और भक्ता को तत्कालीन शासका एव राज्याश्रय का किंचित भी मोह नही था वे राज्याश्रय स दूर सामान्य जन जीवन के मध्य रहना अधिक प्रिय व गौरवयुक्त समझत थे

मन्त का सिकरी सा का काम ?
आवत जात पनहिया टूटी बिसरि गया हरि नाम
(कु भनदास)

या

तुलसी अब का होंहिंगे नर मनसबदार (तुलसी)

इस युग को हिन्दू मुस्लिम सघर्ष तक सीमित करना अथवा राजनीतिक पराभव का दर्शाना भी तत्कालीन राजनीतिक चेतना का भ्रामक चित्रण होगा

(ख) साहित्यिक परिवेश –इस युग का साहित्य पराभव और पस्तहिम्मती से उद्भूत साहित्य नही है यह भावना कि अपने इष्ट के प्रति निवेदित काव्य विदेशी आक्रान्ताओ से भयभीत होकर साहित्यकारा के जीवन मे व्याप गया था, इस काल के साहित्यकारा क प्रति अ याय होगा इस युग म एक ओर तो इस्लाम की स्वग्रासिनी आधी के समक्ष अपने समुचित स्वार्थों म लिप्त साम त यत्र तत्र शस्त्र लेकर खडे होते थे और लडत लडत जीवनाहुति दे रहे थे तो दूसरी ओर इस्लामी विचारधारा का जो प्रभाव जनजीवन मे जा व्याप्त हो रहा था उसके प्रतिकार मे हमारे ये कवि भक्त सत भारतीय मनोभावना को सशक्त बना रहे थे इस तरह मध्य युगीन कामिक, धार्मिक, साहित्यिक सास्कृतिक सभी आन्दोलन एक शब्द से जुडे हैं–प्रतिरोध, प्रतिकार

मध्ययुगीन सामासिक सस्कृति का विकास और समन्वय वादी काव्य का मुखर स्वर इसी प्रतिरोधात्मक प्रयास का प्रतिफल हैं तुलसी, सूर, कबीर, जायसी चडीदास, जमदेव, नामदेव आदि कवियो म इस समन्वय वादी प्रवृत्ति का स्पष्ट आभास होता है

मध्यकालीन साहित्य को हम दो वर्गों म विभक्त कर सकत है—एक तो वे

जो कट्टर पथी धर्म के विरोध में खडे हुए थे और दूसरे वे जो समन्वयवादी थे अर्थात ज्ञानमार्गी प्रेम मार्गी व भक्त कवियो व लेखको द्वारा सृजित साहित्य

हिंदुओ और मुसलमानो के मूलभूत मतभेदो के होने पर भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रो म पारस्परिक सामजस्य और सहिष्णुता की शीतल सुखद म दाकिनी प्रवाहित होने लगी थी दोनो समुदायो मे धीरे धीरे सामजस्य सहयोग और सोहार्द्र की स्थिति बनती जा रही थी पारस्परिक एक दूसरे को जानने म समझने की चेष्टा करने लगे परिणामत हिन्दू धर्म हिन्दू कला, हिन्दू साहित्य और विधान से मुस्लिम तत्वो को अपनाया ही नही प्रत्युत हिन्दू सस्कृति की मूल भावना व मनीषा मे भी परिवर्तन हो गया इसी प्रकार मुसलमानो ने भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खुले हृदय से आदान प्रदान किया हिन्दुओ के धार्मिक नेताओ, मतो व कवियो ने समन्वय के लिए सतत् प्रयत्न किया तो मुसलमानो के सूफी सम्प्रदाय तथा उनके लेखको व कवियो ने भी हिन्दू सिद्धान्तो परम्पराओ व विषयो को ग्रहण किया सामजस्य और सामीप्य की मगलकारिणी भावना का प्रभाव इस्लाम पर पर्याप्त पडा व उसके स्वरूप मे भी परिवर्तन हुआ सूफी सत इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है हिन्दू मुसलमान दोनो इस सम्प्रदाय के सतो कवियो का सम्मान करते उनके दर्द को अपना दर्द समझते

मुस्लिम शासको ने भी साहित्यिक श्री वृद्धि मे विशिष्ट योग प्रस्तुत किया है और उनके राज्याश्रय म उच्च कोटि का साहित्य तैयार हुआ साहित्य के विविधागो का विकास हुआ अकबर एव जहागीर की साहित्यिक रुचि व गुण ग्राहयता अनेक ग्रथो के निर्माण की प्रेरणा दी सोलहवी व सत्रहवी शती ज्ञान विकास का युग रहा है

यह युग कल्पना की प्रचुरता और दिव्य अभिव्यक्ति का युग था कवियो विचारको, लेखको और विद्वानो ने विभिन्न भाषाओ के साहित्य को देदीप्यमान कर दिया हिंदी सस्कृत, फारसी मराठी बगाल, गुजराती, उर्दू आदि भाषाओ म साहित्य का अनवरत सृजन हो रहा था साहित्य,इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि साधना की जा रही थी अकबर के दरबार म राजा बीरबल, राजा मानसिंह, राजा भगवानदास एव पृथ्वीराज राठौर प्रसिद्ध कवि थे अब्दुर्रहीम खान ए खाना (रहीम) नरहरि, करण हरीनाथ गग भी अकबर कालीन प्रसिद्ध हिदी लेखक कवि है वस्तुत सूर, तुलसी कबीर व जायसी का अभ्युदय इस काल की महत्ती घटना है केशव व सेनापति ने शाहजहा

औरंगजेब के राज्यकाल में काव्यकला को व्यवस्थित करने के सफल प्रयत्न किए इसी काल के अन्य प्रसिद्ध कवि सेनापति, भूषण, देव बिहारी आदि हैं मर्यादा पुरुषोत्तम राम व रसिक शिरोमणि लीला पुरुषोत्तम कृष्ण का चित्रण किया गया

इस युग में श्रीधर एकनाथ, दासोपन्त तुकाराम, मुक्तेश्वर, वामन पण्डित, तुकाराम, रामदास और मोरोपंत जैसे प्रतिभा सम्पन्न कवियों ने मराठी साहित्य के भंडार को अपनी बहुमूल्य रचनाओं से भरा

इस युगीन गुजराती साहित्याकाश के अखो, प्रेमानन्द और सामल तीन देदीप्यमान नक्षत्र हैं इनके अतिरिक्त वल्लभ मुकुन्द, दवीदास, शिवदास, विष्णुदास विश्वनाथ, रत्नेश्वर आनन्दघन व नमीविजय आदि कवि लेखक हुए हैं।

संस्कृत साहित्य में शाहजहाँ कालीन कविराज जगन्नाथ, रूप गोस्वामी व गिरधारीलाल प्रमुख सृजक हैं अकबर व जहाँगीर ने अनुवाद कार्य को महत्व दिया अनेक फारसी ग्रन्थों का अनुवाद किया गया

इस युग में कलादर्शी भक्त कवि जनहृदय को आलोकित करने में तल्लीन हुए भक्ति की सरिता के शीतल व पुण्य सलिल में हिन्दू जनता ही नहीं सहृदय मुसलमानों ने भी अवगाहन कर अपने को धन्य किया ईश्वर आराधना में रूप, रंग, वर्ण का भेद तिरोहित हुआ और 'हरि को भजे सो हरि को होई' की परम्परा प्रवाहित हुई इस युग के साधकों का लक्ष्य लोक हृदय रहा है

देशज भाषाओं के साहित्य का यह विकास काल था सुधारवादी धार्मिक आन्दोलनों ने देशज भाषाओं के साहित्य की समग्रता के साथ प्रोत्साहित किया धार्मिक सुधारकों और संतों का प्रत्यक्ष सम्पर्क जनता से था परिणामतः उन्होंने उपदेश देशज भाषा में दिए और लेखन भी देशज भाषा में किया सूफी संतों व पीरों ने भी इस सत्य को स्वीकार किया कि देशज भाषाओं के अभाव में उनके सिद्धान्तों का प्रचार असम्भव है उन्होंने बोलचाल की भाषा का उपयोग किया रामानन्द, कबीर आदि ने हिन्दी में उपदेश दिए कबीर ने सधुक्कड़ी (मिश्रित) भाषा का प्रयोग किया है राधा कृष्ण भक्त कवियों ने ब्रज व अपने प्रदेश की भाषा को प्रयुक्त किया नानक व उनके शिष्यों ने पंजाबी और गुरुमुखी को प्रोत्साहित किया

इसी युग म उदू का अभ्युदय और विकास होता है फारसी तुर्की शब्दो तथा सस्कृत मे उदय हुई भाषाओ के सम्मिश्रण से उदू भाषा का प्रादुर्भाव हुआ इसमे फारसी, तुर्की, हिन्दी व दिल्ली प्रदेश की स्थानीय भाषा के शब्द ह धीरे धीरे आवश्यकतानुसार एक समान भाषा का उदय होता है वस्तुत यह भाषा हिन्दुओ व मुसलमानो के साहित्यिक समन्वय का परिणाम है कालान्तर म इसे राज्याश्रय मिला और इसका रूप रग निखरा और 18 वी शताब्दी म यह एक साहित्यिक भाषा हो गई

सांस्कृतिक परिवेश

भारत की प्राचीन हिन्दू सस्कृति और सभ्यता म एकीकरण एव तन्मयता की सवग्राही शक्ति थी तथा प्रारभिक आक्रान्ता यथा यूनानी, शक, हूण कुशान आदि इस क्षेत्र मे आने के कुछ ही वर्षों के पश्चात भारतीयो म पूण रूपेण मिल गए और यहाँ क सास्कृतिक व सामाजिक जीवन के अविभाज्य अग बन गए अनन्यता व एकात्मकता को यहा की सस्कृति म समाहित कर दिया

भारत म मुसलमानो के साथ उनकी सभ्यता व सस्कृति तथा निर्दिष्ट सामाजिक व्यवस्था तथा धार्मिक विचारो का प्रवेश होता है जो प्रारभ म अपने अलग अस्तित्व के सप्रयत्न रहे परन्तु जब कभी दो विभिन्न प्रकार की समस्याए और सस्कृतिया निरन्तर सम्पक म आती है तो परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करती ही है चौदहवी शताब्दी के पश्चात इस्लाम भारत के लिए विदेशी धम नही रह गया था और भारत का एक प्रमुख धम बन गया था

इस प्रकार सुदीघकाल मे ससग, नवीन भारतीय मुसलमानो के समुदायो का विकास, पारस्परिक विवाह सम्पक एव सहयोग, उदार आन्दोलन आदि के फलस्वरूप दोनो सस्कृति समीप आई और परस्पर प्रभावित किया फलत एक नवीन समन्वयात्मक सभ्यता का उत्कष हुआ जो न हिन्दू थी और न मुसलमान किन्तु दोनो सस्कृतियो के श्रेष्ठ तत्वो का समन्वित रूप था

हिन्दू मुस्लिम समन्वय की भावना के लिए अकबर का शासन महत्त्वशाली है सामासिक सस्कृति और धार्मिक समन्वय के लिए अकबर ने प्रथम प्रयत्न किया मुगलो ने साहित्य एव कला की सेवा म साम्प्रदायिकता की बू को नही आने दिया मुगलकालीन आर्थिक समृद्धि और शातिमय जीवन ने इस सास्कृतिक समन्वय व विकास म पूर्ण सहयोग दिया इस युग मे एक सामासिक सस्कृति का उदय होता है जो न हिन्दू है और न मुसलमान वरन् भारतीय है

इस युग में इतिहास को पराजितों की विजय की दृष्टि से देखा जाता है उसे सांस्कृतिक प्रतिरोध की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। सांस्कृतिक प्रतिरोध के फलस्वरूप पुनर्जागरण हुआ और एक सामासिक भारतीय संस्कृति का उदय हुआ। ग्वालियर के मानसिंह तोमर हिन्दू संस्कृति के रक्षक थे। भारतीय संगीत एवं कला का पुनर्जागरण हुआ और बैजू बावरा, तानसेन, शाह मोहम्मद गौस, तानसेन के पद के गायन से उदय। राजपुताने में मीरां, गुजरात में नरसी मेहता और ब्रज में अष्टछाप के कवियों ने माधुर्य वितरण में तल्लीन हो गए।

इस युग में सामासिक संस्कृति के अनुरूप के फलस्वरूप दोनों के तार इतने जुड़ गए। हिन्दुओं की बहुत सी धार्मिक मान्यताओं के मन्दिरों मुस्लिमों ने स्वीकार करनी और हिन्दुओं ने भी मुसलमानों की अनेक रस्मों को उद्भूत कर लिया। परिणामतः गाजी मियां, पांच पीर, पीर बब्बर, ख्वाजा की पूजा प्रचलित हुई। पीर ग्राम देवता बन गए, दशहरा या रथ यात्रा के जुलूसों के समान मुहर्रम में ताजिया के जुलूस निकलने लगे। श्राद्ध के समान मृत्युभोज मुसलमानों में भी प्रारंभ हुआ। पर्दाप्रथा हिन्दुओं में फैली। एकेश्वरवाद का प्रसार हुआ। संगीत का इस्लाम में प्रचार हुआ। ज्योतिष, वैद्यक, शिल्पकला, गणित, वास्तुकला आदि का उत्तरोत्तर विकास होता गया।

मध्य युगीन सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भक्ति आन्दोलन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में भक्ति यद्यपि अत्यन्त प्राचीन है तथापि मध्य युग में इस आन्दोलन ने जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसने समसामयिक समाज को एक नया जीवन दर्शन दिया। ऐश्वर्यपरकता, मुक्त विलास, उन्मुक्त आचरण आदि के प्रति स्वभावतः आकृष्ट जनता को भक्ति का सन्देश दिया। इस भक्ति मार्ग ने अत्यन्त उच्च नैतिक परन्तु भावात्मक जीवन की व्यवस्था की और हिन्दू समाज को पतन के गर्त में गिरने से बचा लिया। दोनों धर्मों की पारस्परिक निकटता से कई समन्वयकारी सम्प्रदायों का उदय हुआ।

धार्मिक परिवेश

इस्लाम के भारत प्रवेश के समय धार्मिक जीवन के क्षेत्र में विभिन्नीकरण और विश्लेषण की प्रवृत्ति गतिमान थी। बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था और हिन्दू धर्म अपने विविध सम्प्रदायों में विभक्त रहते हुए बौद्ध धर्म का स्थान लेता जा रहा था। बौद्ध धर्म का दुखद अन्त एक स्तम्भकारी घटना है। महायान सम्प्रदाय की शाखा वज्रयान व तन्त्रयान के कृत्य, बौद्ध संघों में घुसे हुए अध

विश्वास, भ्रष्टाचार, मतभेद, भोग एव ग्रानन्द का जीवन तथा बौद्धधम विलासिया का सामान्य जन से निभेद और उनकी उदासीनता, ब्राह्मण धम का अभ्युत्थान व विदेशियों के आक्रमण बौद्ध धम के पराभव व ह्रास के कारण हैं जन धम भी सकुचित हो राजस्थान, गुजरात व उत्तरी भारत के कुछ भागो म सिमट ग्राया शव मत्त धम का प्रभाव क्षेत्र भी वष्णव धम के समक्ष सीमित होता गया ऐसे समय में इस्लाम का प्रवेश तथा प्रसार होता है धीरे धीरे दोनो सम्प्रदाया म सहयोग व सामजस्य की भावना प्रकट होने लगी थी

इस्लाम और हिन्दू धम के सामीप्य से कुछ एसे सम्प्रदाया का प्रादुर्भाव हुआ जो जातिगत विभेदो को समाप्त कर विश्व बन्धुत्व एकेश्वरवाद और ईश्वर प्रेम का म देश देते हैं धम की सरलता आराध्य के प्रति पूण समपण व अनन्यता, मूर्तिपूजा का और अस्पृश्यता का विरोध धार्मिक चितन म मिलता है जनता ने पूण निष्ठा के साथ इन्ह समथन दिया ये सुधारक उदार भक्ति सम्प्रदाय के पक्षधर थे इन्होने जाति प्रथा की घार भत्सना व वाह्याडम्बरा की निन्दा की और मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति, श्रद्धा व विश्वास पर बल दिया कम के स्थान पर धम को महत्व मिला इन सुधारको का स्पष्ट मत रहा कि सच्चाधम पाखण्ड और मिथ्या वादानुवाद म नही है वरन् ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति म है उन्होने मुक्ति का एक मात्र साधन भक्ति माना

इस युग की क्रातिकारी घटना धार्मिक सुधार का भक्ति ग्रान्दोलन है दक्षिण के धार्मिक सुधार के नेता शकराचाय रामानुजाचाय, मध्वाचाय, विष्णु स्वामी बसवेश्वर आदि थे वल्लभाचाय, रामानन्द, कबीर, नानक, शकरदेव तुलसी आदि उत्तरी भारत के धम सुधारक थे

भक्ति धम स विमुक्त नही है भक्ति के साधक जनहृदय को प्रकाशित करने म सन्नद्ध हुए ईश्वर को सामने लाकर भक्त कविया न हिन्दुओ और मुसलमाना दोना को मनुष्य के सामान्य रूप म दिखाया और भेद भाव के दृश्यो को पीछे कर दिया [1] मध्य युग के इन भक्त कवियो को डा विश्वम्भर नाथ उपाध्याय ने दो शिविरो म विभक्त किया है—एक सन्त कवि और दूसरे शिविर म वष्णव कवि [2] सत कवियो के आदिस्त्रोत ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विद्रोही

---

[1] हिन्दी साहित्य का इतिहास (रामचन्द्र शुक्ल) पृ 58

[2] हिन्दी साहित्य की [illegible] पृ 45

शिविरा से आये है और इन्हें ज्ञान मार्गी, निगु ण पथी मत कहा गया है डा उपाध्याय वैष्णव कवियो के अधिक समन्वयवाद के प्रबल पक्षधर हैं इन्होंने धार्मिक सहिष्णुता का पूरा परिचय दिया है वष्णव भक्ता म मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र एव लोकरजक रसेश श्री कृष्ण को उपजीव्य बनाया और पूर्ण निष्ठा व समग्रता स उनकी भक्ति मे तल्लीन हुए

वल्लभ सम्प्रदाय, चैतन्य सम्प्रदाय, रामानन्दी सम्प्रदाय, राधावल्लभी सम्प्रदाय निम्बार्क सम्प्रदाय, वारकरी व सहजिया वैष्णव सम्प्रदाय आदि अनेक सम्प्रदायो के भक्त व साधक सगुणोपासना कर रहे थे ता दूसरी ओर नानक, कबीर, नामदेव, दादू रदास आदि निगु ण निराकार ईश्वर की प्राप्ति का प्रचार कर रह थे हिन्दू मुस्लिम के लिए ये कृत सकल्प दिखाई देत हैं मूर्ति पूजा, कर्मकाण्ड जातिवाद की भत्सना की ओर कहा कि ईश्वर के उच्च सिंहासन के समक्ष हिन्दू मुस्लिम एक है कबीर समाज के दृढ सचेतक, निर्भय आलोचक, हिन्दू मुस्लिम समन्वय के प्रथम प्रयासक, मार्गदर्शक हिन्दू मुस्लिम एकता के अग्रदूत, मानवतावाद के प्रचारक तथा महान धार्मिक क्रातिचेता सत पुरुष थे

इस्लाम म भी एक नवीन धार्मिक विचारधारा सूफी मत के रूप म प्रख्यात हा रही थी ये प्रेम की पीर के गायक थ और इनकी मा यता थी ईश्वर का ज्ञान विश्वास, भक्ति और ध्यान से प्राप्त हा सकता है प्रत्येक सूफी का उद्देश्य आत्मा का परमेश्वर म विलीनीकरण है ध्यान, भजन, नृत्य, गीत और प्रेम सा सूफी साधक ईश्वर का साक्षात्कार करता है इसके सिद्धान्तो मे हिन्दू धर्म की गहरी छाप थी इस सूफी आन्दोलन को यह श्रेय है कि मध्य युग मे हिन्दू मुस्लिम एक स्थान पर परस्पर हिलमिल सकते थे भक्ति सम्प्रदायो के गहन अध्ययन से यह अच्छी तरह स्पष्ट होता है कि वस्तुत सभी भक्ति सम्प्रदाय एकेश्वरवादी है क्योकि भक्तगण राम कृष्ण विष्णु शिव गणेश, शक्ति किसी की भी उपासना करते हैं तथा इन्ह एक अनन्त ईश्वर के प्रतीक रूप म स्वीकारते हैं भक्ति ने मध्य युग म सर्वप्रिय लोक धर्म का रूप धारण कर लिया था

इस युग की धार्मिक चेतना समग्रता के साथ प्रसारित हुई थी रसेश कृष्ण लीलागान की सरिता के निर्मल जल से व्रज, बगाल, राजस्थान व गुजरात ही नही सम्पूर्ण भारत आप्लावित हो रहा था कृष्ण व राम के चरित्र भारतीय की धर्मप्रिय जनता के हृदय स्थल पर अकित हो रह थे

सास्कृतिक समन्वय की भाति धार्मि प्रया

की ओर से भी किया गया इतिहास मे 'अकबर महान' के रूप मे प्रसिद्ध मुगल सम्राट ने सब धर्मों का सामजस्य कर एक व्यापक धम बनाने का प्रयत्न किया था 'दिन ए-इलाही' की कल्पना को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करने के पीछे उसका 'लोकधम' सस्थापन का उद्देश्य था वह हिन्दू व मुस्लिम धम क सम वय हेतु बेहद चिन्तित रहता अबुल फजल इस काय म उसका सबसे बडा सहयोगी था कट्टर पथी मुल्लाम्रा व उलेमाओ की ओर उनकी आलोचनाओ की उन्होंने किंचित भी चिंता नही की धम और विचार की स्वतत्रता के मध्य अकबर एकेश्वरवाद को पकड रहा धार्मिक कट्टरता का प्रतिफल अकबर जानता था

अकबर की धार्मिक नीति का ही प्रतिफल है कि उसका शासन काल इतिहास म विशिष्ट स्थान रखता है वस्तुत मध्य युग सास्कृतिक व सामाजिक पुनर्जागरण, लोक धर्म के उदय तथा धार्मिक समन्वय का काल है इस युग मे भक्ति आन्दोलन के फलस्वरूप उन मानव मूल्यो की प्रतिष्ठा हुई जिनम सामयिक समस्याओ के समाधान के साथ जीवन के शाश्वत सत्य निहित थे मध्य युगीन सास्कृतिक पुनजागरण ने समाज, धम दर्शन, साहित्य एव कलाओ को नवचिन्तन और जीवन के नव आयाम दिए वैष्णव भक्ति आन्दोलन के प्रचार प्रसार स धार्मिक मा यताओ, दार्शनिक विचारधाराओ तथा जनजीवन मे सवधम परित्यागकर कृष्ण शरण म जान की वृत्ति पनपने लगी जनजीवन मे जो रिक्तता और हताश व्याप्त हो रही थी उसे भरने का सफल प्रयत्न इस भक्ति आन्दोलन न किया सास्कृतिक सौहाद की दिशा मे तजी स कदम बढने लगे और एक सामासिक सस्कृति अभ्युदयोन्मुखी हुई

कृष्णलीला साहित्य--मनोविज्ञान के संदर्भ में

भारतीय धर्म दर्शन और साहित्य कृष्ण लीला धारा से स्पष्टत अनुस्यूत है वस्तुत ये लीलाएं भगवद् प्रेम तथा चिन्मय जीवनानन्द की प्रतीक हैं इस भगवद् प्रेम तथा जीवनानन्द की प्राप्ति का साधन और साध्य ये लीलाएं ही हैं कृष्ण लीलाओं की चर्चा रसस्वरूप ब्रह्मानन्द की चर्चा है उपनिषदों से लेकर आद्यन्त तक लीला साहित्य में रस स्वरूप ब्रह्मानन्द का गुणगान ही किया गया है

लीला साहित्य आपातत रसाधारित तथा आनन्दयुक्त है आनन्द की अनुभूति होती है मन को अत लीला साहित्य का प्रथम और प्रत्यक्ष सम्बन्ध मन से है जहां तक लीला के मूल में अवस्थित दर्शन और चिन्तन का प्रश्न है वह बुद्धिगम्य होने से चिन्तना शक्ति की परिधि में आता है मन का विषय होने से मनोविज्ञान और उसके सामयिक सन्दर्भों में लीला साहित्य पर विचार करना प्रासंगिक है

भारतीय मनीषियों ने मन का महत्व प्रारम्भ से ही स्वीकारा है मन (इन्द्र) को इन्द्रियों का स्वामी व समस्त क्रियाओं का मूल कहा गया है उपनिषदों ने मन को ब्रह्म कहा है गीता कहती है कि मन अत्यन्त चंचल, प्रमथनशील, बलवान तथा वायु सदृश अग्राह्य है[1] विद्वान मन को अन्तःकरण (हृदय) का एक भाग मानते हैं जो बाह्य प्रभावों को संग्रहित कर उन्हें ज्ञान रूप देता है यह हृदय संस्कार या वासनाओं का घर है ये वासनाएं ही विभिन्न प्रभावों को ग्रहण तथा प्रस्फुटित कर मन को गति देती है विद्वानों ने दृश्यमान कार्यों को भूत सृष्टि तथा सूक्ष्म ग्राह्यों को भाव सृष्टि कहा है तथा भाव और वृत्ति को एक ही माना है[2] यही वृत्ति या भाव प्रगाढ़ होकर क्रमश स्वभाव, महाभाव

---

[1] श्रीमद् भगवदगीता 6/34

[2] सम्मेलन पत्रिका भाग 47 स 4 श्री शिवशंकर अवस्थी का लेख पृष्ठ 43

ग्रोर निर्विकल्प रस रूप स्थिति में पहुचता है इस प्रकार एक वृत्ति को रस रूप दशा तक पहुचने के लिए लम्बी यात्रा करनी पडती है जिसमे मन उसका सबसे बडा साभीदार है इसीलिए मानसिक तथा चिद् वृत्तिया मे सयुक्त साहित्य ही दीर्घजीवी, कालातीत व सार्वजनीन होता है इस प्रकार साहित्य की पष्ठभूमि मे मनोवैज्ञानिक या मानसिक प्रेरणाए विद्यमान रहती है कृष्ण लीला साहित्य मे ये स्थितिया स्पष्टत लक्षित हैं ये भक्त रसिक साधक मानव जीवन तथा व्यवहार के सच्चे परीक्षक थे

कृष्ण लीला साहित्य में मनोवृत्तिया तथा भावो का सूक्ष्म ग्रोर हृदयग्राही विश्लेषण उपलब्ध है पुष्टि मार्ग मे वात्सल्य सख्य तथा मधुर लीलाग्रो का वर्णन तो है ही लेकिन मधुर लीलाग्रो को चरमोत्कर्ष रूप दिया गया है। पुष्टि मार्गेतर ग्रन्य सम्प्रदायो के लीला साहित्य म मधुर लीलाए ही सर्वाधिक है

कृष्ण बाल लीलाग्रो के पदा मे शिशु की सामान्य मनोवृत्तिया यथा भय, जिद्, स्पर्द्धा क्रीडा, भूख, ग्रनुकरण ग्रादि की सुन्दर ग्रभिव्यक्ति है बाल लीलाग्रा क पदो का सर्वाधिक सृजन पुष्टिमार्गीय भक्तो ने किया है सूर तथा परमानन्ददास बाल लीलाग्रा के पदो के सृजन म सर्वाधिक सशक्त व समर्थ कवि है बालक की स्वचालित क्रियाग्रो (Automatic Actions) के मनोवैज्ञानिक बिम्ब यहा ह। बालक के ग्रकेलेपन का एहसास होने पर ग्रकुला उठना या होठो का फडफडाना भय सचार का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक की मान्यता ह कि शिशुग्रा मे प्रारम्भिक काल से ही भय सचार तथा सौन्दर्य विकास होता है बालक मे बाल्यकाल से ही दृष्टि, ध्वनि, स्पश घ्राण रसकल्पना का ग्रभ्युदय हो जाता है ग्रौर इसम क्रमश वृद्धि होती है। मधुर लोरी श्रवण स बालक का शात हो जाना या मा के लोरी गाते गात मौन हो जात ही शिशु का स्वभावत ग्रकुला उठना [1] ध्वनि चेतना का मनोवैज्ञानिक परिणाम है।

बाल लीला के पदो म ग्रगूठा चूसने, माखन चोरी करने या मक्खन खाने ग्रादि के ग्रनेक सुन्दर मनोवैज्ञानिक भाव चित्र पुष्टिमार्गी कवियो विशेषत सूर तथा परमानन्ददास क काव्य मे हैं शिशु भूख की प्रतीति होन पर रोना ह या हाथ

---

[1] जसोदा हरि पालने भुलावै।
हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै–
कबहुँ पलक हरि मूद लेत है कबहु ग्रधर फरकावै।(सूर सागर पद स 661)

अथवा पैर का अंगूठा चूमने लगता है और एक काल्पनिक आनन्द की प्राप्ति करता है [1] खाद्यान्वेषण प्राणी की मूल प्रवृत्ति (सम्बन्धित संवेग भूख) है [2] जिससे प्रेरित होकर शिशु कृष्ण अंगूठा चूमता है या परवर्ती समय में माखन खाता फिरता है

मनोविज्ञान और चिकित्सा शास्त्र पर्याप्त पर्यवेक्षणोपरान्त शिशु का विकास वृत्त अग्रत प्रस्तुत करता है—

एक मास रोशनी देखना, दो मास मुस्कराना (Smiling) तीन मास-सिर उठाना तथा मां को पहचानना छः मास-बैठना दस मास-रेंगना (Crawling) बारह मास सहारे से चलना, चौदह मास-स्वयं खड़ा होना, पन्द्रह मास स्वयं चलना, दो वर्ष स्वयं भोजन करना, तेजी से चलना आदि बाल लीलाओं के अन्तर्गत शिशु कृष्ण के वय-क्रम में ये स्थितियां आ जाती हैं कृष्ण का शिशु जीवन अत्यन्त स्वाभाविक सजीव तथा मनोविज्ञान सम्मत है सूर ने शिशु कृष्ण में ग्रामीण शिशु की सहजता व स्वाभाविकता का यथार्थ रूप देते हुए उनकी प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है सूर के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं—शैशव से लेकर कौमार्य अवस्था तक के क्रम से लगे हुए न जाने कितने चित्र मौजूद हैं उनमें केवल बाहरी रूपों और चेष्टाओं का ही विस्तृत और सूक्ष्म वर्णन नहीं है कवि ने बालकों की अन्तःप्रकृति में भी पूरा प्रवेश किया है और अनेक बाल्य भावों की सुन्दर स्वाभाविक व्यंजना की है [3] शिशु कृष्ण का नन्द के आंगन में घुटनों के बल चलना तथा माता पिता का हर्षित होना, या हाथ में मक्खन लिए धूल धूसरित शरीर के साथ घुटनों के बल रेंगना या किलकते हुए अपने ही

---

[1] द्रष्टव्य है—कर पग गहि, अंगूठा मुख मेलत
प्रभु पौढे पालने अकेले, हरषि हरषि अपने रंग खेलत सूरसागर(सभा)पद 681
चरन गहे अंगूठा मुख मेलत सूरसागर(सभा) पद स 682

[2] मेगडुगल ने समाज मनोविज्ञान में 14 मूल प्रवृत्तियां और उनसे सम्बन्धित 14 संवेग दर्शाए हैं इसमें खाद्यान्वेषण प्रथम प्रवृत्ति है

[3] सूरदास—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० 117

प्रतिबिम्ब को पकड़ना और माता पिता का हर्षित होना स्वाभाविक मानस क्रीडाए हैं [1]

शिशु कृष्ण के क्रमिक विकास तथा उसके सर्वांगीण विकास में अभिभावकों के सहयोग को भी बाल लीलाओ मे चित्रित किया गया है कृष्ण के एक वर्ष का होने पर माता पिता उसे चलना सिखाते है– कभी कृष्ण का नन्हा हाथ छोड़ कर बालक को आत्मविश्वास के लिए सम्प्रेरित किया जाता है बालक को उच्चारण बोध भी कराया जाता है बालक की क्रीडाओ का अवलोकन कर नन्द यशोदा हर्षित होते हैं [2] शिशु की सामान्य मनोवृत्तियो और माता पिता के वात्सल्य की सूक्ष्म अभिव्यजना इन बाल लीला के पदो मे है इसी प्रकार [3] आत्सुक्य [4] तर्क [5] स्पर्द्धा, [6] जिद आदि के भावो का प्रस्तुतीकरण विभिन्न बाल लीला के पदो मे कृष्ण भक्तो ने किया है

---

[1] घुटुरुनि चलत स्याम मनि आगन, मातु पिता दोऊ देखरी
सूरसागर (सभा) पद 716
किलकत कान्ह घुटुरुवन आवत
मनिमय कनक नन्द के आगन निज प्रतिबिम्ब पकरिबै धावत
सूरसागर (सभा) पद स 728
[2] गहे अगुरियां ललन की नन्द चलन सिखावत
सूर स्याम मुख लखि महर, मन हरष बढ़ावत
सूरसागर (सभा) पद स० 740
[3] मया कबहि बढेगी चोटी ?
किती बार मोही दूध पियत भई अजहू है छोटी
सूरसागर (सभा) पद सं 793
[4] मया मोहि दाऊ बहुत खिझायो सूरसागर (सभा) पद सं 833
खेलत अब मेरी जाई बलैया सूरसागर (सभा) पद स, 835
मैं जान्यो यह मेरो घर है ता धोके मे आयो सूरसागर (सभा) पद स 897
[5] दुहुन देहु कछु दिन अरु माको, तवकारी हो मो समसरि आई
जब लौ एक दुहागे, तब लौं चारि दुहाब नन्द दुहाई
सूरसागर (पद) स 1286
[6] मया मैं तो चन्द खिलौना लैंहो
जहा लोटि धरनि पर अबही तेरी गोद न ऐहो सूरसागर(सभा)पद सं 811
मया री मैं चन्द लौ होगे
कहा करो जलपुर भीतर को, बाहर ब्योकि गहोगो सूरसागर सभा पद 812

बालक गोपों प्रिय होता है उन सभी साथियों के साथ गगन में मगन माता है इस गोपा प्रियता से आत्मविश्वास, मनोरंजन तथा शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है और दूसरी ओर निरन्तर परस्पर में बालक कुछ न कुछ अनुकरण भी बालक करता है और नटखट भी करता है कृष्ण गोकुल में इधर उधर से ही नटखट करता रह जाता है माता के पकड़ा, मक्खन चोरी करने या उन साहसिक कार्यों में व नटखटकारी भूमिका का निर्वाह करते हैं यह मानवीय स्वभाव होता है जिससे बालक अनुयायियों में अपना प्रभुत्व का स्थापित करता है व नटखट करता है वह ही नायक होता है माखन चोरी लीला, गौ चरण लीला दान लीला या राम लीला आदि में कृष्ण नटखट करते हैं

कृष्ण प्राय साथियों की मण्डली में रहते हैं तथा साथियों (अनुयायियों) को साथ बना जाते हैं माखन चोरी के पश्चात् रासलीला या पनघट लीला में व साथियों का सभी गोपिकाएं यमुना किनारे रास लेते हैं और छेड़ छानी करते हैं कृष्ण उनसे यौवनदान मांगते हैं [1] कृष्ण की इस नटखट व्यापी भूमिका में प्रभुत्व कामना का होना स्वाभाविक है [2]इस मनोवृत्ति के होने हुए भी कृष्ण तथा अन्य साथियों में समभाव है, महत्व भावना का विलय है लीला में साम्य आवश्यक है

कृष्ण लीलाओं में मधुर भावपरक लीलाओं का बाहुल्य है चिरहरण लीला दानलीला पनघटलीला युगल विहार लीला, रासलीला, निकुंजलीला, नित्य केलि आदि प्रमुख प्रेम लीलाएं हैं माखन चोरी लीला भी प्रेमलीला ही है इन लीलाओं का चूडान्त रूप रासलीला, निकुंज लीला, या नित्य केलि है ये लीलाएं राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम से आप्लावित हैं

---

[1] मांगत दान ब्याज नहिं देती, ऐसी तुम जोबन की जोरी
उर नहिं मानति नन्दनंदन को, करति आनि झकझोरा भारी
सूरसागर(सभा) पद स 2152

[2] ग्वालनि कर त कौर छुडावत
जूठा लेत सबनि के मुख अपने मुख ले नावत
षटरस के पक्वान धरे सब तिनस रुचि नहीं लावत
हा–हा करि मांगि लेत हैं कहत मोहि अति भावत
सूरसागर (पद) स 1086

प्रेम का मानव जीवन से अटूट सम्बन्ध है प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और उदार दृष्टि ही भगवदनुग्रह का साधन अवलम्बन बनती है इसी प्रेम का विस्तार सर्वत्र हैं प्रेम तथा आनन्द के कारण ही परब्रह्म का प्राकट्य (अवतार) होता है और वे नर लीला करते हैं आनन्द के सागर रसावतार की इन लीलाओं का उद्देश्य अहेतुकी लीलानन्द ही है [1]

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य मात्र का सर्वाधिक व्यापक भाव रति है और आदिम प्रवृत्ति काम है मनुष्य की प्रमुख आदिम प्रवृत्तियां अहंता (Ego) भय (Fear) और काम (Sex) कही जाती है भय नकारात्मक काम सकारात्मक और उदासीन होता है यानी अह न तो सकारात्मक है और न नकारात्मक इस प्रकार काम प्रेम सर्वव्यापी भाव है काम से ही अनेक कामनाओं का अभ्युदय होता है इस प्रेम का स्थायी भाव रति है और चरम रूप मधुर भाव की पूर्ण अभिव्यक्ति राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं में है स्त्री पुरुषों के रागात्मक सम्बन्धों में पति पत्नी के प्रेम में सर्वाधिक आस्फरण होता है इस प्रेम में उल्लास, तीव्रता, गहनता, अनन्यता तथा मादकता है प्रेम में रसोद्रेक की चरमावस्था वह होती है जहा स्व और पर के बंधन समाप्त हो जाते हैं और युगल निर्विशेष प्रेम में लीन हो जाता है निकुंज लीला तथा नित्य केलि में यही प्रेम मूर्तिमान हो उठा है

---

[1] (क) प्रीति के बस्य य है मुरारी ।
प्रीति के बस्य नटवर सुभेषहि धर्यो प्रीति बस करज गिरिराज धारी ॥
प्रीति के बस्य ब्रज भये माखन चोर, प्रीति के बस्य दावरि बधाई ।
प्रीति के बस्य गोपी रमण नाम प्रिय, प्रीति बस जमाल तरु मोच्छदाई ॥
प्रीति बस नंद बंधन बरन गृह गए, प्रीति के बस्य बनधाम कामी ।
प्रीति के बस्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित, प्रीति बस सदा राधिका स्वामी ।
सूरसागर (सभा) पद स 2636

(ख) आनन्द की निधि नन्दकुमार ।
प्रगट ब्रह्म नरभेष नराकृत जगमोहन लीलावतार ।
स्रवनन आनन्द लोचन आनन्द मन मे आनन्द ।
परमानन्द सागर (शुक्ल) पद स 29 पृ 10 11

बालक क्रीडा प्रिय होता है उसे अपने साथियो के साथ खेलने म आनन्द आता है इस क्रीडा प्रियता से आत्मविश्वास, मनोरंजन तथा शारीरिक शक्ति म वृद्धि होती है और दूसरी ओर निरन्तर पराजय से बालक कुंठा ग्रस्त होता है अनुकरण भी बालक करता है और नेतृत्व भी करता है कृष्ण गोकुल म छोटी उम्र से ही नेतृत्व करने लग जाते हैं गायो को चराने, मक्खन चोरी करने या अन्य साहसिक कार्यों मे वे नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वाह करते हैं यह मानवीय स्वभाव होता है कि नेता अपने अनुयायियो म अपने प्रभुत्व को स्थापित रखता है व नेतृत्व करता है नेता ही नायक होता है माखन चोरी लीला, गौ चरण लीला, दान लीला या रास लीला आदि म कृष्ण नेतृत्व करते ह

कृष्ण प्राय गोपियो की मेरा–दी मे आते हैं तथा साथियो (अनुयायियो) को साफ बचा जाते हैं माखन चोरी के पश्चात दानलीला या पनघट लीला म वे गोपियो का गली चौराहा यमुना किनारे रोक लेते है और छेड छानी करते है कृष्ण उनसे यौवनदान मागते हैं [1] कृष्ण की इस नेतृत्व व्यापी भूमिका मे प्रभुत्व कामना का होना स्वाभाविक है। इस मनोवृत्ति के होते हुए भी कृष्ण तथा अन्य साथियो म समभाव है, महत्व चेतना का विलय ह [2] लीला म साम्य आवश्यक है

कृष्ण लीलाओ म मधुर भावपरक लीलाओ का बाहुल्य है चिरहरण लीला, दानलीला पनघटलीला, युगल विहार लीला, रासलीला, निकुजलीला, नित्य केलि आदि प्रमुख प्रेम लीलाए है माखन चोरी लीला भी प्रेमलीला ही है इन लीलाओ का चूडान्त रूप रासलीला निकुज लीला, या नित्य केलि है ये लीलाए राधाकृष्ण के दिव्य प्रेम से आप्लावित हैं

---

[1] मागत दान ज्वाब नहिं देती, ऐसी तुम जोबन की जागी
उर नहिं मानति नदनदन को करति आनि भकझोरा भारी
सूरसागर(सभा) पद स 2152

[2] ग्वालनि कर त कौर छुडावत
जूठा लेत सबनि के मुख अपने मुख ल नावत
पटरस के पकवान घर सब नितस रुचि नही लावत
हा–हा करि मागि लेत ह कहत मोहि अति भावत
सूरसागर (पद) स 1086

प्रेम का मानव जीवन से अटूट सम्बन्ध है प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और उदार दृष्टि ही भगवद्ग्रह का साधन अवलम्बन बनती है इसी प्रेम का विस्तार सर्वत्र है प्रेम तथा आनन्द के कारण ही परब्रह्म का प्राकट्य (अवतार) होता है और वे नर लीला करते हैं आनन्द के सागर रसावतार की इन लीलाओं का उद्देश्य अहेतुकी लीलानन्द ही है [1]

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाय तो मनुष्य मात्र का सर्वाधिक व्यापक भाव रति है और आदिम प्रवृत्ति काम है मनुष्य की प्रमुख आदिम प्रवृत्तियाँ अहंता (Ego) भय (Fear) और काम (Sex) कही जाती हैं भय नकारात्मक काम सकारात्मक और उदासीन होना न यानी अहं न तो सकारात्मक है और न नकारात्मक इस प्रकार काम प्रेम सर्वव्यापी भाव है काम से ही अनेक कामनाओं का अभ्युदय होता है इस प्रेम का स्थायी भाव रति है और चरम रूप मधुर भाव की पूर्ण अभिव्यक्ति राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं में है स्त्री पुरुषों के रागात्मक सम्बन्धों में पति पत्नी के प्रेम में सर्वाधिक आकर्षण होता है इस प्रेम में उल्लास, तीव्रता, गहनता, अनन्यता तथा मादकता है प्रेम में रसोद्रेक की चरमावस्था वह होती है जहाँ स्व और पर के बंधन समाप्त हो जाते हैं और युगल निर्विशेष प्रेम में लीन हो जाता है निकुंज लीला तथा नित्य केलि में यही प्रेम मूर्तिमान हो उठा है

---

[1] (क) प्रीति के बस्य य है मुरारी।
प्रीति के बस्य नटवर भूमेषहि धर्यो प्रीति बस करज गिरिराज धारी ॥
प्रीति के बस्य ब्रज भय माखन चोर, प्रीति के बस्य दावरि बधाई।
प्रीति के बस्य गोपी रमण नाम प्रिय, प्रीति बस जमाल तरु मोच्छादई ॥
प्रीति बस नंद बंधन बरुन गृह गए, प्रीति के बस्य बनधाम कामी।
प्रीति के बस्य प्रभु सूर त्रिभुवन विदित, प्रीति बस सदा राधिका स्वामी।
सूरसागर (सभा) पद स 2636

(ख) आनन्द की निधि नन्दकुमार।
प्रगट ब्रह्म नरभेष नराकृत जगमोहन लीलावतार।
स्रवनन आनन्द लोचन आनन्द मन मे आनन्द।
परमानन्द सागर (शुक्ल) पद स 29 पृ 10-11

इन लीलाओं म लीला रस प्रवाहित है इन लीलाओं म रस रूप ज्ञान व कारण दोनो ही समान है इसीलिए कृष्ण भक्तो म नित्यविहारी रूप अधिक मान्य है प्रेम हरि रूप ह इस नित्य विहार लीला मे अनुभूत प्रेम ही सवश्रेष्ठ है जिसमे स्वकीया परकीया दोनो प्रकार का प्रेम सयुत है इस नित्य विहार म युगल रमणलीला मे सन्नद्ध रहते हैं इस लीला का न आदि है और न अंत यह प्रेम कालातीत व कालजयी होता है प्रेम की अखडता ही उसकी सर्वोत्तम विशेषता है [1]

युगल लीला म तत्सुखी भाव अपेक्षित है युगल मानस अपने प्रिय को सुखी तथा आनन्दित देखने की ही कामना करता है और उनके आनन्द म स्वय आनन्दित होता है उसके मन म उल्लास का भाव ही रहता है तथा ईर्ष्या द्वेष आदि भाव मन म नहीं आते हैं

युगल लीला में राधाकृष्ण का पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ठतम है ये दोनो ही बादल बिजली या जलतरग वत हैं तथा दोनो का मानस प्रिय के निष्पादित कार्यों के अनुकूल प्रतीति करता ह [2] मानस शास्त्रियो की भी यह

---

[1] न आदि न अन्त विहार करे दोउ, लाल प्रिया में भई न चिन्हारी।
है नई (नई) भांति नई छवि कांति नई नवला नव नह बिहारी ॥
रहे मुह चाहि दिये चिन आहि परे रस प्रीति सु सबस हारी।
रह इक पास करे मदुहास सुनो ध्रुव प्रेम अकत्थ कथारी ॥
बयालीस लीला भजन तृतीय शृ खला लीला पृ 114

[2] जोई जोई प्यारो करे सोई मोहि भावे,
भावे मोहि सोई सोई करे प्यारे।
(जश्री) हित हरिवश हस हसनि स्यामल गौर,
कहो कौन करे जल तरगीनि न्यारे। हित चौरासी, श्री हितहरिवश
हिडारो झूलति है पिय प्यारी।
घन रजनी दामिनी त डरप, पिय हिय लपटि सुकुमारी
ज श्री भट निरखि दम्पति छवि देत अपनपा बारी। युगल शतक, श्री भट्ट
प्रेम रसासव छकि दोऊ करत विलास विनोद।
चढत रहत, उतरत नहीं, गौर स्याम छ विमोद।
बयालीस लीला रतिमजरी लीला, ध्रुवदास

मान्यता है कि प्रेम की चरमावस्था मे स्त्री पुरुष अन्त बाह्य की परि-स्थितियो स विच्छिन्न होकर एक विशिष्ट भावलोक म विचरण करते है या दो मन एक हो जाते है भावना त्मक की यह स्थिति होती है प्रेमदशा का एकत्व जल मे घुली हुई शक्करा सदृश होता है यह वह मानस स्थिति है जब सवत्र प्रियतम की छवि ही दृष्टिगत होती है यह लीलाम्रो मे कृष्णमय या कृष्णीकरण की स्थिति है राम लीलाम्रा मे कृष्ण सभी गोपियो के सामीप्य होत ह व सोलह हजार गोपक याम्रा के साथ सोलह हजार रूप धारण कर नत्य करते है और रास के मध्य राधा के साथ ही शोभित होते हैं प्रिय के सामीप्य का म्रानन्द प्रत्यक गोपी प्राप्त करती ह[1] यह प्रेम की उत्कृष्ट स्थिति ह

भारतीय मनीषियो ने प्रेम को जीवन का मूल भाव स्वीकार किया है लेकिन यह प्रेम या काम यौनेच्छा का रूपान्तरण नही है अपितु जिजीविषा का सूचक ह[2] काम या प्रेम को सकुचित अथ की अपेक्षा उदात्त रूप मे ग्रहीत करना अधिक उपयुक्त ह राधा कृष्ण की प्रेमलीलाम्रो मे काम वृत्ति का रूपान्तर हो जाता है और काम भाव धीरे धीरे लीलाभाव बन जाता ह मानस शास्त्रियो की मान्यता है कि सम्बन्ध तीव्र स तीव्रतर होता जाता ह और निर-न्तर सक्रिय रहता है पुष्टिमार्गीय लीलाम्रो म प्रेम के आरम्भ से लेकर प्रेम की चरमावस्था तक की विभिन्न स्थितियो का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है आकस्मिक मिलन और उससे उत्पन्न लरिकाई का प्रेम' मन मे गहरा पठता ह

निरन्तर परस्पर प्रत्यक्ष मिलन, दर्शन सभाषण की चाह बलवती होती जाती है मन प्रियतम स मिलने को आतुरित रहता ह इस मिलन हेतु आवश्यकता पडने पर अनक छद्म उपाय भी किए जाते हैं क्षणिक वियोग असह्य होता है लौकिक मर्यादाए तथा समाजगत बधन छिन्न भिन्न हो जाते है

---

1 पटदस घोष सहस सुकुमारी पट दस सहम गुपाल
काहू सौं कुछ अतर नाही, करत परस्पर ख्याल
सूर सागर (सभा) पद स 1665
एक ही मूरति ललित लाल आलात की नाई
सबके अरसन धरि सावर बाह सो हाई
नददास पदावली रासपचाध्यायी पांचवा अध्याय पद 67 68

2 ब्रजभाषा के कृष्णकाव्य म माधुय भक्ति, डा रूपनारायण, पृ 223

एक ही अदम्य कामना रहती है—प्रिय मिलन यह मिलन नित नूतन होता है 'रमण सुख' ही कृष्ण के बार बार प्राकट्य का कारण बनता है

सूर ने प्रेम की प्रारभ म लेकर चरमावस्था तक की विभिन्न स्थितियों का जीवन्त चित्रण किया है माखन चोरी लीला, चिरहरण लीला, पनघट लीला, दानलीला, मान्दी लीला रास लीला, युगल लीला आदि प्रेम की विभिन्न स्थितियां हैं प्रेम प्रारम्भ होकर आसक्ति, व्यसन और फल प्राप्ति का आर बढकर चरमोत्कर्ष पर पहुंचता ह कृष्ण सम्प्रदाय क विद्वानों के अनुसार गोपियों (जीवात्मा) द्वारा रास प्रवेश फल प्राप्ति (स्वरूपानन्द या भगवितानन्द) है यहां प्रिया प्रियतम का मिलन हो जाता ह[1] एक प्रेमी अथवा प्रेमिका के मन की विभिन्न स्थितियां क शनिमाल चित्र इन लीलाओं म हैं मिलन पर मन हर्षित तथा आनन्दित होता है और उसम व्याप्त समस्त कुण्ठाए नष्ट हो जाती है वस्तुत यह मन स मन का मिलन हो जाता ह[2]

इन लीलाओं मे व्यक्तिगत घनिष्ठसम्बन्ध या की अनन्यता व नकटय मिलता है तथा मानसिक सुख प्राप्त होता है इस मनोविज्ञान के साथ साथ समूह मनोविज्ञान के निष्कर्षों का सफल चित्रण इन लीलाओं म ह गोपियों की काम द्वद्व से विमुक्ति चिरहरण लीला मे है अनिश्चय और भटकाव स मन को एक निश्चित माग मिलता है यह मनोविज्ञान सम्मत है कि प्रभावक व्यक्तित्व ही प्रमुत्व पाता है या कुछ ग्रहण कर सकता है अन दानलीलाओं मे कृष्ण और उनके सहयोगियों को नारीपात्रों स बहस करनी पडी और उन्हे समझाना पडा

---

[1] आजु बनी दम्पति वर जोरी।
सावल गौर बरन रूप निधि नद किसोर वृजभान किसोरी।
अति प रग बढ्यो 'परमानन्द' प्रीति परस्पर नाहिन थोरी।
परमानद सागर (शुक्ल) पद स 246

[2] दुलह दुलहिन सुरग हिंडारे झूलत प्रथम समागम सो गठ जोरे।
नददास प्रभु रस बरसत जहा नव घन दामिन के अनुहारे।।
नददास पदावली (व्रजरत्नदास) पृ 326

बठे लाल नवल निकुज माही।
अनिरस भरे दाऊ अग जोरि के हिलि मिली दे गलबाहीं।
भारतेन्दु ग्रथावली (दू भा) प्रेममालिका, पृ, 60

तभी प्रभावित हो वे दूध दही दान या यौवन दान करती है भावरमण भी दानलीला मे मिलता है

नारी-मन सकोची होता है वह प्रियतम स मिलना तो चाहती है लेकिन सामाजिक तथा लौकिक बधना से वह विमुक्त नही हो पाती अन्तर्द्वन्द्व से मुक्ति के लिए कृष्ण गोपियो स यमुना किनार, गाव की गलियो चौराहो आदि पर छेड छाड करत हैं उन्हें प्रेम के लिए प्रेरित करते हैं पनघट लीला आदि म इसी तथ्य की पुष्टि हाती ह रासलीला पूव सूर आदि न गोपियो को लौकिक मर्यादाआ म रहन का कह कर उनक मानस की स्थिति जाननी चाही है लेकिन गोपिया द्वारा सामाजिक बधना का अस्वीकार करने पर वे रास लीला करते हैं रास लीला के खडित होन के पश्चात महारास होता है इसका भी एक मनोवैज्ञानिक कारण है कि भावा म अवरोध आन पर व अधिक उत्तेजित व तीव्र होत हैं इसलिए महारास सघनतम और तीव्रतम होता ह

निकुज लीला, हिण्डोललीला विहार लीला आदि म राधा कृष्णकी प्रणय लीलाओ के सजीवतथा उद्दामचित्र है राधाकृष्ण का प्रेम नित्य है [1] वे परस्पर प्रेम मत्त हो रसानन्द का आनन्द लते हैं [2] प्रेम की प्यास निरन्तर बलवती होती जाती है औरन्सम अतृप्ति का भाव रहता है मनुष्य का मन प्रेम मे अतृप्त रहता ह दोना साथ निद्रा त्यागत हैं, नितनूतन प्रेम युक्त रहते हैं अग से अग मिलन पर भी बेचन हैं [3] वे अधिकाधिक लीलानन्द की प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत हैं उन्ह अपन प्रेम म अपनी युगल लीला के अतिरिक्त लोकादि की बिलकुल चिन्ता नही रहती ह [4] ये सभी मानसिक क्रियाए है

---

1 राधा माधव अद्भुत जोरी
सदा सनातन इकरस विहरत अविचल नवल किशोरी।
युगल शतक, श्री भट्ट, 59

2 आज दोऊ झूलत रति रस साने। —वल्लभ रसिक की वाणी

3 सरस विलास गान अग अग लपटाने
आरस म अरसान नना न अघान है। बयालीस लीला भजन तृतीय
शृखला लीला, पृ 112

4 आठो पहर रहे मतवार
लोक वेद इन सब बिसारे। वल्लभ रसिक की वाणी, पृ 76

सुरत लीला के चित्रण में प्रेम जनित अनुराग व सूक्ष्मतम भावों का प्रस्तुतीकरण मिलता है[1] सौन्दर्य के भी अनेक भाव चित्र हैं सखी सम्प्रदाय के लीला साहित्य में तो राधाकृष्ण (निकुंज विहारी तथा निकुंज विहारिणी) निकुंज छोड़कर एक कदम भी बाहर नहीं जाते हैं यहां काम भाव के उदात्त रूप का प्रस्तुतीकरण है

सखी सम्प्रदाय तथा राधावल्लभ सम्प्रदाय आदि की रास लीलाओं में सखियां पुष्टिमार्गी रास लीलाओं की गोपियों के सदृश सम्मिलित नहीं होती क्योंकि ये लीलाएं गोप्य हैं और सखी का कार्य युगल की सेवा सुश्रूषा करना तथा उन्हें आनन्दित करने के लिए आवश्यक सामग्री संग्रहीत करना है सखियां तो युगल को आनन्दित देख स्वयं आनन्दित होती हैं यहां राधा कृष्ण का मिलन एक नारी का नर से मिलन (अध्यात्मिक अर्थ में जीवात्मा का परमात्मा से मिलन) है वस्तुतः प्रेम ही नर, नारी स्थान और प्रेरणा है[2]

परब्रह्म या कृष्ण के प्राकट्य (अवतार) के पीछे भी मनोविज्ञान सम्मत आधार है निर्गुण, निराकार और निर्विशेष ब्रह्म के साथ मनुष्य का रागात्मक सम्बन्ध जोड़ा जाना संभव नहीं है मानव रूपरेखहीन ब्रह्म का अपने भावलोक में ग्रहण नहीं कर पाता है अतः अरूप को रूप देकर उसे ईश्वर नाम दिया गया ईश्वर अर्थात् समग्र ऐश्वर्य बोध के कारण मनुष्य ने उसे अपने से बड़ा और उद्धारक समझा साथ ही वह ब्रह्म को सर्वव्यापी भी समझता रहा अतः इन दोनों रूपों का अतिक्रमण कर माधुर्य रूप प्रतिष्ठित हुआ और ब्रह्म मूलतः मधुर या रस रूप कहा गया

इस प्रकार ईश्वर रूप धर्म संस्थापन, दुष्ट दमन तथा साधुओं की संरक्षा से सम्बद्ध हुआ और ब्रह्म का मूल मधुर रूप लोकानुरंजन तथा सर्वांगीण

---

1 कुंवर दोऊ सुरति समर रनधीर।
मध्य सेज पर विहार निहरत रही सुधि न शरीर।
महावाणी-हरि व्यास देवाचार्य

2 (क) प्रेम नाचवत नचत सब जहं लौं धामी धाम।
सो नाचत हित नाम बस सेवक चित विश्राम
सुधर्म बोधिनी, साहिलीदास पृ 8

(ख) नाइक तहां न नाइका, रस करवावत केलि
सखी उभै सगम साम पियत नैन पुट झेलि। बयालीस लीला,
रतिमंजरी लीला, पृ. 219

आनन्दायक सिद्ध हुआ यह माना गया कि मूल पुरुष सामान्यतया उभय लिंगी है वह द्विधाविभक्त होकर नारी की उत्पत्ति करता है तथा उसके साथ रमण करता है श्रुति भी कहती है कि 'स एकाकी न रमते एकोऽहं बहुस्या प्रजायम्' – एक से ही अनेक बनने तथा रमण करने की उसकी वाञ्छा है गुह्य साधनाओं ने शब्दों में उस पुरुष की स्थिति अद्वय, युगनद्ध, मिथुन, युगल, समरस, सहज आदि की है परात्पर तत्व के द्विधात्मक रूप को शक्ति और शिव, प्रकृति और पुरुष राधा और कृष्ण, सीता और राम, लक्ष्मी और नारायण आदि कहा जाता है

इसी सन्दर्भ में यह लक्ष्य करने योग्य है कि प्रत्येक पुरुष के वाम भाग में नारी और दक्षिण भाग में पुरुष तत्व विद्यमान कहा जाता है अर्द्ध नारीश्वर का परिकल्पित रूप भी इसी मान्यताधारित है यह मूल पुरुष निरन्तर रमण क्रीडा करता रहता है कहने का तात्पर्य यह है कि भारतीय मनीषिया के अनुसार ब्रह्म का मूल भाव प्रेमयुक्त है और प्रेम के द्वारा ही ब्रह्म से साक्षात्कार हो सकता है अतः ब्रह्म से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने की परिकल्पनाएं की गई भगवद् प्रेम को लौकिक प्रेम का चरमोत्कर्ष रूप ही कहा जा सकता है लौकिक प्रेम के अनिवार्य तत्व तथा भावदशाएं रूपान्तरित हो भगवद् प्रेम के तत्व व भाव दशाएं बन जाते हैं इस प्रकार लौकिक प्रेम ही चरम स्थिति में आत्मोत्सर्ग की सीमा तक पहुंच कर आध्यात्मिक प्रेम में परिवर्तित हो जाता है[1] भारतीय मनीषिया के अनुसार भगवान मानव कल्पित, रस रूप, प्रेम रूप या आनन्द रूप है

कृष्ण को सच्चिदानंद कहा जाता है जो प्रेम लीलाएं करते हैं पाश्चात्य मनोविचारक थाउलेस के मतानुसार ईश्वरीय प्रेम लौकिक प्रेम का प्रच्छन्न रूप है तथा ईश्वर कामियों के द्वारा परिकल्पित अपने प्रिय का रूप है[2] श्रोडर, फ्विसर आदि पाश्चात्य विद्वान भी एसे ही विचार अभिव्यक्त करते हैं और भक्ति भावना का आलम्बन 'काम भाव' को मानते हैं वैष्णव मनीषिया व रसिक साधकों[3] ने मन व मनोवृत्तियों को अत्यधिक महत्व दिया है वे मनशुद्धि का

---

1 भारतीय भाषाओं में कृष्ण काव्य में संकलित डा ब्रजेश्वर वर्मा का आलेख पृ 377

2 Introduction to Psychology of Religion Thouless P 128

3 भागवत रस का भोक्ता 'रसिक' भी कहा गया है 'पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुका ' श्रीमद् भागवत 1 1 3

प्राथमिकता देते हैं उ होने वासनाओ के दमन को उचित नही माना और मानव हृदय को उद्वेलित करने वाली वासनाओ की शुद्धिकर कृष्णीकरण करन पर बल दिया इसी प्रक्रिया मे साधक भक्त न कामनाओ या वृत्तियो को उन तीकृत किया और जि ह लोक मे अनुचित, हेय, त्याज्य या मर्यादा विपरीत समझा जाता था उन्ह ही भगवद्लीला का आधार बनाया राग, भोग और शृ गार मन से सम्बन्धित विषय है और मनुष्य को य ही सासारिकता मे लिप्त रखते हैं कृष्ण लीलाओ म इन विषयो को कृष्णीकरण किया गया ससार म रागात्मक सबध वयक्तिक भावो या सबध वा के आदश पर आधारित होता है

इन लीलाओ मे कृष्ण स वयक्तिक सम्बन्ध स्थापित किय गय हैं कृष्ण सब भाव स भजनीय है पुष्टिमार्गीय लीलाओ मे कृष्ण के साथ बालवत् मित्र वत् और कान्तवत् तथा अ य सम्प्रदायो की लीलाओ म कान्तवत् प्रगाढ सम्बन्ध स्थापित किय गय तथा हृदय के सभी मनोभावो का कृष्णार्पित किया गया है इन लीलाओ मे रागात्मक सम्बन्धो से निवृत्त नही ह और न भावो का दमन ही है

इस प्रकार 'काम' तथा कामनाओ का रूपा तर कृष्ण लीलाओ का दृढ आधार है काम की उच्च स्थिति को प्रेम म परिकल्पित किया गया है इस प्रेम भाव के साथ मानव की सौन्दय वृत्ति भी सम्बद्ध है इस सौन्दय वत्ति के दमन का भी ये समथन नही करत है क्योकि दमन नकारात्मक होता है और उसम लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावनाए अधिक है इस प्रकार य रसिक काम का सवव्यापी भाव स्वीकारत है यौन या कामवत्ति को पाश्चात्य मानस शास्त्री अधिक महत्व देत ह

मनोचिकित्सक फ्रायड का कहना है कि अचेतन मन[1] स्थित लिबिडो' मूलत कामवत्ति है मनुष्य इस वत्ति द्वारा प्राप्त शक्ति का उपयोग अनुचित इच्छाओ का निरोध कर उदात्तीकरण (Sublimation) की प्रक्रिया द्वारा

---

1 फ्रायड मन क तीन विभाग मानता है— (1) चेतन (2) पूव चेतन (3) अचेतन। डा वाटसन एव उनके अनुयायी मन की सत्ता म ही सदेह करत ह युग अचेतन के चार रूप बताता है–आत्मा एनिमा (नारीभाव) एनिमस (नरभाव) और छाया

श्रेष्ठ कार्यों की ओर लगा सकता है फ्रायड जीवन के समस्त कार्य व्यापारों में काम वृत्ति (लिबिडो) को ही आधार मानता है फ्रायड ईश्वर या ब्रह्म के अस्तित्व का अस्वीकारता है फ्रायडीय धारणा मुख्यत अचेतन मन पर आधारित है

विलियम मेक्डुगल काम भावना को मूल वृत्ति के स्थान पर मुख्य वृत्ति मानता है और सभी प्रेम (रागात्मक) सम्बन्धो में इसे आरोपित नहीं करता है मेक्डुगल काम भावना को उन्नयन सामाजिक दृष्टि से अत्यावश्यक समझता है युग 'लिबिडो' को तो स्वीकारता है लेकिन उसे काम वृत्ति का केन्द्र नहीं कहता है युग के अनुसार काम भावना का रूपान्तर ही होता है, उदात्तीकरण नहीं युग ईश्वर को अचेतन मन का मानवीकृत प्रतीकात्मक रूप मानता है युग तीन वृत्तियों की चर्चा करता है— (1) इन्द्रिय वृत्ति (2) रूपात्मक वृत्ति और (3) क्रीडा वृत्ति इन्द्रिय वृत्ति जीवन, रूपात्मक वृत्ति, रूप और क्रीडा वृत्ति आनन्द या अनुरजन को सचालित करती है वह क्रीडा वृत्ति को मूल वृत्ति मानता है जो दोनो धुरियो को सयुक्त किये हुए रहती है

यही वृत्ति मनुष्य को दमन क्रिया से मुक्त करती है और पूर्णानन्द प्रदान करती है यहा द्रष्टव्य है कि भारतीय मनीषियो ने भी तीन वृत्तियो की चर्चा कृष्णलीलाओ के सन्दर्भ में की है—(1)सिसृक्षा (सृजनेच्छा) (2) रमणेच्छा (रमण की इच्छा या विलास की इच्छा) (3)युयुत्सा(युद्ध/ध्वस/द्वन्द्व की इच्छा) रमणेच्छा या विलासेच्छा ही स्थायी वृत्ति है और यही पूर्णानन्द या लीला का आधार है कृष्ण लीलाओ का विलासेच्छा के माध्यम से प्रत्यक्ष व स्पष्ट सबध मन से है लीला का उद्देश्य ही रमण सुख या रत्यानन्द की प्राप्ति है [1] शृगार

---

1 नन्द नन्दन बस कीन्हे राधा, भवन गए चित नैकु न लागत ।
स्याम स्यामा रूप मन्दिर सुख, अन्तर नेसो न कुन त्यागत ।।
जा कारन बैकुण्ठ बिसारत, निज स्थल मन मे नहीं भावत ।
राधा कान्ह देह धरि पुनि पुनि,जा सुख को वृन्दावन आवत ।।
बिछुरन मिलन बिरह सभोग-सुख नूतन दिन दिन प्रीति प्रकासत ।
सूर स्याम स्यामा विलास रस, निगम नेति कहि-कहि निन भाषत ।। ३

सूर सागर (सभा)पद स 2803

की पूर्णता भी मिथुन भाव में है सुख, आनन्द तथा सौम्य भाव मन को आह्लादित करते हैं

इस प्रकार लौकिक प्रेम का ही रूपान्तर लीला में है लौकिक प्रेम चरम स्थिति में पहुँचकर कृष्णीकृत (भगवन्मय) हो जाता है यह रूपान्तर की प्रक्रिया है जिसमें पूर्वभाव का पूर्णतया भगवद् रति में परिवर्तन हो जाता है मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लीलाओं में मनोवृत्तियों के उदात्तीकरण की अपेक्षा रूपान्तर (Conversion) होता है क्योंकि सांसारिक विषयानुरक्ति भगवद् लीलाओं में पूर्णतया समाप्त हो जाती है मानव मन के समस्त मनोविकार यहाँ कृष्णार्पित हैं काम क्रोध का सृजनात्मक तथा आनन्दानुभूत्यात्मक उर्ध्वामुखी व्यापार इन लीलाओं में है शृंगार की समस्त लौकिक चेष्टाएँ राधाभाव या गोपीभाव में कृष्णार्पित हैं कृष्ण साक्षात् मूर्तिमान शृंगार एवं मन्मथ मन्मथ हैं वे काम दहन की अपेक्षा काम को मोह लेते हैं लीलाओं में कृष्ण मदनमोहन हैं इन्हीं कृष्ण का प्रेम [1]अर्पित किया गया है

---

* राधा भाग सों रस रीति बढ़ी।
सादर करि भेटी नन्द नन्दन दून चाउ चढ़ी॥
वृन्दावन में क्रीडत दोऊ जैसे कुंजर क्रीडत करिणी।
परमानन्द स्वामी मन मोहन ताहू को मनहरिनी॥
परमानन्द सागर पद 243 पृ 76

* * *

सोई पिय के गर लपटाई
सीस भुजा दे पिय के हिय सों कसि के हियों लगाई।
निधरक पियत अधर रस उमगी तऊ न नेकु अघाई
हरिचन्द रस सिन्धु तरंग न अवगाहत सुख पाई॥
भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग 2 मधुमुकुल, पृष्ठ 403

1 प्रेम तथा सामान्य लौकिक सुख काम में अन्तर है काम में व्यक्ति की स्व सुख की प्रवृत्ति होती है लेकिन प्रेम में प्रिय सुख सर्वोपरि है
* आत्मेन्द्रिय प्रीति इच्छा तार काम नाम।
श्रीकृष्णेर प्रीति इच्छा तार प्रेम नाम॥
अतएव काम प्रेमे वहोत अन्तर।
काम अन्धतम प्रेम निर्मल भास्कर। चैतन्य चरितामृत आदि लीला चतुर्थ परिच्छेद *

इस प्रकार राधाकृष्ण की ये प्रेम लीलाए अगणितानन्द का आधार हैं और सच्चिदानद बनने की महायात्रा है प्राणीमात्र म प्रेम उदार दृष्टि और परमानद का मान जागृत करना इस लीला साहित्य का उद्देश्य है ये लीलाए मनुष्य को आग्रह से मुक्त कर सर्वांगीण आनन्द क लिये सम्प्रेरित करती हैं कृष्ण निरन्तर आग्रह पर प्रहार करत हैं और उद्घोषित करते हैं कि जीवन से उच्च न कोई दशन है और न कोई शास्त्र ह, न कोई परम्परा है और न कोई व्यवस्था ही है लौकिक जड मान्यताए गतिशील जीवन म बाधक नही होनी चाहिये मनुष्य की मनोवृत्तियो का दमन उसके जीवन को स्थिर (जड) बना देती ह अत उनका उचित प्रकाशन अपेक्षित है यह जीवन सर्वोपरि है और पूर्णानन्द प्राप्ति के लिय मनुष्य का निरन्तर प्रयत्नरत रहना चाहिये इस प्रकार कृष्ण ने लीलाओ क माध्यम स मानव तथा मानववाद की महत्ता का भी प्रतिपादन किया ह

---

* जब लगि द्वै मन बीच कछु स्वारथ को हित होइ।
शुद्ध सुधा कसे रहे, परे जो तामे तोइ।
ब्यासोल लीला–प्रति चौरनी लीला–ध्रुवदास पृ 64

* काम जड विषयक अनुराग है और प्रेम भगवद् विषयक अनुराग है
मध्यकालीन धम साधना डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ 213

राजस्थान का आधुनिक हिन्दी साहित्य
एक सर्वेक्षण

राजस्थान में हिन्दी साहित्य की परम्परा पुष्ट तथा समृद्ध रही है वीरगाथाकालीन भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और हिन्दी साहित्य को राजस्थान का प्रदेय उल्लेखनीय है भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी राजस्थान के साहित्यकारों का योगदान स्मरणीय है आजादी की लडाई में उन्होंने जनचेतना जाग्रत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है आधुनिककाल में भी यहा साहित्य सृजन अनवरत हो रहा है

राजस्थान के आधुनिक हिन्दी साहित्य की चर्चा करते समय काल की गणना का प्रसग आ सकता है यानि आधुनिक हिन्दी लेखन का प्रारम्भ कब से माना जाय ? गद्य पद्य में यह कालखड अलग अलग हो सकता है लेकिन यहा परम्परा तथा कालगणना की अपेक्षा वर्तमान लेखन के सन्दर्भ में विचार किया जाना अधिक प्रासगिक है

एक प्रश्न राजस्थान निवासी लेखक के प्रसग में भी उठ सकता है इस सम्बन्ध में राजस्थान में निवास कर रहे लेखक को तो सम्मिलित किया ही जाना चाहिये साथ ही वह लेखक जो राजस्थान से जुड़ा रहा है और व्यवसाय सेवा या अन्य कारणों से अभी राजस्थानेतर है–प्रवासी है उसे भी सम्मिलित करना समीचीन ही होगा ऐसा करने पर हम अपनी दृष्टि का विस्तार ही करेंगे इसमें कोई अतिरिक्त मोह नहीं है बल्कि हमारे यहा कृतित्व के सम्यक मूल्याकन की यह अपेक्षा है

काव्य

राजस्थान का आधुनिक काव्य, काव्य सौन्दर्य सहज अभिव्यक्ति और मूल्यबोध की दृष्टि में विचारणीय है और राजस्थान के काव्य की उपलब्धिया

से रेखांकित किया जा सकता है

हिन्दी काव्य की सभी प्रवृतियां अथवा प्रकार यहा उपलब्ध है कविता, नयी कविता, अकविता, गीति कविता आदि हम यहा संक्षिप्त म स्फुट तथा प्रबध काव्य की दृष्टि म विचार करेंगे पहले प्रबंध काव्य को ल

आधुनिक हिन्दी प्रबन्ध काव्यों म मानवीय सवेदनाओं अ तमन के द्वन्द्व अनुभूत सवेदनाओं और युगीन समस्याओं की सफल अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है आज के इस तनावपूर्ण और व्यस्त समय मे प्रबध काव्य लेखन एक दुरूह काय है लेकिन राजस्थान म सफल हिन्दी प्रबंध काव्य समर्पित किए हैं आधुनिक प्रबंध काव्यकारो क रूप म डा रागेय राघव, डा रामानन्द तिवारी भारतीनन्दन', परमेश्वर द्विरेफ डा रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', डा दयाकृष्ण विजय आदि नाम रेखांकित किए जा सकते हैं आधुनिक हिन्दी प्रबन्ध काव्य-धारा के सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाम डा रागेय राघव का है डा रागेय राघव बहुप्रतिभा सम्पन्न सफल लेखक हैं प्रबन्ध काव्य सृजन के क्षेत्र म इन्होने महाकाव्य और खण्डकाव्य दोनो लिखे ह मानवीय चेतना को रूपायित करने, संस्कृति और सभ्यता के विभिन्न चरणों को प्रस्तुत करने का बौद्धिक प्रयास 'मेधावी' महाकाव्य है भारतीय संस्कृति की उच्चता तथा राष्ट्रीयता के सन्दर्भ म यह महाकाव्य महत्वपूर्ण है लेकिन भाषा के चयन म दुरूहता भी है

डा रागेय राघव के उत्तरायण' और 'महाविजय' अपूर्ण महाकाव्य है उत्तरायण की रचना फ्लश बैक' पद्धति से की ह और कथानक भीष्म पितामह पर कन्द्रित ह यह अपूर्ण महाकाव्य 21 सर्गो म है 'महाविजय भी अपूर्ण है और महाकवि क अतिम दिनो की रचना प्रतीत होती है डा रामानन्द तिवारी 'भारतीनन्दन' प्रणीत 'पावती' महाकाव्य क थ्य प्रतिभा भाव सौन्दय, कला शिल्प, प्रबधात्मक और रस परिपाक की दृष्टि से उल्लेखनीय है डा तिवारी सास्कृतिक मूल्यो के प्रति समर्पित है और यह दृष्टि इस महाकाव्य में भी है डा तिवारी की भारतीय धर्म सस्कृति व दशन के प्रति आस्था है जो इस महाकाव्य मे प्रकट होती है

श्री परमेश्वर द्विरेफ का 'मीरा' महाकाव्य भी उल्लेखनीय है मरुस्थल मदाकिनी 'मीरा' उज्ज्वल चरित्र को आधार बनाकर लिखे गए इस महाकाव्य म श्री द्विरेफ ने मौलिक उद्भावनाए भी की ह नारी चेतना के स्वर महाकाव्य मे सवत्र ह रस परिपाक की भी विशिष्टता है द्विरेफ ने दूसरा महा-

काव्य प्रेमचन्द के जीवन प्रसगो पर आधार बनाकर 'युगद्रष्टा प्रेमचन्द' लिखा है प्रेमचन्द के जीवन के समस्त उतार चढाव यहा चित्रित है श्री द्विरफ ने श्रीमती कमला नेहरू पर भी 'कमला' महाकाव्य रचा है

डा रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' के महाकाव्य 'सारथी' का कथानक भी पौराणिक ही है चिरन्तन जीवन मूल्यो के प्रति चिन्ता महाकवि बराबर करता है मूल्यो का सघर्ष महाकाव्य मे बराबर है विज्ञान की अध प्रवृत्ति तथा सत्रस्त मानवता को महाकवि उजागर करता है भाषा शैली महाकाव्य के अनुकूल है राष्ट्रीय व सास्कृतिक धारा के प्रमुख कवि डा दिनेश की जीवन्त दृष्टि इस महाकाव्य मे है

युग पुरुष महात्मा गाधी के जीवन को लेकर देवपुरुष गाधी महाकाव्य की रचना श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने की है अति उत्साह के साथ श्री शास्त्री ने गाधी को अवतारी रूप मे चित्रित किया है परिणामत मूल्यो की अपेक्षा विचार व भावनाए प्रबल हो गई है इससे काव्यगत मूल्यो को हानि पहुची है और भावपक्ष व कलापक्ष दोनो दृष्टियो से महाकाव्य अपना विशिष्ट योगदान नही दे पाता है तथा एक सामान्य रचना ही यह बन सका है

डा दयाकृष्ण विजय द्वारा रचित आजनेय' महाकाव्य मे अजनिपुत्र पवनसुत हनुमान की यशोगाथा है इस महाकाव्य के हनुमान धीरोदात्त' नायक है कथा शिल्प, रस परिपाक, शैली सर्ग रचना आदि विशिष्ट है तथा सास्कृतिक मूल्यो के प्रति महाकवि अत्यधिक चिंतित लगता है यह महाकाव्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार से पुरस्कृत है

इन महाकाव्यो के अतिरिक्त आग और आसू (शकुन्तला भार्गव अर्चना) रामकथा कल्पलता (श्री नित्यानन्द शास्त्री) हनुमच्चरित' (रणवीर सिंह) शक्ति शतनाथ (प लक्ष्मीचन्द मिश्र) वसुमती (श्री दौलतसिंह लोढा) प्रह्लाद (डा पुष्करदत्त शर्मा) प्रबोधायन (नाथूराम भारद्वाज) आदि भी प्रकाशित है अधिकतर महाकाव्य के नायक तथा कथानक प्राचीनधर्म ग्रथो से आये हैं

खडकाव्य की दृष्टि से डा रागेय राघव की काव्य कृतिया अजेय खडहर, पाचाली, आदि उपलब्ध है प्रथम खडकाव्य मे हिटलर के रूस पर आक्रमण तथा उसके प्रतिरोध का वर्णन है तो पाचाली मे पौराणिक इतिवृत है सशक्त अभिव्यजना और शैली की दृष्टि से पाचाली उल्लेखनीय खडकाव्य है

श्री सुधीन्द्र का सुप्रसिद्ध खडकाव्य जौहर है यह पद्मिनी के जीवन चरित्र पर आधारित है सुधीन्द्र राजस्थान के हिन्दी काव्य जगत के उज्जवल नक्षत्र है भावपक्ष व कलापक्ष की दृष्टि से यह एक सुन्दर रचना है

डा रामगोपाल शर्मा दिनेश' के लगभग चार पाच खडकाव्य उपलब्ध हैं 'हिम प्रिया राष्ट्रीय चेतना का खडकाव्य ह जिसम चीनी आक्रमण तथा भारतीय जन मे स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत है शली शिल्प रूप व भाव की दृष्टि से यह एक श्रेष्ठ रचना है इनका एक अन्य खड काव्य 'उत्सग' है जिसम भाई बहिन की रक्षा के लिए उत्सग करता है 'दुर्वासा पौराणिक इतिवत्तात्मक खडकाव्य है

प्रगतिशील कवि जुगमदिर तायल की रचना युधिष्ठिर ह तायल न युद्ध का कारण वग वषम्य तथा वग भेद माना है वैचारिक प्रौढता तथा भाषा शली की सहज सप्रेषणीयता इसकी विशिष्टता हैं

डा शान्ति भारद्वाज राकेश द्वारा रचित परीक्षित' खडकाव्य इतिवृत्तात्मक है यह पुराण कथा पर आधारित ह भाषा, सरचना, वचारिक गरिमा अनुभव की प्रामाणिकता की दृष्टि से यह उल्लेखनीय खडकाव्य ह

इनके अतिरिक्त अन्य महत्वपूण खडकाव्य ह गान्धारी (डा मनोहर प्रभाकर) ममता की समाधि (डा त्रिभुवन चतुर्वेदी) शूपणखा (प्रीतमसिंह बागरेचा), अहिल्या (माधव शर्मा), सागर सतरण (डा रामगोपाल गोयल) जनकजा अशोक यामिनी (गणेशचन्द्र जोशी सवतर), श्मशान (कलाश तिवाडी विद्रोही), प्रतिपदा (डा सरनामसिंह शर्मा अरुण), प्रेरणा, आभास, मृत्युञ्जयी (माणकचन्द रामपुरिया) बधन नूरजहा, वर्जित देश (शकुन्तला भागव अचना) आदि

स्फुट काव्य की दृष्टि से राजस्थान मे प्रचुर मात्रा म सजन हो रहा है राजस्थान के वतमान साहित्य सजन को देखे तो लगता ह कि सर्वाधिक रचनाएँ 'कविता' मे उपलब्ध ह आधुनिक कविता क्षेत्र के प्रारभ मे डा रागेय राघव, डा सुधीन्द्र और श्री मेघराज मुकुल का उल्लेख किया जाना अप्रासगिक न होगा सुधीन्द्र की कविताओं का स्वर छायावादी राष्ट्रीय चेतना युक्त तथा मानववादी रहा है सुधीन्द्र युग की पहचान थे डा प्रकाश आतुर राजस्थान की आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारभ डा सुधीन्द्र से मानत हैं डा सुधीन्द्र ने राजस्थान के काव्य को एक दिशा दी है

काव्य के क्षेत्र म प्रथम सहकारी प्रयास 'सप्त किरण' काव्य सकलन है इस सकलन म राजस्थान के चर्चित सात कवियो की रचनाए ह य कवि हैं– सर्वश्री कमनाकर, वपू ग्चन्द कुलिश क्न्ह्यानाल सेठिया, न दचतुर्वेदी प्रकाश आतुर सुधी द्र और नान भारि-न इस सकलन के प्रकाशन स पूव ही सुधीद्र का देहान्त हो गया सुधीन्द्र का देहान्त राजस्थान के हिन्दी काव्य ससार क लिए गहरा आघात था इस सप्त किरण क साता कवियो न राजस्थान के आधुनिक हिन्दी काव्य भडार की अपन सृजन म पर्याप्त पूर्ति की ह निसदह ये सभी राजस्थान के सशक्त व अग्रणी हस्ताक्षर ह

सुधीन्द्र की प्रकाशित काव्य कृतिया शखनाद मर गीन जौहर प्रलय वीणा, अमत नख प्रेयम प्राप्ति है सुधीन्द्र का काव्य युग का स्वर था जिसम आशा निराशा प्रेम, राष्ट्रीय भावना जन जा ति प्रगतिवाद सभी भाव सम्मि लित है राष्ट्रीय चेतना छायावादी रूप य मानवीय मूल्यो के लिए सुधीन्द्र का काव्य प्रशसनीय ह

डा रागय राघव सभी काव्यान्दोलना स सम्बद्ध रह हैं प्रयोगवादी और प्रगतिवादी प्रवृत्तिया का गहरा प्रभाव इनके काव्य पर परिलक्षित है इनके काव्य म दार्शनिक चिंतन मानववादी सूक्ष्म दृष्टि, और सहज अभिव्यक्ति ह पूणकलश' रागेय राघव की एक महत्वपूण कृति है डा रागय राघव का देहात भी राजस्थान के साहित्य जगत के लिए एक गहरा आघात था

वयोवृद्ध पीढी के सिद्धहस्त कवि श्री जनार्दनराय नागर की अपनी अलग ही एक शली ह भावुक नागरजी की कविताओं म जीवन सघष की मार्मिक अभिव्यक्ति है इनक काव्य का प्रेरक स्वर उत्साह है दार्शनिक चिंतन, प्रेम की अभिव्यक्ति तथा राष्ट्रीय विचार इनक काव्य के स्वर है इहोने विपुल मात्रा म काव्य सृजन किया है

श्री शभूदयाल सक्सेना के काव्य सकलन रत्नरेणु व अनागता प्रकाशित है इनमे कथा शिल्प का नयापन है प्रयोगवादी डा कन्हैयालाल सहल की काव्य कृतिया प्रयोग धारा के धागे तथा समय की सीढिया है भरतव्यास ने ऊट सुजान, राष्ट कथा, मरुधरा और रिमझिम काव्य सकलन दिए हैं ओजस्वी कवि आगे फिल्मक्षेत्र म चले गये और फिल्मी गीत लिखने लगे राजस्थान की हिन्दी कविता को प्रचारित करने म श्री मेघराज मुकुल उल्लेखनीय है ओजस्वी गीत कार मुकुल की सेनानी ने अखिल भारतीय ख्याति दी है उमग, अनुगूज आदि

चर्चित काव्य कृतियां हैं रग, रूप के मधुर कवि नन्द चतुर्वेदी राजस्थान के वरिष्ठ कवियों में है और कलाशिल्प, भावाभिव्यक्ति तथा मूल्यों के लिए निरन्तर सचेत रहते है अनुभूति और अभिव्यक्ति का घनिष्ठ सम्बन्ध श्री चतुर्वेदी के काव्य में है ब्रजभाषा के सवयों से लेकर आज की कविता तक की इनकी काव्य यात्रा है समाजवाद तथा मानववाद के प्रति कवि समर्पित है श्री कन्हैया लाल सेठिया की लगभग 14 15 काव्य कृतियां प्रकाशित हैं जिनमे प्रमुख है अग्निवीणा, दीपकिरण, प्रणाम चौड़े रास्ते निग्रन्थ आदि प्रेम, राष्ट्र भक्ति का कवि है परमेश्वर द्विरेफ मूलत गीतकार है और प्रकृति के चितेरे हैं कवि सम्मेलनों में भी जमते रहे हैं मरु के टीले धूल के ५ न आदि में इनके भावचित्र उपलब्ध है पुरानी पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर गणपति चन्द्र भण्डारी है रक्तदीप इनकी महत्वपूर्ण प्रकाशित कृति है राष्ट्रीयचेतना तथा जीवन सघर्ष इनके काव्य का स्वर है

डा रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' बहुप्रतिभा सम्पन्न कलाकार है इनकी अनेक कृतियां महत्वपूर्ण है जिनमे प्रमुख है जयघोष मधुरजनी मह मरा गेय, रूपगधा, गौरवगान, गाताम आदि इनके काव्य में विविध विषय है कथ्य एव शिल्प दोनों दृष्टियों से अनेक कीर्तिमान कवि ने स्थापित किए हैं अनेक कृतियां विभिन्न स्थानों से पुरस्कृत है राष्ट्रीय चेतना व जीवन की अनुभूतियां इनके काव्य का मुख्य स्वर है शलभ (घनश्याम शलभ) प्रमुख गीतकार व रोमांटिक कवि है सामाजिक चेतना व युग बोध कविताओं में परिलक्षित है धरती का सरगम अधर के जुगनू, बादल और बासुरी इनकी काव्य कृतियां है श्री राम गोपाल विजयवर्गीय ने 'अभिसार निशा' में प्रकृति सौन्दर्य के भव्य चित्र प्रस्तुत किए है यह साहित्य अकादमी से पुरस्कृत काव्य कृति है

कवि कमलाकर की मेरे गीत तुम्हारे चरण' तथा हम [illegible] और दिलनश दीर प्रकाशित कृतियां है रूप, रस, प्रेम और [illegible] कवि कमलाकर है यह मूलत गीतकार है पान भारिन गहन [illegible] कवि है ज्वार, आकाश, कुसुम, साझ उतरी प्रकाशित [illegible] गीतों मे अबाध मुक्तता, आत्मानुभूति वयक्तिकता, [illegible], व रागात्मकता है श्री हरीश भादानी के काव्य सकलन [illegible], एक उजली नजर की सूई सुलगते पीड, सन्नाटे [illegible]

हरीश भादानी यथार्थ मे जीना, [illegible] च गीतकार है खुले अलाव और [illegible]

कल्पनाशीलता है नष्टोमोह इनकी चर्चित सश्रो कविता है प्रकृति का गीतकार डा ताराप्रकाश जोशी हैं कल्पना के स्वर, जलते अक्षर, समाधि में प्रश्न, धर्मों के टुकड़े आदि कवि के संकलन प्रकाशित हैं मगाराम पथिक आकोशी पीढ़ी का रचनाकार है पथिक का काव्य संकलन धुआं उठ रहा है' प्रकाशित है एवं लघु काव्यसंकलन 'बाल जलालत जिन्दाबाद' भी प्रकाशित है श्री मदन सक्सेना सशक्त गीतकार व भावुक कवि हैं जिन्दगी की वेदना व मानव का दुराग्रह इनकी कविता का विषय हैं इनका काव्य संकलन मैं तुम्हारा स्वर' प्रशंसनीय रहा है

यही भावधारा प्रशिक्षण क्षमा में है इनका काव्य संकलन 'गीता का दर्पण' चर्चित है डा प्रकाश आतुर की कविताओं का स्वर राष्ट्रीय चेतना प्रेम और सौन्दर्य का रहा है नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षरों में नन्द चतुर्वेदी, डा रणजीत, डा शांति भारद्वाज डा प्रकाश आतुर डा जयसिंह नीरज जुगमन्दिर तायल, विजेन्द्र ऋतुराज अमर भयाडी, डा नन्दकिशोर आचार्य, भागीरथ भार्गव डा सुधा गुप्ता मणि मधुकर योगेन्द्र किसलय, रामदेव आचार्य आदि महत्वपूर्ण हैं

डा जयसिंह नीरज की कविता की समाजोन्मुखी प्रगतिशील दृष्टि है नील जल भरी परछाइयां, दुकान समारोह डा नीरज के महत्वपूर्ण चर्चित काव्य संकलन हैं विजेन्द्र का ग्राम, डा रणजीत के संकलन जमती बर्फ खौलता खून और इतिहास का दर्द, ऋतुराज का काव्य संकलन 'एक मरण धर्मा और अन्य' पुल पर पानी व अबेकस रमेश शील की कविताएँ जुगमंदिर तायल की धूप भरी सुबह रोशनी का रथ सूरज सब देखता है, जंगल से गुजरते हुए, नन्दकिशोर आचार्य का वह एक समुद्र था राम जसवाल का बिम्ब प्रतिबिम्ब, डा सावित्री डागा के अमिट निशानी एक प्यास जिन्दगी कविता की मौत पर सदर्भो से कटे हुए रामदेव आचार्य का अक्षरों का विद्रोह, रेगिस्तान से महानगर तक, हरिराम आचार्य का खुले किरणजाल, भगवतीलाल व्यास का सनातनी निरुत्तर है, कैलाश जोशी का चेतन अवचेतन व ॥जुरी भरवन डा सुधा गुप्ता का अनचीन्हा परिवेश और चेतना के फूल, मणिमधुकर का खड खड पाखंड, बलराम के हजारों नाम आदि भागीरथ भार्गव का हथेलियों में ब्रह्माण्ड और शाही सवारी श्रीकांत मजुल का दर्पण कन्दरा, तारादत्त निर्विरोध का गीत यात्रा दर्द का सौदागर, वयक्तिक सतहों पर हम, डा रामगोपाल शर्मा दिनेश' का ग्रह मेरा गेय रूपगधा आदि अफजल खां का अजाने स्वर डा मनोहर प्रभाकर का इन्द्रधनुष, विदा की सांझ डा रमा सिंह का समुद्रमन बशीर अहमद 'मयूख' का सूर्य बीज, स्वर्णरेख श्री रूप का

समय से पहले, मरुधर मृदुल का शब्दो का घूघट, कमर मेवाडी का चाद बेदाग, बहस अभी जारी है, आखिर कब तक, हेमतशेष का घर बाहर डॉ महेन्द्र भानावत का कोई कोई औरत, श्री मधुसूदन पाटया का दो घूट प्रीत, सुरेन्द्रदत्त बहुगुणा का गधीयायी माटी, डा नरेन्द्र भानावत का आदमी कुर्सी और मोहर आदि महत्वपूर्ण काव्य सकलन प्रकाशित ह

विभिन्न रचनाकारा की रचनाओ क सकलनो म राजस्थान के हिन्दी कवि भाग 1 (नन्द चतुर्वेदी) राजस्थान के हिन्दी कवि भाग 2 (योगेन्द्र किसलय) अकादमी से प्रकाशित हैं सवदन इति (नन्द किशोर आचाय) अन्तकपोत परिवेश मे, राजस्थान के हिन्दी कवि (मधुकर गौड) राजस्थान क प्रतिनिधि कवि (शरद देवडा) अजानी सलीबा पर (डा मदन शर्मा) आदि प्रकाशित ह विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे विभिन्न कविया की रचनाए प्रतिदिन छप रही है

राजस्थान के कविया की रचनाओ म प्रकृति सौन्दय प्रमानुभूति, युगबोध युगीन चेतना, द्वन्द्वात्मकता, आक्रोश, रहस्य आदि प्राप्त है राजस्थान का सजनशील कवि अपने कर्म व प्रतिष्ठा के प्रति सजग ह आधुनिक हिन्दी काव्य म राजस्थान का योगदान उल्लेखनीय है

कथा साहित्य

ऐतिहासिक शौय, त्याग बलिदान प्रेम, साहस त्या की कहानिया तथा लौकिक अलौकिक पात्रा के चित्रण की प्रचुर कहानिया राजस्थान मे बात, ख्यात आदि के रूपो म प्रचलित रही है तथा आज भी है ऐतिहासिक पात्रो तथा उनके चारित्रिक गुणा की कहानिया का प्रभाव आज भी परिलक्षित ह या कहना और 'कहानी लिखना मे बडा अन्तर है

उपन्यास

कथा साहित्य मे उपन्यास और कहानी सम्मिलित है पहले हम उपन्यास और बाद मे कहानी पर चर्चा करेंगे आधुनिक हिन्दी साहित्य की पहली कथा कृति बूदी के श्री रामप्रताप शर्मा द्वारा रचित नरदेव है[1] इस कृति का प्रकाशन सन् 1903 ई० ह जो एक उपदेशात्मक ग्रथ है इस उपन्यास का वशिष्ट्य यह है कि उपन्यासकार तत्कालीन एय्यारी कथा साहित्य से भिन्न

---

[1] राजस्थान म हिन्दी कथा व नाटक साहित्य के सौ वष, डॉ नवलकिशोर पृ 3

सामाजिक कथानक को लेकर है, बूंदी के ही श्री लज्जाराम महता ने 'स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी' 'हिन्दू गृहस्थ', 'आदर्श हिन्दू', 'आदर्श दम्पति' आदि हिन्दी के प्रारंभिक उपन्यास रचे है श्री महता के उपन्यासो मे संयुक्त परिवार प्रथा का विघटन, पाश्चात्य प्रभाव, भारतीय जीवनादर्श आदि अकित है मुंशी देवीप्रसाद जोधपुर का रूठी रानी ऐतिहासिक उपन्यास है विधवाओ के पीडा मय जीवन पर स्पूर्णा देवी ने अबलाओ का इन्साफ' लिखा

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासो के प्रारंभिक काल मे सामन्ती प्रथा व साम्राज्यवाद का विरोध उनका अत्याचार तथा उनके कुसंस्कारो का पर्दाफाश है तो दूसरी ओर जन जागृति की ध्वनि है श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने अपने अनेक उपन्यासो मे सामन्तो के अत्याचारो आनन्द व उनके ठसकाठ वातावरण का चित्रण किया है जनानी ड्योढी दीया जला दीया बुझा, 'खम्मा अन्नदाता ठकुरानी रक्त कथा जिन्दगी का वलय धरती की पीर ढालन कुंजरली आदि उपन्यास इसके प्रमाण है इनी रियासतो मे उभरती जन जागृति का चित्र श्री द्वारकाप्रसाद पुरोहित के इन्द्रधनुष' उपन्यास मे है

डा रांगेय राघव का प्रदेश के कथा साधको मे सर्वोपरि स्थान है निसदेह रांगेय राघव हिन्दी साहित्य के इतिहास का प्रतिष्ठित व सशक्त हस्ताक्षर है रांगेय राघव ने प्रगतिशील चिन्तन को स्वीकार किया है और उनके साहित्य मे यह बराबर ध्वनित होता है रांगेय राघव का कृतित्व विपुल है वे उच्च-कोटि के साहित्यकार थे रांगेय राघव का सुप्रसिद्ध उपन्यास कब तक पुकारू' (प्रकाशन वर्ष 1957) है इस आलोचको ने आंचलिक उपन्यास कहा है लेकिन यह उपन्यास अंचल विशेष की अपेक्षा नटो के जीवन से सम्बन्धित अधिक है नटो की जिन्दगी सामाजिक रस्म संस्कार आदि का विस्तार मे उपन्यास मे चित्रण है इसमे सुखराम की जीवन कथा है और गहन प्रेम की सार्थक अभिव्यक्ति मिलती है इस उपन्यास को लेखक ने रहस्य रोमाच युक्त बनाने का भी प्रयास किया है यह क्यो किया और इसके पीछे उनकी क्या दृष्टि थी पता नही है लेकिन रहस्य रोमाच की उपकथा भी इसमे साथ साथ चलती है सभव है रोचकता की दृष्टि से यह प्रयास हो

डा रांगेय राघव का दूसरा उपन्यास है मुर्दो का टीला' यह एक ऐतिहासिक-संस्कृति प्रधान उपन्यास है जो मोहन जोदडो की संस्कृति का चित्र प्रस्तुत करता है इसमे चमत्कारपूर्ण कथा विन्यास अद्भुत रहस्यपूर्ण परिस्थितियां और रूमानी प्रेम है फिर भी यह हिन्दी के श्रेष्ठ व महत्वपूर्ण

उपन्यासों में से एक है 'पतझर' उपन्यास में जगन्नाथ और मोहिनी की मनोग्रंथियों का मनोवैज्ञानिकतापूर्ण विवेचन है सूक्ष्म शिल्प विधान व भाव सबलता की अनुपस्थिति में यह एक सामान्य कृति ही है आखरी आवाज में ग्राम जीवन के स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार का सफल चित्रण है अंधेरे के जुगनू, चीवर, राह न रुकी आदि इनके अन्य उपन्यास हैं उपन्यास की दृष्टि से डॉ रांगेय राघव का उल्लेखनीय योगदान है

श्री गोपाल आचार्य का उपन्यास मंजु (प्रकाशन 1952) [illegible] भावुकतापूर्ण कथा कृति है यह आदर्शवादी उपन्यासों की श्रेणी में आते हैं श्री आचार्य का दूसरा उपन्यास निवसना' है जिसमें सामाजिक बंधनों में [illegible] एक नारी का चित्रण है यह भी भावुकता युक्त सुधारवादी [illegible]

श्री शम्भूदयाल सक्सेना आदर्शवादी विचारों के समर्थक [illegible] बृहदाकार उपन्यास मगरमच्छ' है इसमें नर नारी का [illegible] को प्रकट किया है इसमें जीवन के राजनीतिक सामाजिक [illegible] की क्षेत्र में प्रवेश क्यों न किया जाय इन मगरमच्छों [illegible] विवश होना पड़ता है सौम्यता के अवतार [illegible]

श्री परदेशी के लगभग एक दर्जन उपन्यास [illegible] उपन्यास भगवान बुद्ध की आत्मकथा [illegible] व यशोधरा की कथा है [illegible] का एक अन्य उपन्यास जय महाकाल' [illegible] अकादमी से पुरस्कृत है इनके अतिरिक्त [illegible] माधवसिंह दीपक ने भी तलवार की [illegible] उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में लिखे हैं

'एक इन्सान का जन्म एक इन्सान की मृत्यु' में कथानक दोहराना प्रतीत होता है यह एक यान कथा है जो विशेष प्रभावित नहीं करती है 'एक और मुख्यमन्त्री' में सम सामयिक राजनीतिक जीवन की विद्रूपता का चित्रण है सत्ता और कुर्सी की भूख तथा खोखले नारों की यह तस्वीर है युग देवता में भी यह विद्रूप कथा है श्री चन्द्र का एक चर्चित उपन्यास 'हजार घोड़ों का सवार' है जिस पर इन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार मिला है पाँव के आन तल में महानगरीय जीवन के टूटते मूल्य है गाथन भाषा में मनोवृत्तियों का चित्रण है

श्री पान नारिल्ल का पहला उपन्यास 'प्यासा स्वर्ण हिरन' में लगभग व्यंजित करता है कि प्रणय के क्षेत्र में अतृप्त रह जाने का भाग्य ही आदमी का इस दुनिया में मिलता है इसके पश्चात् 'निन्दिया पुकारे' 'प्रीति पुरुष कुम्भा', 'साक्षी है शिप्रा' और 'शाह और शिल्पी' प्रकाशित हुए हैं श्री पान भारिल्ल कवि तथा भावुक है और यह भावुकता इनके उपन्यासों में बराबर छायी रही परिणामत उपन्यासों के अनिवार्य तत्वों की उपेक्षा होती रही और सफल कृतियां ये नहीं बन सकी कथा, विन्यास की तर्क सगंता की अपेक्षा भावुक विवेचन होता गया है

श्री सुमेरसिंह दईया के उपन्यास 'नाग उठा इन्सान' और 'चम्बल के किनारे' काली सुरंग तथा श्री करणीदान बारहठ का 'कसाई का धागा' प्रकाशित है इसमें मध्य वित्त वर्ग की समस्याओं को उठाया गया है श्री शचीन्द्र उपाध्याय के उपन्यासों के नाम हैं– मिट्टी का सिन्दूर कावेरी, ठुकराए हुए लोग जलभार और आंगन की सीमाएं श्री शचीन्द्र ने आम आदमी का जीवन चित्रित किया है लेकिन उपन्यासों में मन्त्रबोध जैसी विशिष्टता दृष्टिगत नहीं होती

डॉ शान्ति भारद्वाज राकेश का उपन्यास 'सूखारा' राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत है यह उपन्यास भावुकता प्रधान तथा सफल उपन्यास कृति है श्री किशन शर्मा का एक उपन्यास तट की धार प्रकाशित है

डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का उपन्यास रीछ एक यथार्थवादी उपन्यास है यह एक कथाप्रधान उपन्यास है कथा विन्यास का कौशल तो रीछ में बराबर मिलता है डॉ उपाध्याय ने अपने मूल्यों तथा स्थापनाओं को रीछ के माध्यम से रूप दिया है वामपंथी उपन्यासकार की स्पष्ट विचारधारा उपन्यास

मे बोलती है अतिरंजना, भावुकता, नैतिक आग्रह, समाज के जीवन की गहरी जानकारी व सूक्ष्म दृष्टि इस उपन्यास मे है पक्षधर डॉ उपाध्याय को प्रतिष्ठित करने वाला दूसरा उपन्यास है डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का एक उपन्यास जाग मछन्दर गोरख आया (सन् 1983) सद्य प्रकाशित है इस उपन्यास मे भी डॉ उपाध्याय ने नाथ पंथी गोरख के माध्यम से अनेक विकृतियो का सफल उद्घाटन किया है डॉ उपाध्याय ने जीवनानुभवो को लेकर परम्परित प्रकार से उपन्यास लिखा है

नन्दकिशोर आचार्य का उपन्यास तथागत (1966 ई०) मे बुद्ध के विचारो तथा उनके जीवन का ब्योरा है इसमे उनका चिन्तक रूप बराबर दृष्टिगत होता है

पानू खोलिया के उपन्यास जो अपने थे, जीव हंस की रात, टूटे हुए सूर्य बिम्ब और सत्तर पार के शिखर आदि है पानू खोलिया का उपन्यास सत्तर पार के शिखर राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार से पुरस्कृत है अन्तर्द्वन्द्व, कथा विन्यास, भाव सबलता तथा औत्सुक्यता उपन्यास मे है और इसे जीवन्तता देते हैं मध्यवर्गीय जीवन की विडम्बनाओ व विसगतियो का सफल चित्रण है रिक्त हुए आदमी की कथा व दाम्पत्य जीवन की उलझनो का यह दस्तावेज है

श्री मणिमधुकर आज बहुचर्चित उपन्यासकार है इनके प्रमुख उपन्यास सफेद मेमने (प्रका 1971) मे राजस्थान के पश्चिम क्षेत्र के रेगिस्तान के एक गाव की जिन्दगी का चित्रण है पत्तो की बिरादरी (सन् 1980) पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्र के लोगो की मानसिकता अकाल और उसके नाम पर होने वाले घपलो तथा गाव की दयनीय जिन्दगी को उजागर करता है श्री मणि म लेखन क्षमता है और उसे उन्होने बराबर उजागर किया है

श्री शरद देवड़ा का 'टूटती इकाइया' मे प्रेम का त्रिकोण है एक स्त्री और दो पुरुष या दो स्त्री और एक पुरुष का यह त्रिकोण अनेक उपन्यासो व कथाओ का आधार बनता है और इन उपन्यासो मे तो है ही श्री सत्येन्द्र पारीक ने नारी की विषम स्थिति का चित्रण एक और दायरा मे किया है इसमे सामाजिक खोखलेपन को भी उजागर किया गया है

सुमेरसिंह दईया के आधी के अवशेष मे मनोग्रन्थियो का प्रस्तुतीकरण है डॉ नारायणदत्त श्रीमाली की 'एक डाल रजनीगधा की' मे उच्च वर्ग की विलासिता और काम कुण्ठाओ का चित्रण है

मन्नू भंडारी का उपन्यास ग्रापका बंटी (1971 ई) हिन्दी का महत्वपूर्ण व पति पत्नी की ग्रापसी टकराहट व बच्चे की उपेक्षा का समस्यामूलक उपन्यास ह उपन्यास मे बच्चे के बारे म कथा प्रस्तुत है सूक्ष्म मन्त दृष्टि सहृदयता, विश्वासमयता ग्रौर सम्प्रेषण की सफलता इस उपन्यास म है जो इस महत्ता प्रदान करते है दूसरी कृति महाभोज (1979 ई) राजनीति के बेबुनियादी ग्राचरणा को प्रस्तुत करती ह यह भी एक उत्कृष्ट कृति है

लक्ष्मीकान्त शर्मा न 'नव अंकुर' ग्रौर 'चटकती कलियां उभरते घाट' म नई चेतना को जाग्रत करने की बात कही ह य विचारोत्तेजक उपन्यास ह

श्री जनार्दनराय नागर न शकराचाय के जीवन ग्रौर उनके दशन का ग्राधार बना कर 'शकराचाय' के नाम स वृहदाकार उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया है इस महत्वाकाक्षी उपन्यास का ग्रभी एक खड प्रकाशित हुग्रा है उपन्यास के इस भाग म कथा विस्तार, दार्शनिकता व भावुकता ग्रधिक है इनके पहले के उपन्यास ह—कीचड का कमल व मातभूमि

प्रो घनश्याम शलभ के उपन्यास– ग्रधूरी चादनी उजली छाया, ग्रग्निकन की पखुडियां फौलाद की मोमबत्ती म कवित्व तथा भावुकता छायी हुई है परिणामत कृत्रिमता ग्रा जाती ह प्रौढ लेखन यहा दृष्टिगत होता है

श्री शुभू पटवा क 'उस दिन' म पू जीवादी व्यवस्था के प्रति ग्राक्रोश है ग्रौर वग सघष की बात है करणीदान बारहठ के कुहरा ग्रौर किरणें मे एक शिक्षक की मानसिकता तथा सघषशील जीवन की कथा है कमर मेवाडी ने 'वह एक' मे पारस्परिक प्रतिस्पर्धा को चित्रित किया है प्रकाश माथुरी का कुग्रारी सलीब, उल्लेखनीय कृति ह

श्री शरद देवडा का कार्नेल स्ट्रीट के मसीहा एक बहुचर्चित उपन्यास है इसमे युवा पीढी की मानसिकता को प्रस्तुत किया गया है उपन्यास म सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परिस्थितियो का सफल चित्रण किया है

इनके ग्रतिरिक्त श्री उमेश शास्त्री मधु न माधवी ताल ग्राकाश पील एल, डॉ प्रेम भटनागर श्रात जीवन वशीलाल यादव टूटा तारा, प्रहलाद शर्मा बालू की परते, प्रेमचन्द गोस्वामी सुबह का भूला, राधाशरण जोशी उलझन, हेतु भारद्वाज का बनती बिगडती लकीरें, डा पुरुषोत्तम ग्रासोपा का पप्पू ग्रादि

उल्लेखनीय है पप्पू मनोवैज्ञानिक शैली युक्त चर्चित कृति है श्री हबीब कैफी का एक चर्चित उपन्यास है—अनायक इनकी विशिष्ट शैली व अभिव्यक्ति कौशल है

श्री पुरुषोत्तम गोयल का उपन्यास और सूरज ढल गया है युवा कथाकार श्री प्रफुल्ल प्रभाकर का उपन्यास गलत सन्दर्भ (1980 ई) में आयातीत आधुनिकता और भारतीय मानसिकता का संघर्ष है समाज के द्वन्द्वात्मक रिश्तों को उजागर किया गया है राजेन्द्र भटनागर का 'एक अंतहीन युद्ध' विशेष प्रभावित नहीं करता, कथा विस्तार जरूर है प्रमोद शुक्ल के सेवामीटर व प्रोफेसर पुराण व्यंग प्रधान हैं डॉ राजानन्द का कौन वह' में मध्य वित्त वर्गीय जीवन की झांकी है

राजस्थान के हिन्दी उपन्यासकारों का प्रदेय चाहे नगण्य नहीं हो फिर भी उपलब्धि का देखते हुए बहुत समृद्ध नहीं है

कहानी

राजस्थान में लोक कथा तथा बात साहित्य की एक सुदीर्घ परम्परा रही है लेकिन आधुनिक हिन्दी कहानी की प्रथम उपलब्धि श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी रचित 'उसने कहा था' (प्रकाशन सन् 1915) है वस्तुतः यह हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में अग्रणी है इस एक कहानी ने श्री गुलेरी को अमर कथाकार बना दिया

गुलेरी जी के पश्चात् राजस्थान के सर्वाधिक समर्थ कथाकार है—रांगेय राघव रांगेय राघव की कहानियों में प्रगतिशील चिंतन व लेखकीय स्वातन्त्र्य पर बल दिया गया है रांगेय राघव का कथा लेखन विपुल मात्रा में (लगभग 200 कहानियाँ) है रांगेय राघव की सर्वाधिक चर्चित व प्रशंसित कहानी 'गदल' है जिसमें नाटकीय कथानक व मानवीय संवेदना की सूक्ष्म अभिव्यक्ति है

राजस्थान के कहानी साहित्य की चर्चा के लिए प्रकाशित कहानियाँ ही आधार बन सकती है और वह भी कहानी संकलनों के आधार पर ही चर्चा की जा सकती है क्योंकि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रत्येक कहानी या कहानीकार का विवेचन न तो संभव है और न प्रासंगिक ही इससे अनावश्यक विस्तार की संभावना भी है व्यावसायिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त राजस्थान से प्रकाशित मधुमती, मधुमाधवी, लहर, सम्बोधन आदि पत्रिकाओं में समय समय पर कहानियाँ प्रकाशित होती रहती है इनके अतिरिक्त कहानियाँ के

सम्पादित प्रकाशित सकलन भी है यथा राजस्थान के कहानीकार भाग 1 (स डॉ रामचरण महेन्द्र तथा श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र) ये कथारूप (स चन्द्र) रेखाए (स कृष्ण जन सेवी) जगलपुरी का हेड मास्टर (स चौधरी मानसिंह) प्रस्थिति (स नान भारिल्ल व प्रेम सक्सेना) हम तुम और वह (स जगदीश माथुर कमल) एक टुकडा आकाश (प्रफुल्ल प्रभाकर) राजस्थान क कहानीकार भाग 2 (डॉ आलमशाह खान) आदि जो विवेचन मे सहायक हो सकते ह

गुलेरी जी तथा रागेय राघव के पश्चात् स्वगवासी कहानीकारा म ओकारनाथ दिनकर व शभूदयाल सक्सेना प्रमुख हैं श्री ओकारनाथ दिनकर की कहानिया नाटकीयता भावुकता पूर्ण तथा आदशवादी है दिनकर की प्रमुख कहानिया समस्या और समाधान अपने अपने दायरे, साझ का सगीन और बारात लौट गयी आदि विष्णु अम्बालाल जोशी के आचाय कालक और मजदूरिन कवि या स्वप्न गुमटी वाला और पगली कथा सग्रह हैं ये भी भावुकता पूर्ण आदशवादी लेखन को अपनाये हुए ह कहानी का कथ्य व शली पुराने ढग की है

श्री शम्भूदयाल सक्सना की कथा कृतिया लगभग 5–6 ह कहानिया की विषय वस्तु समाज परिवार की है चरित्र मे आत्म सघष का कमी है भावुकता व आदश की बाते मिलती ह भगिनी का भाग्य, धूपछाह, मानवता का पुजारी, एश्वय का त्याग आदि सकलनो के शीपक ही कहानियो की जान कारी दे देत है डा हेतु भारद्वाज इन लखका को 'प्रसाद स्कूल' का कहानी कार मानते हैं श्री सक्सेना की अधिकतर आदशवादी व भावुकता पूर्ण कहानिया हैं कहानी के क्षेत्र म एक उल्लेखनीय नाम श्री जनादनराय नागर का ह प्रेमचन्द की शिष्य परम्परा म श्री नागर की चर्चा की जाती है इनकी कहानिया की शली और विषय वस्तु की अलग पहचान ह जनादनराय नागर की कहानियो के दो सकलन जनादन की कहानिया शीपक से प्रकाशित हैं अधिकतर कहानियो म आदश की परिकल्पना है और राष्ट्रीय भावना प्रधान है

कहानी क्षेत्र म भी यादवेन्द्र शमा चन्द्र सर्वाधिक परिचित नाम है उनके 8–10 कथा सग्रह प्रकाशित है कहानिया मे विषय की विविधता है तो रोच कता भी है राजस्थान के जन जीवन को उजागर चन्द्र की कहानिया करती है चन्द्र की कहानियो पर मुख्य आक्षेप पात्रो म अन्तद्वन्द्व की कमी, नुसखेबाजी, कृत्रिम स्थितिया का निर्माण और अनुभूति की प्रामाणिकता को लेकर है

लेकिन कुछ भी हो आज श्री यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र हिन्दी साहित्य का जाना पहचाना नाम है तथा पाठक इनकी प्रशंसा ही करते है

श्री परदेशी ने लगभग 350 कहानिया लिखी है तथा 100 क लगभग अनुवाद की ह श्री परदेशी मनोरजक कथानक दन का प्रयास करते है तथा ऐतिहासिक पात्रो का लेकर उत्सुकता पैदा करते ह लोकप्रिय कथाकार हैं

श्री सुमरसिंह दईया क सकलन दो भाई प्यास की प्यास है इनकी कहानियो के उद्देश्य पर डा नवलकिशोर प्रचारात्मकता का आरोप लगाते है जो अधिकतर कहानिया म मिलता ह दलित एव शोषित वग का चित्रण कहानिया म मिलता ह मा कला का पुरस्कार, ममता के आसू मार्मिक कहानिया हैं

मन्नू भण्डारी हिन्दी के शीर्षस्थ कहानीकारों मे है मूल्यो के परिवर्तन से आय मधय का तथा अपने परिवेश को ईमानदारी के साथ मन्नू भण्डारी ने कहानिया मे उजागर किया है अन्तर्द्वन्द्व भाव सबलता सफल अभिव्यक्ति कहानियो की विशेषताए हैं अकेली क्षय, नशा यही सच ह आदि चर्चित कहानिया ह शचीन्द्र उपाध्याय के कहानी सकलन कापती सिन्दूर रेखाए आदि प्रकाशित ह य प्रगतिशील परम्परा क रचनाकार हैं इनकी कहानिया एक विशेष दृष्टि लिए हुए है जगदीश बोरा का कहानी सकलन इसकी पर खुद नाम मे 12 कहानिया ह जो जीवनानुभव युक्त है डॉ असलमशाह की कहानिया के दो सकलन प्रकाशित ह परायी प्यास का सफर व निराम की मोत एव ग्रौर मौत, अनार आदि डा खान की चर्चित कहानिया हैं डा खान की कहानियो के पात्र मध्य वर्गीय और निम्न वर्गीय क्षत्र क हैं तथा अपनी जिन्दगी का सफर पूरा करते हैं भाषा शैली उनकी अपनी अलग ही पहचान स्थापित करती है

डा रणजीत की कहानियो का सकलन मर्म लोहा ठडे हाथ प्रकाशित है इसम कहानीकार वचारिक आग्रह प्रबल है कहानिया राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट करती है

प्रेमचन्द गोस्वामी की कहानियों मे गम्भीरता है लेकिन सस्ती भावुकता भी ह एक वृत्त और मुस्कराहट कल की प्रमुख कहानी सकलन है धर्मेश शर्मा का कहानी सकलन मेरे शहर क लोग है इनकी कहानियो म आस पास

वे निरार बिम्बा का प्रकटीकरण है और भिप म नवीनता नहीं है श्री स्वयं प्रकाश की कहानिया म जीवन, चितन व मृजन के प्रति आस्था झलकती है रचना म ताजगी, तेवर व व्यग्य ह और भाषा नराशी हुइ है कहानी म निजी अनुभूतिया ह मुख्य कहानी सग्रह ह मासा और मा", सूरज कब निकलगा, आसमा वसे वस

शुभू पटवा का कहानी संकलन "नतरज का प्यादा, मम्मी एसी कैसी थी की कहानिया उनकी निरसिन रचना दृष्टि को प्रस्तुत करती है डॉ न्याकृष्ण विजय की कहानियां आदर्शवादी भावुकतापूर्ण ह जीवन का स्पर्श मात्र मिलता है मनोहर वमा की कहानिया म गली की अपनी विशिष्टता है ता कथ्य प्रस्तुतीकरण की गभीरता म है पारिवारिक सामाजिक जीवन से सम्बद्ध इनकी कहानिया ह घाट का घाट, गानी साहिबा की शादी, पासा पलट गया आदि म व्यग्य प्रधान है

श्री ईश्वर चन्दर क कहानी सग्रलन न मरन का दुख आतर, अन्दर का खोखापन, कसम कुरान की आदि है श्री ईश्वर चन्दर के कहानिया के पात्र मध्यम वग स आय ह मध्यवर्गीय जीवन की घुटन, तनाव को य प्रकट करत हैं

राम जसवान गजानन्द प्रसाद आत्रेय, मणिमधुकर नवलनालाल व्यास, कमर मेवाडी चन्द्रकाता करोड क्षमा चतुर्वेदी, करनी रावट्स पुष्पलता कश्यप, श्रीमती पावती जोशी आदि की कहानिया ग्राम ग्राम्मी व सामाजिक परिवेश म जुडी हुई है मणिमधुकर न तजी स अपना स्थान बना लिया है उनकी कहानियां पसन्द की जाती है कहानिया मानव सम्बन्धा क अन्तर्विरोधा को प्रकट करती ह व सुख दुख की साक्षीदार ह परिवेश को प्रस्तुत करन की कला मणि मधुकर म है सुदमान, भरतमुनि क बाद बल, बारहमिया आदि उनकी चर्चित कहानिया ह मणिमधुकर क पास अनुभव का विस्तृत ससार है तो कहन की विशिष्ट शैली भी

हेतु भारद्वाज का तीन कमरा का मकान, चीफ साहब आ रहे हैं तीसमार कथा सकलन प्रकाशित है सामाजिक अन्तर्विरोध को प्रस्तुत करने तथा जीवन स जुडे हुए सवाला का उत्तर दन म इनकी कहानिया सहायक है इनकी कहानिया म मध्यम वग का आम आदमी बोलता है श्री कमर मेवाडी क कहानी सकलन रोशनी की तलाश व लाशा का जगल है जिसम आम आदमी क उसकी मजबूरिया क सजीव चित्र ह

पानू खोलिया ने गंभीर तथा महत्वपूर्ण कहानियों के साथ चालू कहानियाँ भी लिखी हैं। ऊध इनकी चर्चित प्रशंसित कहानी है। सामाजिक परिवेश की कहानियों में प्रस्तुत किया है। 'अश अश दश' हसन जमाल की युग परिवेश की चर्चित कहानियाँ हैं। श्रीमती पावती जोशी का वह गुलाब, हरदर्शन सहगल का टेढ़े मुँह वाला दिन, क्षमा चतुर्वेदी का सुबह दूबन से पहले कहानी संकलन उल्लेखनीय है।

यों गिनाने में तो बहुत सारे नाम हैं जिनकी एकाधिक कहानियाँ प्रकाशित हैं लेकिन जब हम यथा संसार का विश्लेषण करते हैं तो स्पष्ट होता है कि राजस्थान के अनेक कहानीकार ऐसे हैं जिन्होंने अपनी पहचान अखिल भारतीय स्तर पर बना ली है। गुलेरी और रांगेय राघव के अलावा आज चर्चित नामों में सर्वश्री जनार्दनराय नागर, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, सुमरसिंह दईया, मणिमधुकर, डा. आलमशाह खान, डा. हेतु भारद्वाज, स्वयंप्रकाश, पानू खोलिया, कमर मेवाड़ी आदि प्रमुख हैं। राजस्थान का कहानी लेखन अपने परिवेश की गंध लिए हुए आम आदमी के संघर्ष व संत्रास को अभिव्यक्त करता है तथा मानव मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध है।

गद्य काव्य

काव्य गुणों से युक्त गद्य को गद्य काव्य कहा गया है। गद्य काव्य को अलग विधा के रूप में आजकल देखा जाने लगा है लेकिन गद्य काव्य भावात्मक ललित निबंध तथा अनुकाल कविता के मध्य की स्थिति प्रतीत होती है। डॉ. रामचरण महेन्द्र राजस्थान के गद्य काव्यकार (संकलन) की प्रस्तावना में लिखते हैं कि गद्य-काव्यकार भी मूलतः कवि होता है पर वह छन्द पिंगल इत्यादि के कृत्रिम नियंत्रण में न रह कर उन्मुक्त शैली में हृदयगत अनुभूतियों को प्रकट करता है। इस प्रकार गद्य काव्य भावात्मक अभिव्यक्ति है जो कोमल वाक्यों की धाराओं में प्रवाहित होता है। हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रचुर कल्पना व रसाधारित गद्यात्मक रूप गद्य काव्य के अंतर्गत आता है। स्पष्टतः इसमें भावपक्ष की प्रधानता है। एक प्रकार से यह गद्य पद्य का समन्वित रूप है।

राजस्थान में इस प्रकार के गद्यकाव्य का सृजन भी प्रचुरता से हुआ है। राजस्थान के आधुनिक हिन्दी गद्य काव्य का प्रारंभ श्री हरिभाऊ उपाध्याय से माना जा सकता है। श्री उपाध्याय जी के अनेक गद्यकाव्य 'त्यागभूमि' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। गांधीवादी श्री हरिभाऊ उपाध्याय के गद्य गीत

भाव प्रधान व दार्शनिकता युक्त है श्री भवरमल सिंघी की रचनाएं माधुरी, जागरण, हंस आदि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं म प्रकाशित होती रही है इनका 'वेदना' (प्रकाशन 1937) प्रथम गद्यकाव्य संग्रह है दार्शनिकता इनके गद्य गीतो म भी नभिन है

गद्यकाव्य पर छायावादी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है रहस्यमय अनात सत्ता से भावात्मक सम्बन्ध, अभिव्यक्ति अनेक रूपता मे असीम चेतना की व्यापकता आदि प्रसंग गद्यगीतो म मिलते है

गद्यकाव्य के क्षेत्र म सर्वाधिक चर्चित व महत्वपूर्ण नाम श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया का है इन्हान गद्यकाव्य की दिशा ही बदल दी नैतिक प्रेम सौन्दर्य व प्रकृति के रम्य चित्रण इनके गद्यकाव्य की विशिष्टता है इनके गीतों म प्रेम की पुनक सरसता कलात्मकता सगीतात्मकता और उदात्त भाव चयन है श्रीमती डालमिया के अनेक गद्यगीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित हुए है इनके गद्य काव्य सग्रह है-मौक्तिकमाल, शारदीया, दुपहरिया के फूल, वशीरव उन्मन स्पन्दन चिंतन आदि विरह और वदना, प्रम और मिलन के इन गीतो म प्रतीक योजना लाक्षणिकता व शिल्प सौष्ठव प्रशसनीय है

वेदान्त दशन से प्रभावित शकुन्तला कुमारी रेणु का गद्य काव्य सकलन 'उन्मुक्ति' प्रकाशित है सीधे, सच्चे व सरल भावोद्गार रेणु के गद्यकाव्य म है

श्री शम्भूदयाल सक्सेना की समथ लेखनी गद्य काव्य म भी चली और उनके स्फुट गद्यगीत पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित है श्री रामसिंह तथा श्री सूयकरण पारीक कृत गद्य काव्य सग्रह 'मधमाला' प्रकाशित हुआ है इसका पद लालित्य विशिष्ट है

श्री विष्णु अम्बालाल जोशी के गद्य गीतो का एक सकलन सीधी रेखाए प्रकाशित है विष्णु दा की अनेक रचनाए विभिन्न पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित है इनकी भाव सबलता उल्लेखनीय है

श्री देवीलाल सामर के गद्य गीतो में भारतीय संस्कृति व अध्यात्म की गूज है मर्मस्पर्शी अभिव्यजना गद्यगीतो म उपलब्ध है लेकिन श्री सामरजी का कोई सकलन देखने म नहीं आया है

श्री जनार्दनराय नागर के गद्यगीतो का विषय आध्यात्मक प्रेम, राष्ट्रीयता, राजनीतिक जागरण, असीम सत्ता आदि रहा है इनका एक गद्यकाव्य सकलन 'एक शान्त आलोक में प्रसन्न' राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित है श्री नागर गद्यकाव्य क्षेत्र मे विशिष्ट पहचान रखते हैं ब्रिजलाल बियाणी का मार्मिक गद्यकाव्य है कल्पना कानन

श्री नरेन्द्र भानावत के गद्यगीता मे जन दर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है आध्यात्मिकता इन गीता मे भी अधिक है डा भानावत ने सामाजिक वैषम्य को लेकर भी गद्यगीत लिखे हैं जा विभिन्न पत्र पत्रिकाओ म प्रकाशित है

श्री अमरसिंह का गद्यकाव्य संकलन तुतली वाणी स्वप्न शर्वरि, दिवाभास प्रकाशित है इनम सामाजिक वैषम्य, अदृश्य व जागरण आदि के गद्यगीत है भाषा व शब्द चयन प्रभावोत्पादक है

डा दयाकृष्ण विजय के गद्यगीत भावपूर्ण व प्रभावोत्पादक है भारतीय दर्शन व सस्कृति निरूपण इनके काव्य मे मिलता है

डा त्रिभुवन चतुर्वेदी के गद्यगीतो मे प्रकृति का सौन्दर्य तो है ही साथ ही मानव के दुख दद की व्यथा भी है सामाजिक व परिवेश को भी इन्होंने गद्य गीतो मे चित्रित किया है इनके अतिरिक्त सर्वश्री भानचन्द्र गोस्वामी प्रखर, लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, राधश्याम कौशिक ब्रजेश चचल, किशन शर्मा, राजेन्द्र सक्सेना, दुर्गादत्त शर्मा, मगल सक्सेना, कमलाकर, मनोहर वर्मा, बशीलाल यादव, उमानन्द चतुर्वेदी, सत्येन्द्र पारीक, डा रामचरण महेन्द्र आदि की रचनाए भी समय समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रही है लेकिन अब गद्यकाव्य का सजन दृष्टिगत नही होता है राजस्थान के गद्यकाव्य की शीर्ष पक्ति म श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमिया श्री जनार्दनराय नागर श्री विष्णु अम्बालाल जोशी और श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नाम लिए जा सकत हैं

नाटक

नाट्यकर्म व नाट्य लेखन दो अलग अलग रचना प्रक्रिया है राजस्थान मे नाटका का अपना इतिहास है वतमान मे नाट्य लेखन के सम्बन्ध में विचार करें तो विदित होता है कि राजस्थान मे आधुनिक नाटक साहित्य कविता और कथा विधा की अपेक्षा कम परिमाण म उपलब्ध है नाटक लेखन

के क्षेत्र मे गिन गिनाये नाम लिए जा सकते हैं और प्रकाशित नाटको की गणना अगुलिया पर की जा सकती है जहा तक विस्तार से विवेचन का सम्बन्ध है प्रवृत्ति, शिल्प रूप, विषयवस्तु आदि को लेकर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं यहा यह चर्चा अप्रासगिक है

आधुनिक हिन्दी नाटक साहित्य पर विचार करें राजस्थान के नाटककारो की पुरानी पीढी म श्री शम्भूदयाल सक्सना, श्री ओकारनाथ दिनकर तथा श्री देवीलाल सामर प्रमुख हैं शम्भूदयाल सक्सेना के नाटको म आदर्शों, सास्कृतिक मूल्यो और नवीन सामाजिक राजनीतिक पुनर्जागरण के प्रति प्रेरणा है बापू न कहा था, नेहरू के बाद, विजया और वारूणी आदि म राजनीतिक चेतना की बात है तो सास्कृतिक नव निर्माण तथा आदर्शों के प्रति मोह चीवर धारिणी ग्राम माग, साधना पथ, मदरानी सग्रह, पचवटी, विद्यापीठ आदि म है सास्कृतिक व राजनीतिक मूल्य लिए ये नाटक हैं जिनम नाटककार नाटक के तत्वो के प्रति भी सचेत है

श्री ओकारनाथ दिनकर का भी अतीतकालीन आदर्शों के प्रति तीव्र मोह रहा है तथा यह उनके सभी नाटको म प्रकटा है राजस्थान के परिवेश का सफलता के साथ चित्रण ओकारनाथजी के नाटको म प्राप्त है हिन्दी नाटय लेखन के क्षेत्र मे दिनकर का योगदान महत्वपूर्ण है दिनकर के नाटक मुञ्जदेव, भगवान बुद्धदेव पवनजय, विग्रहराज, विशालदेव, धारेश्वर भोज, मयूर फिर नाच उठे, जोहर ज्योति आदि प्रमुख हैं

देवीलाल सामर राजस्थान के लोकनाटको व लोक कलाकारो के प्रेरक रहे है सामर जी स्वय नाटक लिखते थे और मचन कराते थे राजस्थान म नाटकों व लोककलाओ की महत्ता स्थापित करन म देवीलाल सामर का योगदान सराहनीय व महत्वपूर्ण है कठपुतली नाटक के क्षेत्र मे अनेक प्रयोग सामरजी ने किए हैं दलित कन्या महान बलिदान राजस्थान का भीष्म आदि महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं नाटको के कथानक महत्वपूर्ण व प्रेरक हैं सधियो आदि का उपयुक्त प्रयोग है नृत्य नाटिकाओ के सफल प्रयोग भी हैं भारतीय लोककला मडल की स्थापना सामरजी की विशिष्ट देन है श्री देवीलाल सामर ने राजस्थान का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया उनके नाटक रगमच की दृष्टि से अनुकूल होते थे नाटक के आवश्यक तत्व, सधियो आदि अनिवार्य गुण श्री सामर के नाटको म उपलब्ध है लोककथाओ व लोकगीतो पर आधारित अनेक नाटक इन्होंने लिखे और मचित कराये ये एक समर्पित

कलाकार, नाट्यकर्मी, निर्देशक थे श्री जनार्दनराय नागर के नाटकों मे सांस्कृतिक व आदर्श मूल्य हैं आचार्य चाणक्य, पतित का स्वर्ग, ऊदा हत्यारा आदि इनकी प्रमुख नाट्य कृतियां हैं

डॉ सरनामसिंह शर्मा अरुण कृत साधना स्वर्ग पतन, तपस्विनी आदि एकांकी संग्रह हैं सुधीन्द्र जी का भी 'राम रहमान' एकांकी संग्रह प्रकाशित है जिसमे छ एकांकी है ज्वाला और ज्योति सामाजिक विचारधारा का प्रतीक है डॉ रामगोपाल शर्मा दिनेश के धरती का देवता, सोमनाथ, विजय पथ, शांति के प्रहरी, द्रोण का शिल्प आदि नाटक एकांकी प्रसिद्ध हैं नाटकों, एकांकियों मे युगीन चेतना के स्वर है यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र के 'हम सब एक हैं' राष्ट्रीय चेतना युक्त रंगमंचीय एकांकी है और मान का दावेदार रेडियो रूपकों का संग्रह है ताश का घर श्री चन्द्र की एक चर्चित नाट्य कृति है

भारत की सामयिक समस्याओं व आदर्शवादी रूझान को लेकर लिखे गये नाटक एकांकी हैं सतरंगिणी (गोविन्दलाल माथुर) अमर आत्माए, संस्कृति धरोहर सिंह सपूत, इन्सानियत जिन्दाबाद, सिंह शावक (डॉ रामचरण महेन्द्र) धरती जागी, अमर सेनानी, (डॉ चन्द्रशेखर भट्ट) पुष्पांजलि, दहेज (विट्ठलदास कोठारी) विष से अमृत की ओर (डॉ नरेन्द्र भानावत) एकाकिनी (डॉ दयाकृष्ण विजय) आदि रेडियो नाटक की डारें का पीजरा महावीर सिंघल कृत है

सातवें और आठवें दशक के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं—हमीदुल्ला, मणि मधुकर, रिजवान जहीर उस्मान, राजेश रेड्डी, उमेश उपाध्याय, शिवराम शर्मा, डॉ राजानन्द, नन्दकिशोर आचार्य, स्वयंप्रकाश बद्रीप्रसाद पचोली आदि इन दशकों का नाटक मूलत प्रतीकात्मक प्रस्तुति का है दरिन्दे एक और युद्ध (हमीदुल्ला) रस गधर्व, खेला पोलमपुर, बुलबुल सराय हे भानमती (मणि मधुकर) नमस्कार आज शुक्रवार है (रिजवान जहीर उस्मान) पेपरवेट, सफाई चालू है (रमेश उपाध्याय) घर कद, फीनिक्स (स्वयं प्रकाश) इन नाटकों म बौद्धिकता हावी है परिणामत एक खास वर्ग तक ही सीमित हो गये मध्यवर्गीय समाज की परिस्थितियो, सन्त्रास, घुटन आदि की अभिव्यक्ति भी मिलती है उलझी आकृतियां, घर बंद, दूसरा पत्र, उत्तर उवशी अपना अपना दर्द (हमीदुल्ला) रस रग बहुरंग (स डॉ राजानन्द) आदि म सामाजिक समस्याएं व मूल्यों की टकराहट है

नुक्कड नाटका की शली भी आठवे दशक मे चर्चित हुई जिनमे रमेश उपाध्याय का हरिजन दहन, शिवराम वर्मा का कुकडूकू, जनता पागल हो गई, विकल्प भवरा भील आदि है श्री मगल सक्सना राजस्थान के नाट्य आन्दोलन म महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं लेकिन उनकी प्रकाशित नाट्य कृति देखन म नही आई है

इस प्रकार हम वतमान म राजस्थान के लब्धप्रतिष्ठ नाटककारो की चर्चा करत है तो श्री हमीदुल्ला, श्री मणिमधुकर श्री शिवराम, श्री रमेश उपाध्याय, श्री आर जेड उस्मान से आग ही नही बढ पात हैं रगमच तथा नाट्य लखन स घनिष्ठ सम्बन्ध होना सिनेमा का प्रभाव तथा एक खास वग तक आज क नाटक का जुडा होना सम्भवत नाटक के सीमित क्षेत्र का कारण हो सकता है साहित्य की यह महत्वपूर्ण प्रवत्ति भी पल्लवित हो इस हतु क्या किया जा सकता ह यह विचारणीय है

निबन्ध आलोचना

राजस्थान म हिन्दी आलोचना की प्रगति विशेष उत्साहवद्ध क नही है आलाचना के क्षेत्र म जो काय हाना चाहिय वह दष्टिगत नहीं होता है आखिर इस स्थिति क क्या कारण हैं या ऐसी निराशा की वात करना अनुचित है

'आलाचना का अपना महत्व है आलोचना पर द्वितीय कोटि का काय दूसरी थाली से ग्रहण मौलिकताहीन, मजदूरी का साहित्य आदि के अगभीर आक्षेप लगाये जाते है इस सम्बन्ध मे अपन को चढाटीका लगाने की बात भी कही जाती ह लेकिन गभीरता से विचार करें ता ये सभी आक्षेप बेमानी हैं आलाचना की महता स्वीकारनी होगी आलोचक का सजनात्मक मौलिक काय है वह कसौटी पर कस कर किसी रचना का मूल्याकन करता है और जब आलोचना से रचनाकार असहमत होता है तब वह अपनी रचना की श्रेष्ठता के सदम मे आलोचक की प्रति आलाचना करन लग जाता है इसलिए आलोचना लेखन का विशिष्ट काय करन का साहस बहुत कम रचनाकार कर पाते हैं और जा भी यह आलाचना लेखन काय करते हैं उनम स अधिकतर आलोचक रचना की प्रशसा ही नहीं करते हैं अपितु उस रचना को श्रेष्ठतम घोषित कर देत हैं यह स्थिति अधिक चितनीय हाती है

रचना का मूल्यांकन उसमें निहित मूल्यों, कथ्य, शैली भावबोध व युग बोध को लेकर करना चाहिए न कि रचनाकार के व्यक्तित्व के आधार पर कृतिकार की अपेक्षा कृति का सम्यक मूल्यांकन होना चाहिये आलोचना का आधार कृति में उपलब्ध तत्व, मूल्यों की प्रामाणिकता आदि हो सकता है

राजस्थान म साहित्यिक आलोचना का प्रारम्भ रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख' से माना जा सकता है शिलीमुख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समकालीन थे और सामयिक साहित्यिक आलोचना के समर्थक थे शिलीमुख साहित्य में जीवनादर्श को सहज होकर ग्रहण के समर्थक हैं उन्होंने आरोपित आदर्शों का हमेशा विरोध किया है शिलीमुख ने आलोचना के क्षेत्र म निर्भिकता से लेखन किया है प्रेमचन्द, कबीर आदि पर इनकी आलोचनात्मक रचनाएं सर्वविदित है कला और सौन्दर्य और विजयेन्द्र स्नातक द्वारा सम्पादित शिलीमुखी में इनकी आलोचना समीक्षा सबंधी रचनाएं हैं चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने भी निबंध तथा आलोचनात्मक रचनाएं की हैं चन्द्रधर शर्मा गुलेरी व्यक्तित्व एव कृतित्व (स० डॉ प्रकाश आतुर) दृष्टव्य है

शिलिमुख के साथ सूर्यकरण पारीक का नाम भी आलोचना क्षेत्र म महत्वपूर्ण है सूर्यकरण पारीक ने राजस्थानी और हिन्दी दोनो म निबंध तथा आलोचनात्मक रचनाएं प्रस्तुत की हैं राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'सूर्यकरण पारीक निबंधावली' (स डॉ मदन केवलिया) म पारीकजी के विशिष्ट हिन्दी निबंध संग्रहीत है

बहुप्रतिभा सम्पन्न डॉ सुधीन्द्र ने आलोचना क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है हिन्दी कविता का क्रांतियुग मे हिन्दी काव्यधारा का विशिष्ट विवेचन किया है हिन्दी कविता म युगान्तर डा सुधीन्द्र की दूसरी चर्चित आलोचना कृति है

श्री मोहनकृष्ण बोहरा विश्वविद्यालयी आलोचना का प्रारम्भ प्रो नरोत्तम दास स्वामी से मानते है मध्ययुगीन कवियों और लेखकों पर स्वामीजी ने टीका आलोचनाएं लिखी हैं रासो परम्परा और पृथ्वीराज रासो, सूर समीक्षा, कबीरदास, मीरां मन्दाकिनी, वेलि की टीका आदि चर्चित रचनाएं हैं विश्वविद्यालयीय आलोचकों मे डॉ सोमनाथ गुप्त भी है आलोचना के सिद्धांत हिन्दी नाटय साहित्य का इतिहास डॉ गुप्त की महत्वपूर्ण चर्चित कृतियां हैं जो एक विवेचन प्रस्तुत करती है

डा भोलाशंकर व्यास आलोचना क्षेत्र के अधिकारी विद्वान हैं हिन्दीदश रूपक, ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त, भारतीय साहित्य की रूपरेखा आदि इनकी शास्त्रीय ढंग की आलोचना कृतियां हैं

डा कन्हैयालाल सहल की समीक्षांजलि, समीक्षायण, प्रारंभिक आलोचनात्मक कृतियां हैं डा सहल समन्वयवादी आलोचक रहे हैं अनुसंधान और आलोचना डा सहल की चर्चित कृति है डा सहल की कठिनाई यह है कि ये विवेचना मात्र करते हैं निष्कर्षों की बात ही नहीं करते हैं

डा सरनामसिंह शर्मा अरूण ने कबीर कृतित्व एवं सिद्धान्त में कबीर पर विशद प्रकाश डाला है इसी प्रकार डा रामचरण महेन्द्र का रूझान हिन्दी एकांकी नाटकों की आलोचना की ओर अधिक रहा डा महेन्द्र की कृति हिन्दी एकांकी उद्भव और विकास में हिन्दी एकांकियों का विशद सर्वेक्षण है

डा जगदीश शर्मा कनक ने मनोविज्ञान तथा सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टिकोण से आलोचनाएं लिखी हैं कामायनी का प्रतिपाद्य इस दृष्टि से मनन योग्य है इनकी सद्य प्रकाशित कृति साहित्य और कला की पहचान है उसमें आलोचनात्मक निबंध हैं

डा सूर्यप्रसाद दीक्षित ने छायावादी कवियों विशेषत पंत, निराला, प्रसाद, महादेवी पर सामग्री प्रस्तुत की है

डा रामगोपाल शर्मा दिनेश ने आलोचना के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है हिन्दी शिव काव्य, हिन्दी काव्य में नियति, कामायनी का नया अन्वेषण आदि में डा दिनेश ने गम्भीरतापूर्वक सारगर्भित विवेचना प्रस्तुत की है

डा रामानन्द तिवारी भारती नन्दन कवि और दार्शनिक हैं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चिंता तथा दार्शनिकता डा तिवारी की आलोचनात्मक रचनाओं में भी बराबर लक्षित होती है राजनिक पृष्ठभूमि में साहित्य के स्वरूप का सैद्धान्तिक चिंतन है डा तिवारी के लेखन में दोहरापन अधिक मिलता है सत्यं शिवं सुन्दरम्, अभिनव रस मीमांसा आदि डा तिवारी की महत्वपूर्ण कृतियां हैं

मनोवैज्ञानिक आलोचना क्षेत्र में डा देवराज उपाध्याय का विशिष्ट स्थान है रोमान्टिक साहित्य शास्त्र, आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनो-

विज्ञान, रांगेय राघव के उपन्यास मेरी मान्यताएं आदि आपकी महत्वपूर्ण कृतियां हैं जिनमें मनोविश्लेषण, आलोचना सिद्धांत तथा सामग्री उपलब्ध है इसके अतिरिक्त आलोचना वैदुष्य और अनुसंधान, ऐतिहासिक उपन्यास, सापेक्षतावादी आलोचना आदि महत्वपूर्ण कृतियां हैं डा उपाध्याय ने चिंतन में नये आयाम प्रस्तुत किए हैं

प्राचीन भारतीय दर्शन और समाज व्यवस्था का गहन चिंतन तथा युगानुकूल लेखन की बात डॉ रांगेय राघव की कृतियों में भी है डा रांगेय राघव असाधारण प्रतिभा सम्पन्न लेखक थे भारतीय परम्परा और इतिहास, भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका उनकी उल्लेखनीय कृतियां हैं

डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय उन प्रखर आलोचकों में हैं जो भारतीय प्राचीन साहित्य को युगीन परिवेश में वैचारिक आग्रह व द्वन्द्वात्मक विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करते हैं इनकी आलोचना में वैचारिक प्रतिबद्धता अधिक मिलती है

हिन्दी लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान बनाने वाले डॉ नवलकिशोर मानववादी दृष्टिकोण के पक्षधर हैं डा नवलकिशोर की आलोचनाओं में मानववादी स्वर सर्वत्र मिलेगा ये मानववाद को दार्शनिक और साहित्यिक रूपों में विवेचित करते हैं डॉ नवलकिशोर की आलोचनाओं में वैचारिक चिंतन व बौद्धिकता प्रबल हो जाती है कृति के मूल्यांकन में डा नवलकिशोर निर्मम हैं लेखक से लेखन की अधिक चिंता इन्हें बराबर सताती है मानववाद और साहित्य, कृति और संदर्भ, आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता आदि इनकी चर्चित कृतियां हैं डा नवलकिशोर हिन्दी के शीर्ष आलोचकों में हैं

डॉ कृष्णकुमार शर्मा (चर्चित नाम डॉ क के शर्मा) शैली वैज्ञानिक आलोचना के अधिकारी विद्वान हैं डॉ शर्मा ने आलोचना को शैली विज्ञान की दृष्टि से देखा है आलोचना में कथा वस्तु शिल्प आदि को प्रमुखता देने के पक्षधर डॉ शर्मा उसमें मूल्यों की बात को बराबर ध्यान रखते हैं शैली विज्ञान की रूपरेखा सिद्धि और परम्परा, ध्वनिसिद्धांत का काव्यशास्त्रीय सौन्दर्य शास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अध्ययन, शैली वैज्ञानिक आलोचना के प्रतिमान आदि प्रशंसित कृतियां हैं

डा महावीर दाधीच अप्रतिबद्ध आलोचकों मे हैं जो कृति को कृति की दृष्टि से देखते है आधुनिकता और भारतीय परम्परा मे विचारोत्तेजक निबन्ध है अस्तित्ववाद भी चर्चित कृति है

डा नन्दकिशोर आचार्य न बडी तेजी से प्रखर आलोचक म अपना स्थान बना लिया है सहजता सुचिंतित विश्लेषण और आलोच्य विषय के प्रति पूर्ण गम्भीरता और ईमानदारी के आचार्य पक्षधर ह व गम्भीर आलोचनाए लिखन म वे दक्ष ह अज्ञेय की काव्य तितीर्षा एक प्रमुख कृति है

राजस्थान के हिन्दी कवियो पर गम्भीरता स चिन्तन लेखन व विवेचन डा प्रकाश आतुर की कृति राजस्थान की हिन्दी कविता म है डा आतुर कवि है लेकिन साथ ही सफल आलोचक भी उनकी आलोचना दृष्टि काव्य का अन्तजगत है श्री नन्द चतुर्वेदी कवि के साथ साथ आलोचक भी हैं उनका छायावादी कवि तथा समाजवादी चिन्तन आलोचना पर हावी नहीं होता है अपितु वे रचना व अन्तजगत को गम्भीरता स देखत परखत है सृजन के धर्म तथा मूल्यो क प्रति उनका बराबर आग्रह ह श्री सुरेन्द्र उपाध्याय की आलोचना का क्षेत्र यही रहा ह

प्रो घनश्याम शलभ अप्रतिबद्ध आलोचक हैं और कृति के सौंदर्य के पक्षधर वस्तुमुखी तटस्थ लेखन शलभ जी ने किया है सृष्टि की दृष्टि, सवेदना और सौन्दयबोध आदि महत्वपूर्ण कृतिया हैं डा रमाकात शर्मा की एक आलोचना कृति कविताओ के बीच म सद्य प्रकाशित हुई है जिसम शमसेर, मुक्तिबोध नागाजुन आदि महत्वपूर्ण कवियो की कविताओ को समझने व विवेचन करने का प्रयास है इसी प्रकार डा भेरूलाल गग न आज की हिन्दी कहानी पर सफलता पूर्वक लिखा है और उनकी आलोचना कृति प्रकाशित है

अन्त में यह विचारणीय है कि राजस्थान म हिन्दी आलोचना के क्षेत्र म अधिक गम्भीरता से काय अपेक्षित है शिलीमुख, रागेयराघव सूयकरण पारीक को रहने दें तो वतमान म आलोचना क्षेत्र म महत्वपूर्ण चर्चित नाम बहुत कम हैं और ले देकर डा नवलकिशोर डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डा के के शर्मा, नन्दकिशोर आचाय और बस

बाल साहित्य - बाल साहित्य की पहचान बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक के बाद बन सकी है वस्तुत हिन्दी का बाल साहित्य 40 वर्षो से अधिक प्राचीन नही है फिर भी अखिल भारतीय स्तर पर बालको के लिए

बहुत लिखा जा रहा है यहा यह प्रश्न विचारणीय है कि परिमाण की दृष्टि से लिखा जा रहा बाल साहित्य गुणवत्ता की दृष्टि से कसा है ? यह सही है कि बाल साहित्य की दिशा मे राजस्थान मे गिने चुने कुछ ही लेखको के नाम सामने आ सके हैं और इस क्षेत्र मे भी अभी उल्लेखनीय काय करने की आवश्यकता है

बाल साहित्य का तात्पर्य बालको के लिए लिखा गया साहित्य है और बालको मे शिशु और किशोर दोनो वग सम्मिलित है

राजस्थान मे बाल साहित्य के क्षेत्र मे सीमित नाम है श्री शम्भूदयाल सक्सेना की ऋषियो की कहानियां, दवताओ की कहानिया, श्री शकर सहाय सक्सेना की वीरता की कहानिया, डॉ रामचरण महेन्द्र कृत अमर आत्माए किशोर वय के बालको के लिए है मनोहर प्रभाकर के पप्पू के गीत और इन्द्र धनुष प्रकाशित हैं जो शिशु व किशोर वय के लिए उपयुक्त है श्री माडवेन्द्र शर्मा चन्द्र की कृति झूठी शान प्रकाशित है

राजस्थान के बाल साहित्य के क्षेत्र म सर्वाधिक चर्चित नाम है श्री मनोहर वर्मा तथा श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चू डावत का श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चू डावत का लेखन काम मूलत राजस्थानी म है उनकी पुस्तक टावरा री वाता राजस्थानी म है श्री मनोहर वर्मा हिन्दी के प्रख्यात बाल साहित्य के सजक है श्री वर्मा इस क्षेत्र मे निरन्तर सजनरत हैं उनकी चर्चित प्रशसित कृतिया ह—वचन का मोल हम सब एक हैं, बुलक्कड मिनो डॉ चम्पर और मचनू, जीवन निर्माण की कहानिया शरीर के नौ रत्न आदि

श्री हमीदुल्ला न बाल साहित्य के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कृति दी ह—जीनेगे हिम्मत वाले यह पुरस्कृत कृति है तथा बाल सुलभ जिज्ञासा की पूर्ति हतु श्रेष्ठ कहानियां सग्रहीत हैं इनकी अन्य उल्लेखनीय कृति है हरियल तोता इनकी बाल साहित्य की अन्य कृतियां भी प्रकाशित हैं

डा हरीश के नौनिहालो के गीत, उमानन्दन चतुर्वेदी की नन्हे मुन्ने की चम्बल यात्रा, शाता गुप्ता की अद्भुत नगर डॉ पुरुषोत्तम आसोपा कृत भैंस का अडा, पौराणिक गाथाए आदि उल्लेखनीय कृतिया है, मोमू की गर उडन तस्तरी से मदन वैष्णव द्वारा लिखित किशोर वय के बालका हेतु वैज्ञानिक उपन्यास है इसी प्रकार चम्पालाल रांका की कृति मोहन से महात्मा आदि

प्रमुख बाल साहित्य की कृतियां है इस विधा में अन्य कृतिकार हैं—डॉ मनोहर शर्मा, भगवती प्रसाद गौतम, वासुदेव चतुर्वेदी, श्री नंदन चतुर्वेदी आदि

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राजस्थान से बालकों के लिए एक भी पत्रिका प्रकाशित नहीं होती है

हास्य, व्यग्य, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी आदि

हास्य और व्यग्य भी साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधाएं हैं विद्वान हास्य और व्यग्य को एक साथ लेते हैं लेकिन दोनों में स्पष्ट अन्तर है हास्य निर्मल मन का स्वच्छ प्रवाह है और हास्य के द्वारा मन सहज और स्वच्छ होता है हसना और हंसाना सहज नहीं है और आज के इस वैमनस्य और संत्रास के युग में हास्य की आवश्यकता है जो मानव को मानव के समीप रख उसे सहज किए रखता हास्य में सहजता है तो व्यग्य में तीक्ष्णता व्यग्य करना मनुष्य का सहज स्वभाव है लेकिन व्यग्य लेखन बड़ा कठिन कर्म है व्यग्य सदा सोद्देश्य होता है और उपहास के द्वारा ताड़ना देता है उसमें तीव्र कटुता और गंभीर चमत्कार होता है जब कोई बात सहज ढंग से प्रभावित नहीं करती है तब व्यग्य ही वह सबल शस्त्र है जो मर्मभेदी होता है आज इस आर्थिक संत्रास के समय में जब मानव के दुखदर्द व रिश्तों को हृदयहीन जीवन में भुलाया जा रहा है व्यग्य ही सशक्त व धारदार हथियार है जो सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक परिस्थितियों में सही समय पर अचूक प्रहार करता है सबन्धों की सच्चाई और नश्वर का पर्दाफाश व्यग्य की विशिष्टता है टेढ़ी अंगुली से घी निकालना ही इसकी क्षीप्र प्रहार गति है

हास्य और व्यग्य की दृष्टि से राजस्थान ही नहीं अखिल भारतीय स्तर पर बहुत कम काम हुआ है राजस्थान में तो अत्यल्प ही रचना कर्म हुआ है और जो लिखा गया है वह भी हास्य की अपेक्षा व्यग्य अधिक है दोनों को एक ही खाते में डाला जाता रहा है यह सृजन कर्म भी विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में ही अधिक प्रकाशित हुआ है मिश्रीलाल जैन तरंगित हास्य व्यग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय नाम है इनकी चर्चित कृतियां व्यग्य सतसई, चुटीले चुटकुल फुलझड़ियां, हसते मिनिए आदि है

डॉ पुरुषोत्तम आसोपा का सजय उवाच श्री अशोक शुक्ल की प्रोफेसर पुराण, मेरा पैंतीसवा जन्म दिन हड़ताल, हरिकथा महत्वपूर्ण कृतियां हैं मेरा पैंतीसवा जन्म दिन राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत कृति है

बुद्धिप्रकाश पारीक, विश्वनाथ विमलेश आदि के काव्य में हास्य और व्यंग्य का पुट उपलब्ध है इसी तरह श्री लक्ष्मीचन्द चितारा की व्यंग्य की स्फुट रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं

वर्तमान व्यंग्यधारा में श्री मालीराम शर्मा, डा शिवकुमार शर्मा, श्री यशवन्त कोठारी, श्री मदन कुशवाहा, पुरुषोत्तम आसोपा, मनोज शुक्ल, डा मदन केवलिया, धनराज चौधरी, डा प्रेमचन्द गोस्वामी, डा यशगोपाल आदि प्रमुख हैं श्री निरंजननाथ आचार्य एक सशक्त रचनाकार थे उनके व्यंग्य का प्रभाव अपार है राजनीतिक व सामाजिक जीवन की विसंगतियों को उन्होंने उजागर किया है राजनीति की चक्की में उनकी अनेक व्यंग्य रचनाएं मिलती हैं श्री यशवन्त कोठारी की कुर्सी सूत्र, घमघा सूप और हिन्दी की आखिरी किताब, डा मंजुगुप्ता की वेनकाब मत्स्य, श्री जुगमंदिर तायल का किस्सा पांचवे दरवेश का, धनराज चौधरी का गौतम बुद्ध और दुखी आत्मा, डा प्रेमचन्द गोस्वामी का कुत्ते भौंक रहे हैं आदि चर्चित संकलन हैं

दरअसल वर्तमान शताब्दी की इन सशक्त विधाओं में जो कार्य होना चाहिए वह परिलक्षित नहीं होता है उर्दू में लिखा हुआ सहज हास्य और प्रहारक व्यंग्य हिन्दी में विशेषकर राजस्थान के हिन्दी साहित्य में अभी उपलब्ध नहीं है

यही स्थिति साहित्य, इतिहास लेखन संस्मरण, रेखाचित्र जीवनी, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज आदि की है किसी भौतिक वस्तु व्यक्ति या स्थान के सन्दर्भ लेखक का आत्मीयता पूर्ण विवेचन संस्मरण में आयेगा जिसमें स्मृति का महत्व है संस्मरण में रचनाकार की मानसिकता संयुक्त हो जाती है जबकि रेखाचित्र शब्दों का चित्र है शब्दों का ऐसा चित्रण जो किसी व्यक्ति विशेष के बिम्ब को प्रकट कर दे रेखाचित्र में आयगा ये जीवनी से अलग होंगे यात्राओं का ललित गद्यात्मक विवरण यात्रावृत्त में सम्मिलित किया जा सकता है ये सभी विशिष्ट विधाएं हैं इन विविध विधाओं में अनेक रचनाकारों ने समय समय पर रचनाएं की हैं जिनमें प्रमुख हैं श्री शम्भूदयाल सक्सेना, हरिभाऊ उपाध्याय, सूर्यकरण पारीक निरंजननाथ आचार्य झाबरमल्ल शर्मा, देवीलाल सामर, अमरसिंह चतुर्वेदी, राजेन्द्रशंकर भट्ट, जवाहिरलाल जैन, कपूरचन्द कुलिश, सावित्री राका, जगदीश बोरा आदि

श्री झाबरमल्ल शर्मा सुप्रसिद्ध पत्रकार, सम्पादक थे उन्होंने संस्मरण व जीवनी लेखन का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है अमर शहीद श्री गणेश

शकर विद्यार्थी भारतीय देश भक्तों की कारावास की कहानी, राजस्थान और नेहरू परिवार, तिलक गाथा, अरविन्द चरित आदि पंडित जी का उल्लेखनीय कृतियाँ हैं श्री शकर सहाय सक्सेना की महत्वपूर्ण चर्चित प्रशसित कृति पथिक (विजयसिंह पथिक) की जीवनी है श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने युगधर्म व स्वतन्त्रता की ओर कृतियो म सस्मरण ललित निबन्ध व रिपोर्ताज का सम्मिश्रण कर दिया है राजेन्द्रशकर भट्ट की सुभाषचन्द्र बोस महाराणा प्रताप सवाई जयसिंह जीवनिया हैं तो कश्मीर चित्रण शब्द चित्र है कश्मीर चित्रण राज्य अकादमी से पुरस्कृत कृति है जवाहिर जन की दिल्ली म दिल्ली तक यात्रा वस्त है विभिन्न पत्र पत्रिकाओं म विद्वानो के वृत्तान्त सस्मरण रेखाचित्र रिपोर्ताज प्रकाशित होते रहते है और उनके आधार पर विश्लेषण करना कठिन है

लोक साहित्य

साहित्य के साथ लोक विशेषण लगाकर इसका पार्थक्य प्रकट किया गया है लोक साहित्य म मानव हृदय की सरस व सरल अभिव्यक्ति सर्वाधिक पाई जाती है यह लोक चेतना से निर्मित साहित्य है और इसका विकास मानव मन की अन्तर्मुखी प्रवृत्तियो से हुआ है इसमे लोककथा, लोकगीत, लोक नाट्य आदि सम्मिलित है कहा जा सकता है कि यह आत्मा का साहित्य है मौखिक परम्परा म प्रचलित साहित्य लोक साहित्य की परिधि मे आता है

समाज सापेक्ष लोक साहित्य के अध्ययन अनुशीलन, सग्रह व सरक्षण का कार्य भी इन दिनो राजस्थान मे हुआ है तथा विद्वानो ने अपने अध्ययन क्रम म सम्मिलित किया है मुशी देवीप्रसाद कविराजा मुरारीदान, रामकरण आसोपा सूर्यकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी ठाकुर रामसिंह आदि ने लोक साहित्य के क्षेत्र म महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है तथा एक मार्ग प्रशस्त किया है मुशी देवीप्रसाद का इस क्षेत्र मे सकलनात्मक व अध्ययनात्मक कार्य महत्वपूर्ण है इस सकलनात्मक कार्य को अनेक विद्वानो ने जारी रखा

प्रादेशिक लोकगीतो के सकलन का कार्य खेताराम माली, सौभाग्यसिंह शेखावत मदनलाल वैश्य, जगदीश सिंह गहलोत आदि ने किया श्री विश्वेश्वर नाथ रेऊ का लोक साहित्य के अध्ययन की दिशा म महत्वपूर्ण योगदान है उनका सास्कृतिक अध्ययन विश्लेषण परक है राजा भोज तथा ऋग्वेद

था सामाजिक सांस्कृतिक आर पुस्तकों के अतिरिक्त इनके अनेक निबंध इस दिशा में प्रकाशित हैं

बीकानेर के सूर्यकरण पारीक ठाकुर रामसिंह तंवर तथा नरोत्तमदास स्वामी की त्रयी ने लोक साहित्य अनुशीलन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान किया है इन्होंने 230 लोकगीतों का संकलन सम्पादन तथा विवेचन किया है इनके अतिरिक्त श्री विद्याधर शास्त्री डा दशरथ शर्मा अगरचन्द नाहटा भंवरलाल नाहटा, मुरलीधर व्यास पुरुषोत्तम स्वामी, डा मनोहर शर्मा, दीनानाथ खत्री श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत गोविन्द अग्रवाल, चन्द्रदान चारण, रावत सारस्वत डॉ कन्हैयालाल सहल, विजयदान देथा, कोमल कोठारी सीताराम लाळस डॉ सत्येन्द्र, पतराम गौड, श्रीलाल मिश्र जिनविजय, जगदीशप्रसाद माथुर मनोहर प्रभाकर देवीलाल सामर सुमनेश जोशी डा कन्हैयालाल शर्मा डा नरेन्द्र भानावत डा महेन्द्र भानावत सौभाग्यसिंह शेखावत, डॉ ब्रजमोहन जावलिया दीनदयाल ओझा सत्यनारायण स्वामी आदि का उल्लेखनीय कार्य लोक साहित्य के क्षेत्र में है इन्होंने अपने अपने ढंग से लोकगीत, लोकनाट्य लोकानुरंजन लोककला आदि विषयों पर शोध ग्रंथ तथा निबंध लेखन किया है साथ ही लोक साहित्य संकलन का कार्य भी किया है

डॉ कन्हैयालाल सहल ने पिलानी को सांस्कृतिक गढ़ बनाकर इस लोक साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दिया है

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत का लोक साहित्य के अध्ययन संकलन सम्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है इनकी विभिन्न पुस्तकें लोक साहित्य विषयक प्रकाशित है जिसमें बगडावत महा गाथा, मूमल हुंकारो दो सा आदि प्रमुख हैं श्री झाबरमल्ल शर्मा ने खेडी व जयपुर में रहकर इस लोक साहित्य व संस्कृति की बहुमूल्य सेवाएं की है श्री सीताराम लालस का योगदान भी उल्लेखनीय है

श्री मुरलीधर व्यास तथा श्री मोहनलाल पुरोहित ने विभिन्न लोककथाओं के हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किए है विजयदान देथा तथा कोमल कोठारी बोरून्दा में लोकसाहित्य संरक्षण प्रकाशन में संलग्न है राजस्थानी बातां का महत्वपूर्ण कार्य विजयदान देथा ने किया है राजस्थान के लोक संगीत, राजस्थानी लोकोत्सव, राजस्थानी लोकनृत्य, राजस्थान के लोकानुरंजन, लोक कला निबंधावली, राजस्थानी लोकजीवन आदि भारतीय लोककला मंडल से

प्रकाशित पुस्तकें हैं जो देवीलाल सामर व डॉ महेन्द्र भानावत के अथक प्रयासों से तैयार हुई हैं लोक साहित्य के क्षेत्र में चूरू में सुबोध अग्रवाल व गोविन्द अग्रवाल प्रयत्नरत हैं

लोक साहित्य के अध्ययन, अनुशीलन व संकलन की दृष्टि से विभिन्न संस्थाओं का योगदान भी उल्लेखनीय है इनमें प्रमुख हैं भारतीय लोककला मण्डल (उदयपुर) रूपायन संस्थान (बोरुंदा), साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ (उदयपुर) भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान (बीकानेर), शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जोधपुर), हाडोती शोध प्रतिष्ठान (कोटा) आदि

मरु भारती शोध पत्रिका, मीरा राजस्थान भारती, मरुवाणी, वरदा, लोक साहित्य लोककला रंगायन विश्वम्भरा परम्परा आदि प्रमुख पत्रिकाओं का उल्लेखनीय योगदान भी इस क्षेत्र में रहा है

राजस्थान में संस्कृति व राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से लोक साहित्य के क्षेत्र में जो कार्य हो रहा है वह महत्वपूर्ण है

साहित्यिक पत्रिकाएं

साहित्यिक जागृति उत्पन्न करने, लेखक व पाठक के मध्य जीवंत सम्पर्क स्थापित करने तथा साहित्यिकों को उपयुक्त मंच देने में साहित्यिक पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है राजस्थान का साहित्यिक पत्रिकाओं का सर्वेक्षण करें तो विदित होता है कि राज्य की प्रथम साहित्यिक पत्रिका सन् 1881 में नाथद्वारा से कविराजा किशनलाल दधवाडिया के सम्पादन में हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका के नाम से प्रारंभ हुई थी पर कुछ समय बाद इसका प्रकाशन बन्द हो गया लेकिन प्रथम साहित्यिक पत्रिका होने का श्रेय अभी तक इसी पत्रिका का है

स्वतन्त्रता पूर्व राजस्थान की उल्लेखनीय साहित्यिक पत्रिकाएं थी— भारत मार्तण्ड (जयपुर, ई 1899), समालोचक (जयपुर, सन् 1902), भारत सर्वस्व (सन् 1905), विद्या भास्कर (झालरापाटन, सन् 1907) निबन्धमाला (भरतपुर 1915 ई), सौरभ (झालरापाटन 1920 ई), त्याग भूमि (अजमेर, 1928 ई), प्रकाश (जयपुर, 1939 ई) मधुमाला (जोध-

पुर, 1940 ई), हितैषी (जयपुर, 1940 ई), अरावली (अलवर, 1944 ई), भाई बहिन (जयपुर, 1946 ई), राजस्थान भारती (बीकानेर 1946 ई) चान्नी (जयपुर, 1946 ई), शोध पत्रिका (उदयपुर, 1947 ई), साधना (कोटा, 1947 ई), मारवाडी (जोधपुर, 1947 ई)

स्वतन्त्रता के पश्चात साहित्यिक पत्रिकाओं म मुख्य हैं–झरना (जोधपुर), जलाधर (पाली), राष्ट्रभाषा (जयपुर), लहर (जोधपुर), राष्ट्रवाणी (अजमेर), हिलवाने (जोधपुर), भारतेन्दु (कोटा), लालिमा (भरतपुर), विकास (कोटा), विजयी (जयपुर), साहित्यिक प्रवाह (जोधपुर) ज्योति (अजमेर), प्रेरणा (जोधपुर), मरुभारती (पिलानी), नवनिर्माण (जोधपुर), राजस्थान साहित्य (उदयपुर), जागृत (अजमेर), परम्परा (जोधपुर), निष्ठा (जयपुर), समीक्षा (अलवर), सेफालिका (जयपुर), कविता (अलवर), वातायन (बीकानेर), सीमान्त (मुकुन्दगढ), साहित्यिकी (अलवर), समितिवाणी (भरतपुर), शान्त (अलवर), साहित्य सरिता (बीकानेर), पनातम (जयपुर), भारतीय चिंतन (भरतपुर), अनुबन्ध (जयपुर), सम्प्रेषण (जयपुर) हाडोती वाणी (कोटा), बिन्दु (उदयपुर), लहर (अजमेर), सम्बोधन (कांकरोली), मधुमती (उदयपुर), वरदा (बिसाऊ), विश्वम्भरा (बीकानेर) मधुमाधवी (जयपुर), क्षत्रप (जयपुर), अरुण (जयपुर) लोकसाहित्य (जोधपुर) अवपगा (उदयपुर) शोधपत्रिका (उदयपुर), कथालोक (जयपुर) आदि

आज वित्तीय सकट आदि के फलस्वरूप अधिकतर पत्रिकाए बन्द हो गई हैं और कुछ अनियमित प्रकाशित हो रही हैं आज विलम्ब स ही सही प्रकाशित होने वाली प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाए हैं—विश्वम्भरा (त्रैमासिक) बीकानेर, वरदा (त्रैमासिक) बिसाऊ, शोध पत्रिका (त्रैमासिक) उदयपुर, सम्बोधन (त्रैमासिक) कांकरोली, लहर (मासिक) अजमेर मधुमाधवी (त्रैमासिक) जयपुर मधुमती राजस्थान साहित्य अकादमी की पत्रिका है और नियमित प्रकाशित हो रही ह इसकी नियमितता का कारण चाहे वित्तीय स्थिति की सुदृढता हो चाहे सम्पादन कौशल लेकिन समय पर प्रकाशित एव प्रसारित होने वाली एकमात्र साहित्यिक पत्रिका अभी मधुमती है साहित्यिक पत्रिकाओं का सकट राज्य की साहित्यिक सचेतना के लिए घातक है राजस्थान म ही नहीं अपितु भारत भर मे साहित्यिक पत्रिकाओं को गत 20 वर्षों म गहरा आघात लगा है परिणामत ये पत्रिकाए शनै शनै बन्द हो रही हैं इस स्थिति पर गभीर चिंतन अपेक्षित है

सम्पादन

साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं से अनेक हिन्दी साहित्य के सर्जनकर्मी समय समय पर जुडते रहे हैं इनमे प्रमुख हैं—सर्वश्री झाबरमल्ल शर्मा, विद्याधर शास्त्री, डॉ कन्हैयालाल सहल, हरिभाऊ उपाध्याय जयनारायण व्यास, नरोत्तमदास स्वामी, डा कन्हैयालाल शर्मा डॉ मनोहर शर्मा, चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय, रामलाल साँवल, जनार्दनराय नागर, डॉ मोतीलाल मेनारिया, रामनिवास शर्मा, डॉ सोमनाथ गुप्त, चन्द्रदान चारण, डॉ नारायणसिंह भाटी, सौभाग्य सिंह शेखावत देवीलाल सामर, कपूरचन्द कुलिश, कनक मधुकर, चन्द्रेश व्यास, नेमीचन्द जैन भावुक, गिरीश शर्मा, मिश्रीलाल जैन तरंगित, बुद्धिप्रकाश पारीक शिवपूजन त्रिपाठी, राजेन्द्र सक्सेना, डॉ मनोहर प्रभाकर, डॉ नेमनारायण जोशी, डॉ प्रकाश आतुर गिरधारीलाल शर्मा, विश्वदेव शर्मा, डॉ शांति भारद्वाज, श्री मगल सक्सेना डॉ जयसिंह नीरज, डॉ भंवरलाल जोशी डा प्रेमचन्द विजयवर्गीय जुगमन्दिर तायल, डॉ नन्दकिशोर आचार्य, रामदेव आचार्य हरीश भादानी, सरल विशारद, डा पूनम दईया, राजेन्द्र शकर भट्ट ओम शर्मा जयसिंह एस राठौड भागीरथ भार्गव प्रकाश जैन, डॉ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, शरद देवडा जुगमन्दिर तायल मंजुल उपाध्याय, ईशमधु तलवार, नलिनी उपाध्याय, कमर मेवाडी, डॉ दिवाकर शर्मा, डा नरेन्द्र भानावत चन्द्रभानु भारद्वाज, प्रेमजी प्रेम, मनोहर कांत मनमोहिनी, डा देव कोठारी, गजेन्द्रसिंह सोलंकी मोहनलाल मधुकर डॉ महेन्द्र भानावत आदि

इस संक्षिप्त लेकिन समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि राजस्थान में हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कविता और कथा विधा मे लेखन प्रचुर मात्रा में किया जा रहा है और गुणवत्ता की दृष्टि से वह सन्तोषप्रद भी है आलोचना तथा निबन्ध आदि के क्षेत्र मे भी उल्लेखनीय कार्य हुआ है लेकिन हास्य, व्यंग्य, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, साक्षात्कार, यात्रावृत्त, बाल साहित्य आदि विधाओं की ओर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता है साहित्यिक पत्रिकाओं की स्थिति भी प्रसन्नतादायक नहीं मानी जा सकती है

फिर भी, राजस्थान का साहित्य को उल्लेखनीय योगदान है और राजस्थान के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार हिन्दी संसार को मिले है जिन पर गौरव किया जा सकता है